// श्रीकृष्ण सच्चिदानन्दाक्षरातीतपरमात्मने नमः //

श्री परमधाम पटदर्शन

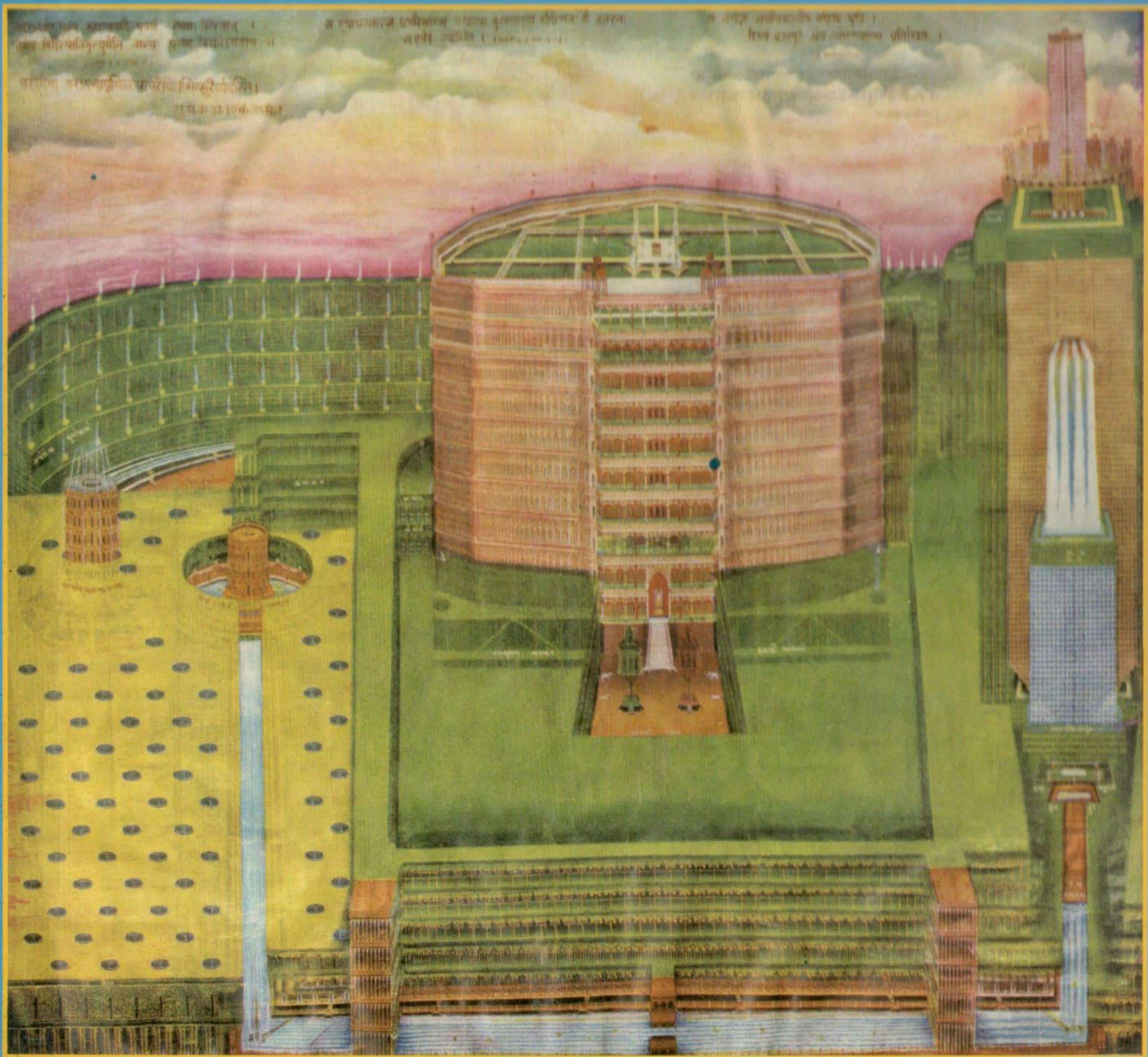

यह मूल मुकट पं. श्री जवाहरलाल जी
श्री मुखवाणी विशारद चर्चनी तीर्थ को
सप्रेम स्मरण। ले. मंगल दास का प्रणाम।

रचयिता :

ब्रह्ममुनि संतशिरोमणि परमहंस
श्री जवाहरदास जी महाराज
गादीपति श्री बाबा दयाराम साहेब ट्रस्ट
करनाल धाम

प्रकाशक
सुरेश परनामी

परात्पर अक्षरातीत श्रीकृष्णपरमात्मा का अनादि परमधाम

// श्री प्राणनाथाय नमः //

श्री परमधाम पट-दर्शन

रचियता

ब्रह्ममुनि संत शिरोमणि ब्रह्मलीन श्री १०८ जवाहर दास जी महाराज

गादीपति श्री बाबा दयाराम साहेब ट्रस्ट, करनाल धाम

प्रकाशक

सुरेश कटारिया

श्री प्राणनाथ जयंती, 8 जुलाई, 1999, जयपुर

समर्पण

निजानंद स्वामी सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी महाराज के हृदय में विराजित नक्षरातीत श्री राजजी की आनंद अंग श्री श्यामाजी ने असीम मेहेर बरसाकर खेल में ूली अपनी सखियों को जागृत करने के लिए अपने निज घर श्री परमधाम को इस धरा र प्रकट कर दिया। माया के इस संसार को अनमौल धन से धन्य-धन्य कर दिया। उनके ी चरणों का ध्यान हर मनोरथ को पूर्ण करने वाला है। उनके श्री चरणों का ध्यान करके नकी सखी की यह कृति उनको सादर समर्पित है।

प्रणाम !

विनीत

सुरेश परमानंद कटारिया

मंगलाचरण

इन विध साथजी जागिए, बताए देऊं ऐ जीवन।
स्याम स्यामाजी साथजी, जित बैठे चौक वतन॥
प्रथम लागूं दोऊ चरन को, धनी ए न छोड़ाइयो खिन।
लांक तली लाल एड़ियां, मेरे जीव के एही जीवन॥
मेरी रूह नैन की पुतली, तिन पुतलियों के नैन।
तिन नैनों में राखूं मासूक को, ज्यों मेरी रूह पावे सुख चैन।
इस्क सुराही लेय के, आए बैठे दिल पर।
इस्क प्याले आसिकों, हक देत आप भर भर॥
महामत कहे अपनी रूहको, और अर्स रूहन।
इन सुख सागर में झीलते, आओ अपने वतन॥

संख्या
1000 प्रतियां

सर्वाधिकार
श्री बाबा दयाराम साहेब ट्रस्ट, करनाल

न्यौछावर
120 रु. + 120 रु. = 240 रु.

पचवीस पख छे आपणा, तेमां झीलजे रात ने दिन ।

अक्षरातीत धाम धनी श्रीराज जी की आनंद अंग श्री श्यामाजी जी ने निजानंद स्वामी सद्गुरु धनी श्री देवचन्द्र जी स्वरूप में प्रकट होकर खेल में भूली अपनी सखियों को जागृत करने के लिए अपने निज घर श्री परमधाम के चप्पे-चप्पे का वर्णन विस्तार पूर्वक कर साक्षात् परमधाम को प्रत्यक्ष कर दिया ।

श्रीराज श्री ठकुरानी जी प्रथम भौम में विराजमान भए, तहां कंचन रंग को सिंहासन ।

जब श्री सद्गुरु साहेब ने श्री जमुना जी का चित्र बनाया तब जमुनाजी साक्षात् प्रकट हो गई, जिनके दर्शन करके हम आज भी धन्य-धन्य हो जाते हैं ।

विजयाभिनंद बुध निष्कलंक कल्की अवतार महामति प्राणनाथ जी के हृदय में श्री श्यामाजी आ विराजे और परमधाम के जर्रे-जर्रे का वर्णन श्री मुख से प्रस्फुटित हो गया ।

ब्रह्म सृष्टी लीजियो, हांरे सैयां ए है अपना जीवन ।
सखी मेरो जो है मूल वतन, ब्रह्म सृष्टी लीजियो ॥

ए देखत ही बनत है, केहेनी में आवत नाहीं । जब धाम धनी उदयपुर पधारे उसी समय उनकी मेहेर से परमधाम के पट चित्रांकन के कार्य का शुभारम्भ हुआ एवं धाम धनी जब तृतीय ब्रह्माण्ड जागनी रास के मूल मिलावा श्री परना जी में आकर विराजे उसी समय से नियमित रूप से पट दर्शन की यह परम्परा श्री सुन्दरसाथ जी में प्रारम्भ हुई ।

श्री तारतम वाणी को आत्मसात् करने के लिए श्री बीतक साहेब का श्रवण, सेवा-पूजा पद्धति का अनुसरण एवं परमधाम पट के दर्शन, चितवनी एवं मनन आवश्यक है ।

निस दिन रंग मोहोलन में, साथ स्यामजी स्याम ।
याद करो सुख सबों अंगों, जो करते आठों जाम ॥

पट दर्शन की इसी परम्परा में स्वामी लालदास जी ने परमधाम की वृत लिखी । पुजारी युगलदास जी ने इस परम्परा को और समृद्ध किया । बड़ी वृत और छोटी वृत का सृजन किया । स्वयं महाराज जी की लिखी वृत उपलब्ध है ।

अखण्ड सुख सबन को, होसी चौदे तबक ।
सो बरकत ब्रह्मसृष्ट की, पावे दीदार सब हक ॥

'श्रीजी' साहेब जी के समय से शुरू हुई इस परम्परा को पन्ना धाम के प्रिय धामी भाईयों ने 300 वर्षों से अनवरत जारी रखा हुआ है । धामधनी की मेहेर दृष्टि तले रहकर उनके ही हुकुम से परमहंस महाराज श्री मेहेर दास जी के पावन सान्निध्य में संत शिरोमणि परमहंस श्री जवाहरदास जी महाराज ने श्री परमधाम के रंगीन चित्रों का सृजन किया ।

सोई सोहागिन धाम में, जो करसी इत रोसन ।
तोल मोल दिल माफक, देसी सुख सबन ॥

ब्रह्मसृष्टि की रेहेनी को स्वयं में सहेज कर अनमोल निधि पाने वाले ब्रह्ममुनि श्री जवाहरदास जी महाराज, गादीपति श्री बाबा दयाराम साहेब ट्रस्ट, करनाल का यह अनमोल खजाना लाडले सुन्दरदासजी एवं पूरे विश्व की धरोहर है ।

आनंद बतनी आइयो, लीजो उमंग कर ।
हंसते खेलते चलिए, देखिए अपनों घर ॥

महामत कहे ब्रह्मसृष्ट को, सखी जीवन हमारा ए । इसका नित्य दर्शन महामंगलकारी है । श्री तारतम सागर पढ़ते चले एवं पट दर्शन से परमधाम की गहराइयों में उतरते चले ।

खोज सोहागन न थके, जोलों पार के पारे पर ।
नित खोजे चरनी चढ़े, नए-नए करे विचार ॥

सोहागन तोलों खोजहीं, जोलो पाइये पिउ वतन ।
पिउ वतन पाए बिना, विरहा न जाए निस दिन ॥

पटदर्शन का अनुभव आप इल्मी सुन्दरसाथ जी से करें एवं विद्वानों से मार्गदर्शन प्राप्त करें । चौपाई की शुद्धता एवं प्रमाणिकता के लिए कृपया श्री सरूप साहेब को देखें ।

परमधामवासी श्री १०८ कृष्णानंद जी महाराज गादीपति श्री बाबा दयाराम साहेब ट्रस्ट, करनाल के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मुझे सेवा का यह अवसर देकर धन्य-धन्य कर दिया ।

लागत से आधी न्यौछावर राशि में आपको परमधाम का यह अनमोल खजाना उपलब्ध करवाने का विनम्र प्रयास है । श्रीजी कृपा से ही घर-घर में रंगीन चित्रों का प्रकाश फैलेगा ।

परमधाम के इन मूल चित्रों को 73% साईज में प्रकाशित किया है । बृज, रास, जागनी एवं परमधाम की लीलाओं में दिन-रात रमण करने वाले प्रेम में भीने प्यारे सुन्दरसाथ जी प्रकाशन में रही समस्त त्रुटियों के लिए कृपया क्षमा करेंगे एवं समृद्धि के इस अनमोल उपहार को शिरोधार्य कर लेंगे ।

सप्रेम प्रणाम ।

विनित

सुरेश परमानंद कटारिया

गुरुगादी श्री महाराज चरणदास जी साहेब, शक्तिनगर, दिल्ली

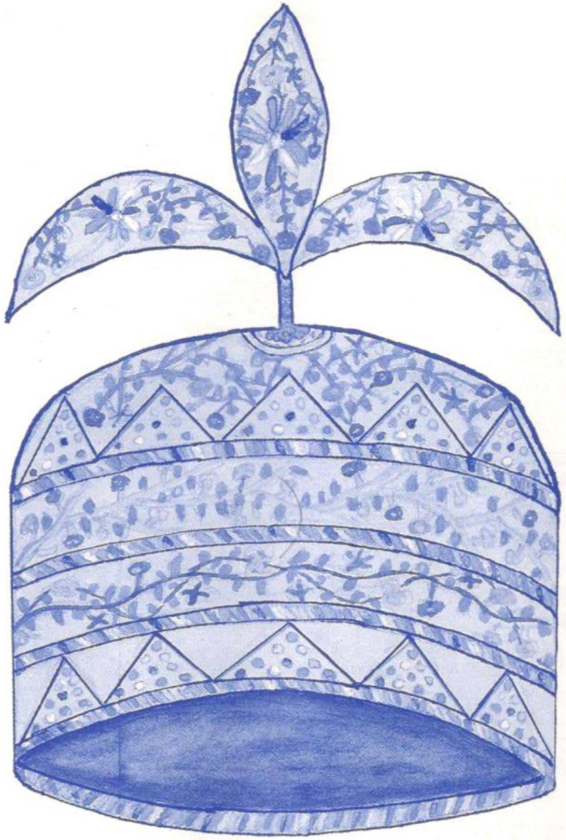

यह मूल मुकट पं. श्री जवाहरलाल जी
श्री मुखवाणी विशारद चर्चनी तीर्थ को
सप्रेम स्मरण। ले. मंगल दास का प्रणाम।

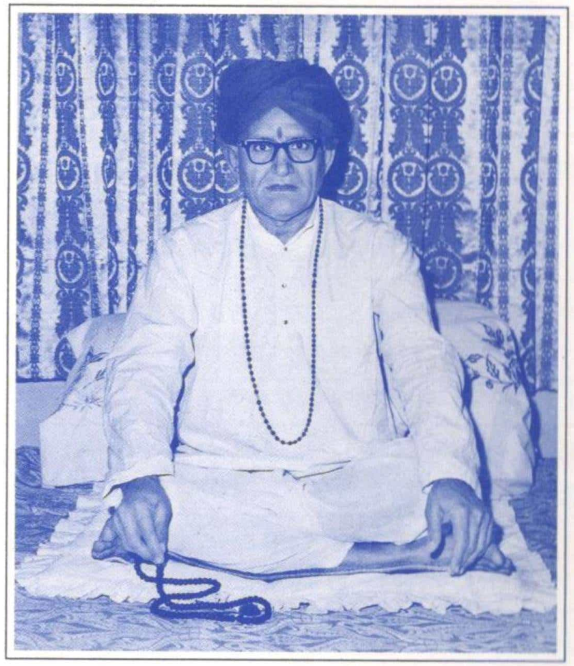

ब्रह्ममुनि संतशिरोमणि परमहंस
श्री जवाहरदास जी महाराज

गादीपति श्री बाबा दयाराम साहेब ट्रस्ट
करनाल धाम

वतन आपनो, ब्रह्मसृष्ट को देऊं बताए।
धाम की सुध में सब देऊं, ज्यों अंतस्करन में आए॥

अनुक्रम

इस्क जिन विध उपजे, मैं सोई देऊं जिनस।
तब इस्क आया जानियो, जब इन रंग लाग्यो रस॥

क्रम सं.	चित्र का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	पांच स्वरूप (प्राचीन चित्र पर आधारित) *सुन्दर सरूप स्याम स्यामाजी को, फेर फेर जाऊं बलिहारी।* *इन दोऊ सरूपों दया करी, मुझ पर नजर तुमारी॥*	00
2.	श्री रंग भवन *निस दिन रंग मोहोलन में, साथ स्यामाजी स्याम।* *याद करो सुख सब अंगों, जो करते आठो जाम॥*	00
3.	श्री रंग भवन चबूतरा *अब सुनियो साथ सुनाऊं, पीछे निज नैनों देख देखाऊं।* *जोत जवेर चबूतरे दोए, ताकी उपमा मुख न होए॥*	00
4.	श्री रंग भवन का मध्य का हांस, 28 थंभ का चौक, चांदनी चौक, श्री जमुना जी *बड़ा चौक सोभा लेत है, बड़े दरवाजे अंदर।* *बड़ी बैठक इत गिरोह की, आगूं रसोई के मंदिर॥*	04-05
5.	श्री रंग भवन - एक मंदिर *हर मन्दिर एक झरोखा, याकी सोभा किन मुख होए।* *आए लग्या बन दिवालें, देत मीठी खुसबोए॥*	06
6.	मंदिर की बगली दिवाल *बेवरा अगली भोम का, मेहेराव और झरोखे।* *खूबी क्यों कहूं दिवाल की, सोभा लेत इत ए॥*	07
7.	श्री रसोई की हवेली तथा तीन चोरस हवेली *राज स्यामाजी बैठत, बन थें फिरती बखत।* *इन ठौर आरोग के, चौथी भोम निरत॥*	08-9
8.	पांचवा चौक श्री मूल मिलावा गोल हवेली *ए मूल मिलावा अपना, नजर दीजे इत।* *पलक न पीछे फेरिए, ज्यों इस्क अंग उपजत॥*	10-11
9.	चार हवेली पंच मोहलात की *महामत कहे ऐ मोमिनों, ए सुख अपने अरस के।* *एक पलक छोड़े नहीं, भला चाहे आपको जे॥*	12
10.	दूसरी भोम की भूलवनी *इन ठौर खेल रूहन के, बोहोत भई भुलवन।* *होत हांसी इत खेलते, रंग रस बढ़त रूहन।*	13
11.	दूसरी भोम का दस मंदिर का हांस *इनहूं बीच चबतूरा, हक हादी मध बैठत आए।* *ए सोभा इन बखत की, इन मुख कही न जाए॥*	14
12.	तीसरी भोम का दस मंदिर का हांस *दो हांस बीच तीसरा हिस्सा, तिनके झरोखे दस।* *एक हांस तिनकी बढ़ी, ए भी सोभा एक रस॥*	15
13.	चौथी भोम *निरत होत चोथी भोम में, जित मोहोल बन्यो विसाल।* *चौक मध्य अति सुन्दर, क्यों कहूं मंदिर द्वार॥*	16
14.	पांचवी भोम : मध्य चौक की चार हवेली *सुख बड़ो भोम पांचमी, मध्य मंदिर बारे हजार।* *बीच मोहोल स्यामाजीय को, इन चारों तरफों द्वार॥*	17
15.	पांचवीं भोम : मध्य नव चौक *भोम पांचमी मध की, जित पोंढ़त हैं रात।* *स्याम स्यामाजी साथ सब, जोलों होए प्रभात॥*	18
16.	छटी भोम : तखत तरवा श्री रंग भवन की छठी भोम *घरों आए पीछे सबन के, छठी भोम सुखपाल।* *बने बिराजे मोहोल में, जित बड़ी पड़साल॥*	19
17.	सातवीं भोम *कई सुख सातमी भोम के, कई हिंडोले हजार।* *रूहें आप मन चाहते, अर्स आराम नहीं पार॥*	20

क्रम सं.	चित्र का नाम	पृष्ठ संख्या
18.	आठवीं भोम *इसी भांत भोम आठमी, चार चार खटछप्पर।* *चारों तरफों हींचत, ए सोभा कहूं क्यों कर॥*	21
19.	नवमी भोम *छज्जे बड़े नौमी भोम के, बोहोत बड़ो विस्तार।* *बैठक धनी साथ की, बाहेर की किनार॥*	22
20.	दसवीं चान्दनी पर दहलाने *दसमी भोमे चांदनी, ए सोभा है अतंत।* *कई कदेले कुरसियां, बीच सोभा लेत तखत॥*	23
21.	दसमी चान्दनी की दहलानों पर गुमटियाँ *ए जो गुमटियां गिरदवाए की, नगीने एक अगले सौ दोए।* *बारे हजार गुमटियां, सोभा लेत अति सोए॥*	24
22.	दसमी चान्दनी पर बाग बगीचे *चारो तरफो चेहेबच्चे, ए सोभा अति सुंदर।* *जल गिरत फुहारे मोतियों, चारो चांदनी अंदर॥*	25
23.	श्री जमुना जी का पूरा दिखाव *दोरी बंध जल बराबर, दोऊ तरफ चली जो साध।* *चल कुंडसे मरोर सीधी चली, मरोर हौज मिली आए आध॥*	26
24.	अमृत वन का एक बगीचा *घाट पाट जल ऊपर, अमृत बन हैं जांहें।* *इन बन की सोभा क्यों कहूं, मेरो सब्द न पोहोंचे तांहें॥*	27
25.	तीन घाट अनार अमृत जाम्बू *झीलन स्यामा संग राज सों, साथें किए जल केलि।* *इन समें के विलास की, क्यों कहूं रंग रेलि॥*	28
26.	चहैबच्चा 16 हांस का *धाम छोड़ आगे चल्या, तरफ चेहेबच्चे पास।* *इन बन की सोभा क्यों कहूं, जित नित होत विलास॥*	29
27.	दक्षिण तरफ बट पीपल की चौकी *राज स्यामाजी सखियां, जब इत आए हींचत।* *इन समें बन हिंडोले, सोभा क्यों कर कहूं सिफत॥*	30

क्रम सं.	चित्र का नाम	पृष्ठ संख्या
28.	(पश्चिमी तरफ के 100 बगीचे फूल बाग के) फूल बाग *के वन कहूँ फूलन के, इन बन को न आवे सुमार॥* *के रंग पातों के जुगतें, के कांगरियां किनार॥*	31
29.	फूल बाग के छोटे बगीचे *बाग बने फूलन के, लगत झरोखे दिवाल।* *हक आवत हैं इन छज्जों, रूहें इत होत खुसाल।*	32
30.	फूल बाग का एक बगीचा बड़ी नहर का दिखाव *छलकत छोले चेहेबच्चे, नेहेरें चलत जल नूर।* *सो विचरत सब बगीचों, पीवत हैं भरपूर॥*	33
31.	नूर बाग के एक बगीचे का सोहलवां हिस्सा *जित तले दस खिड़कियां, इतथें रूहें उतरत।* *फिरत सैर इन बन को, जब कबूं आवें इत॥*	34
32.	नूर बाग का एक बगीचा *के बन कहूं फूलन के, इन बन को ना आवे सुमार।* *के रंग पातों के जुगतें, के कांगरियां किनार॥*	35
33.	नूर बाग का अंन बन दूब दुलीचा *बन बिगर की जो जिमी, जानों जरी दूलीचे बिछाए।* *ए दूब जोत आसमान लो, रह्यो नूरै नूर भराए॥*	36-37
34.	लाल चबूतरा *बैठे संग स्यामाजी, ऊपर दोऊ के छत्र।* *आगे गावे वाणी बहु विधसों, और बजावें बाजंत्र।।*	38
35.	ताड़बन *फेर कहूं तले बनकी, जो वन बड़ा विस्तार।* *भर चबूतरे आगे चल्या, जाए पोहोंच्या केल पार॥*	39
36.	ताड़बन का एक बगीचा *जो बन आया चेहेबच्चे, सोभा अति रोसन।* *छाया करी जल ऊपर, तीनों तरफ बन॥*	40
37.	खड़ो कली ताड़बन में *ऊपर झरोखे मोहोलके, जल पर बने जो आए।* *इत चेहेबच्चे की सिफत, मुख थें कही न जाए॥*	41

क्रम सं.	चित्र का नाम	पृष्ठ संख्या
38.	बड़ो बन मधू वन, महावन पुखराज ढो घाटी आदि *महामत कहे बन धाम का, विध विध दिया बताए।* *जो होसी ब्रह्म सृष्ट का, ए बान फूट निकसे ताए॥*	42-43
39.	श्री पुखराज तथा बंगले की तरहटी के बीच का चहबच्चा तथा महावन मधुवन के वृक्ष *इन मोहोलों इन बंगलों, इन चेहेबच्चे बगीचों।* *ए सुख छाया बन की, कब देओगे हमको॥*	44
40.	श्री पुखराज जी के उजागर (दक्षिण तरफ) चहबच्चा, नहरे तथा तरहटी के हांस की दिवाल *माहें के नेहेरें चलें, सब पहाड़ में फिरत।* *के फुहारे चेहेबच्चे, सब ठौरों खूबी करत॥*	45
41.	श्री पुखराज की तरहटी, तरहटी का एक मोहोल एक बगीचा, महाबन के चार वृक्ष, नहरें, रोंस पुल *वन मोहोल नेहेरें कहीं, इन जिमी विध कही न जाए।* *ए अरस जवेर देख्या चाहे, सो ए बन देखो आए॥*	46-47
42.	पुखराज की तरहटी, बंगलों की तरहटी, अधबीच का कुण्ड *सो परत बीचले कुंड में, इत चारों तरफ देहेलान।* *ए सुख कब हम लेयसी, इन मेले साथ मेहेरबान॥*	48-49
43.	अध बीच का कुंड - ढपो चबूतरा तरहटी, *मूल कुण्ड की तरहटी, आधी जमुनाजी ढ़पी,* *आधी जमुनाजी खुली, मरोर खाकर दक्षिण तरफ चलीं।*	
44.	श्री पुखराज चबूतरा बंगले का दृश्य तथा देहलान *विराजे बंगले, एजो मोहोल तले ताल।* *बारे हजार बड़ी रूह ले, हकसों खेलत माहें हाल॥*	52-53
45.	अधबीच कुंड, ढपो चबूतरा, मूल कुंड एवं जमुना जी *कुंड आगे ढाँपी चली, अद्भूत ऊपर मोहोलात।* *अंदर बैठकें क्यों कहूँ, दोऊ किनार लिए चली जात॥*	54-55
46.	बंगले तथा चहबच्चे : एक बंगले तथा एक चहबच्चे का आधा दृश्य *खास मोहोल कुंड ऊपर, जहां लेहेरी छलकत जल।* *सो जल उतरत पहाड़ से, चढ़ गिरत ऊंचे नल॥*	56-57
47.	पुखराज चौदहे मेहराबे तथा बंगले की चांदनी पर पुखराजी ताल का मूल तथा खास मोहोल के ताल का मूल तथा बगीचों की चांदनी पर मोहोल वृक्ष आदि	58-59
48.	हजार हांस की मोहोलात - पुखराजी ताल खास मोहोल - ढपो चबूतरा -मूल कुण्ड *हजार हांसों सोभित, तापर गुरज बिराजत।* *मोहोल माहें विध विध के, बैठक झरोखे जुगत॥*	60
49.	हजार हांस की मोहोलात	62
50.	हजार हांस की मोहोलात की चांदनी *गुरज हजार बीच चांदनी, सब गुरज बराबर।* *के कोट जुबां इन खूबी की, सिफत न सके कर॥*	63
51.	पश्चिम तरफ की घाटी ढोहांसों की हवेली *महामत कहे ऐ मोमनों, ए सुख अपने अरस के।* *एक पलक छोड़े नहीं, भला चाहे आपको जे॥*	64
52.	पश्चिम तरफ की घाटी तथा एक हांस में एक दरवाजा *चौकस कर चित दीजिए, आतम को एह धन।* *निमख एक न छोड़िए, कर मन वाचा करमन॥*	65
53.	आकासी मोहोल की हवेली *इन मोहोलों बीच इमारतें, हिस्सा कोटमा कह्या न जाए।* *ए खूबी सब्दातीत की, लीजो रूह के दिल लगाए॥*	66
54.	आकासी मोहोल की हवेली जिसमें दो बड़ी हवेली *कोटक कचेहेरी बनी, फिरती फिरती गृदवाए।* *ए सुंदरता इन जुबां, मोपे कही न जाए॥*	67
55.	आकासी मोहोल के मध्य की एक हवेली बड़ी *के अंदर नेहेरें फिरें, माहें हवेलियों चेहेबच्चे।* *खुसबोए फूल मेवे कै, माहें बैठक कै बगीचे॥*	68
56.	आकासी मोहोल की चांदनी का दिखाव *एक सौ आठ गुरज कहे, जो करत ऊपर रोसन।* *कंगूरे कलस ऊपर कै, देख होत खुसाल मोमन॥*	69

क्रम सं.	चित्र का नाम	पृष्ठ संख्या
57.	पुखराजी पहाड़ *सुख लीजो मोमिन, पहाड़ मोहोलके आराम।* *अरस अजीमके कायम, निस दिन एही ताम॥*	70-71
58.	श्री हौज कौसर तालाब 1. पाल की मोहोलात थंभ 2. बीच का ताल *अब कहूं मैं ताल की, अंदर आए सको सो आओ।* *जो होवे रूह अरस की, फेर ऐसा न पावे दाओ।*	72
59.	श्री होज कोसर, चार घाट, पाल देहुरी *सोभा पाल तलाव की, कही न जाए जुबां इन।* *वन देहुरी जल मोहोल की, रोसन रोसन में रोसन॥*	73
60.	श्री हौज कोसर, ताल, टापू मोहोल *महामत कहे मोमन को, गेहेरा गंभीर जल देख।* *ए टापू बन्यो बीच होजके, सोभित अति विसेख॥*	74
61.	टापू मोहोल की चांदनी *ऊपर चांदनी कठेड़ा, बीच जोड़ सिंघासन।* *राज स्यामाजी बीच में, फिरती बैठक रूहन॥*	75
62.	चौबीस हांस का मोहोल *और मोहोलात इन ऊपर, सो नूर ऊपर जो नूर।* *देत खूबी बीच आकास के, भया अवकास सबे जहूर॥*	76
63.	1. चौबीस हांस की चांदनी 2. बाहर की मोहोल ताल *ए सुख हमारे कहा गए, ए जो खेल होत दिन रात।* *हक के साथ हम सब रूहें, हंस हंस करती बात॥*	77
64.	चौबीस हांस के बाहर के मोहोल ताल तीन हांसों के *ना सुख कहे जाएं जिमी के, ना सुख कहे जाएं बन।* *न सुख कहे जाएं मोहोलों के, न सुख कहे जाएं पहाड़न॥*	78
65.	चौबीस हांस का खड़ा मोहोल *और विध केती कहूं, भोम भोम ठौर अनेक।* *ए कोट जुबां न केहे सके, तो कहा कहे रसना एक॥*	79
66.	जवेरों की नहरें नव फिराव *फेर-फेर सरूप जो निरखिए, नैना होंए नहीं तृपित।* *मोमिन दिल अर्स कह्या, लिखी ताले ए निसबत॥*	80

क्रम सं.	चित्र का नाम	पृष्ठ संख्या
67.	जवेरों की नहरों का एक मोहोल	81
68.	जवेरों की नहरें चार हांस, हवेरों की नहरें आठ हांस, जवेरों की नहरें सोलह हांस	82-83
69.	जवेरों की नहरें 32 हांस, जवेरों की नहरें 64 हांस, आठ हांस मोहोल की चांदनी	84-85
70.	जवेरों की नहरों का खड़ा निशान	86-87
71.	माणक पहाड़-पांच हांस का निशान, माणक पहाड़ का माणक मोहोल - भीतर का निशान	88-89
72.	माणक पहाड़ का पूरा निशान	90
73.	माणक पहाड़ की एक हवेली का खड़ा निशान	91
74.	माणक पहाड़ एक चौरस हवेली	92
75.	माणक पहाड़ की एक हवेली का एक मोहोल	93
76.	माणक पहाड़ के एक मोहोल में एक मंदिर	94
77.	माणक पहाड़ की एक हवेली में एक मोहोल	95
78.	माणक पहाड़ - चांदनी नीचे के ताल-नाले, बगीचे-महानद	96
79.	माणक पहाए की चांदनी की एक नहर	97
80.	माणक पहाड़ की चांदनी पर टापू मोहोल तथा देहेलाने	98
81.	माणक पहाड़ - टापू मोहोल की चांदनी	99
82.	माणक पहाड़ का खड़ा निशान	100-101
83.	माणक पहाड़ की बाहर जिमी पर ताल मोहोल नेहरें - बगीचे	102
84.	माणक पहाड़ बाहर जिमीन पर ताल-नहरे बगीचे की चांदनी	103
85.	बड़ोवन मधुवन महावन वन की नहरों का खड़ा निशान	104
86.	बड़ोवन मधुवन महावन तथा वन की नहरों का एक-एक हार का दिखाव है	105

क्रम सं.	चित्र का नाम	पृष्ठ संख्या
87.	वन की नहरें, चार हार हवेली तथा सागर की हवेली तक	106-107
88.	चार हार हवेली के एक चबूतरे पर सागर की हवेली तक	108
89.	चार हार हवेली के एक हवेली के मोहोल	109
90.	चार हार हवेली के एक हवेली के एक मंदिर का निसान	110
91.	बड़ी रांग के महा बिलंद हवेली के सामने तथा दायें बायें गोलगुरज तथा सामने दो नहरों का दिख राव तथा चार हार हवेली की चौथी हवेली की आधी दिखाव	111
92.	महा बिलंद हवेलियों की एक हवेली	112
93.	रांग की एक हवेली का एक मोहोल	113
94.	बड़ी रांग की एक हवेली के एक मंदिर के बगीचे आदि	114
95.	बड़ी रांग की महा बिलंद हवेली त्रिपोलिया के मध्य एक हवेली	115
96.	रांग का एक समुद्र तथा बाहर भीतर पाल पर हवेलियां	116-117
97.	समुद्र के टापुओं में एक टापू	118
98.	टापू मोहोल की चांदनी तथा चारों तरफों समुद्र	119
99.	एक सागर के चारों तरफ बगीचा तथा पाल पर आठ महाबिलंद हवेलियों का दिखाव	120
100.	बड़ी रांग की एक जिमी	121
101.	महा बिलंद की हवेली की चांदनी पर ताल बगीचे गुमट	122
102.	महा बिलंद पर हवेली की चांदनी पर बगीचों में एक बगीचा	123
103.	महा बिलंद की चांदनी पर एक बगीचे में कई बगीचे	124
104.	सागरों को घेर कर वन की चांदनी तथा रांग की चांदनी	125
105.	रांग की महा बिलंद हवेली पर की चांदनी पर टापू मोहोल, ताल देहलाने	126
106.	रांग मोहोल की टापू पर - टापू में एक हवेली	127
107.	महा बिलंद की हवेली की चांदनी पर टापू के मोहोल, हवेली में मोहोल	128
108.	महा बिलंद की हवेली, टापू मोहोल की चांदनी	129

क्रम सं.	चित्र का नाम	पृ
109.	रांग की जमीन की वन की चांदनी तथा चार महाबिलंद हवेलियों की चांदनी	
110.	आठ सागर आठ जिमीन तथा सबकी चांदनी	
111.	अव्याकृत : वेराट का 14 लोक अष्ट आवरण	13
112.	महद अव्याकृत के कारण शरीर से लेकर सबतिक ब्रह्म का परआतम शरीर	13
113.	परम धाम के पच्चीस पक्ष	

* झीलना *

मारा वालाजी चलो जमुना जल झीलिए ।।टेक ।। पाट घाट
की देहुरी में जहां रामत कीजे राज।
रतन जड़ित के मोहोल में, कीजे रंग विलास ।। १ ।।
आप अकेले हूजिए, संग स्यामा जी साथ।
हम रूहें बारे हजार मिलके, झीलें तुम्हारे पास ।। २ ।।
कुंज भवन की रेत में, पिया चलो दौड़िये जाए।
जो जाको छुई लेत है, सो ताके हाथ विकाए ।। ३ ।।
पीताम्बर कटि काछनी काछे, सीस मुकुट लटकाये।
हेम कसव की ओढ़नी ओढ़ें, झांझरी घुंघरी घमकाये ।। ४ ।।
फूल बाग और नूरबाग में, चलो पिया बैठिये जाए।
लेहरें आवे सुगंध की, वास रही महकाय ।। ५ ।।
बड़ावन और लाल चबूतरा, जहाँ बैठा साथ भराय ।।
पशु पक्षी मुजरे को आवें, नए नए खेल दिखाय ।। ६ ।।
रसिक राज स्यामा जी के आगे, सखियां निरत कराए।
जापर चितवत हेत सों, देखत नयन सिराए ।। ७ ।।
हंसिके राज खुशी भए, पहिराए बनमाल।
सखी साकुंडल अरज करत हैं, बलि बलि राजकुमार ।। ८ ।।

प्राचीन पेन्टिंग
पर आधारित
1

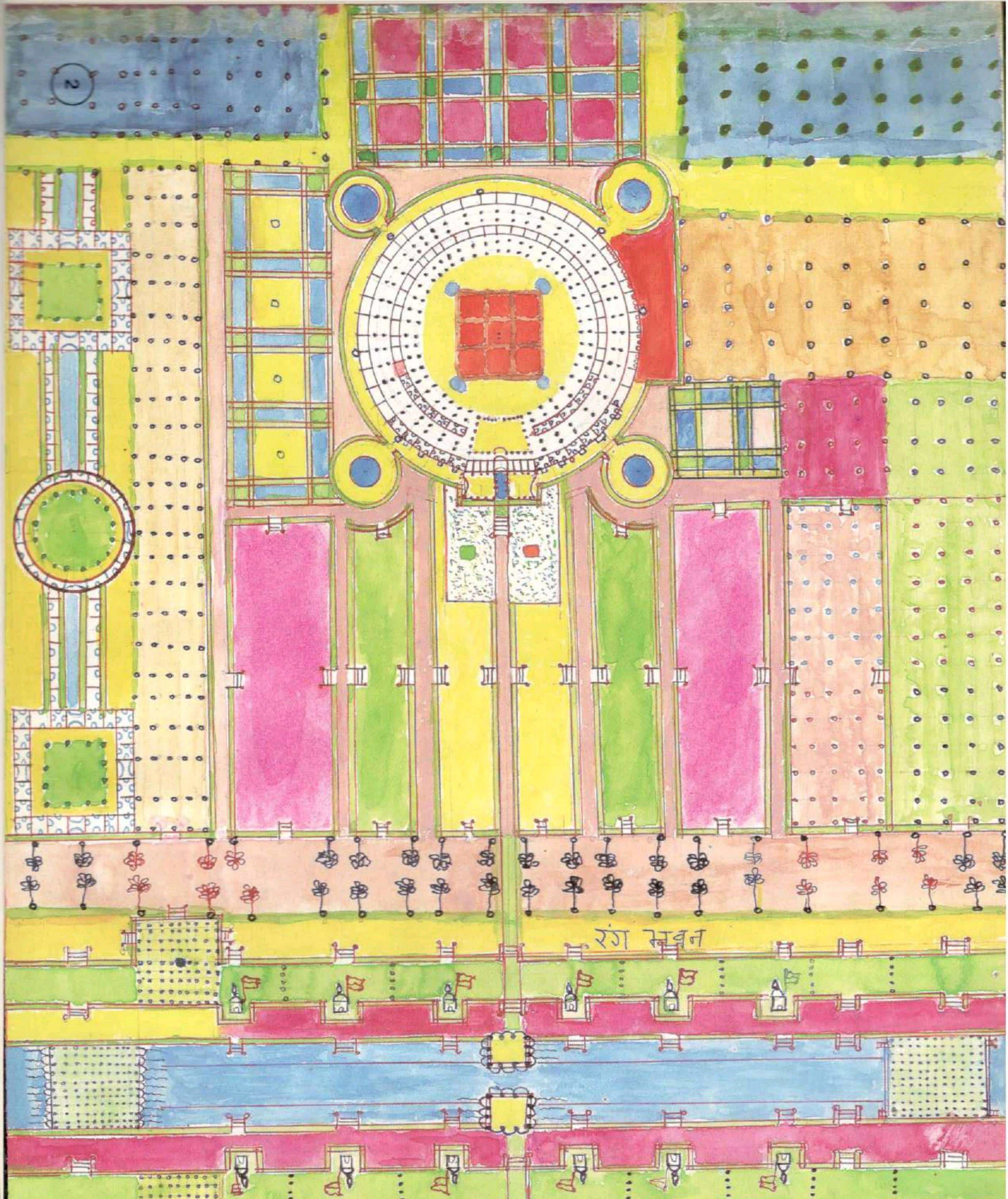
2
रंग भवन

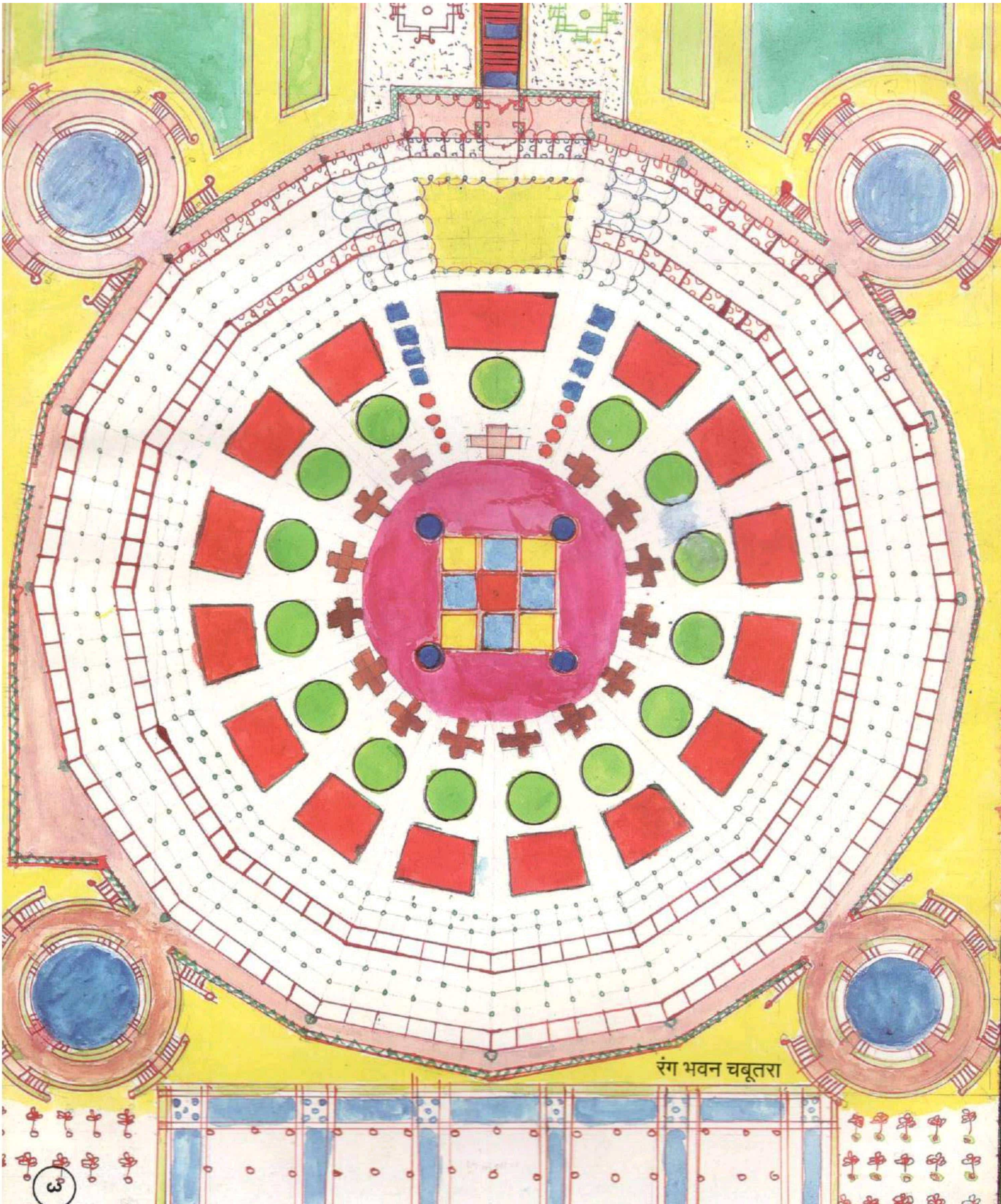
रंग भवन चबूतरा

रंग भवन मध्य का हांस, 28 थंभ चौक

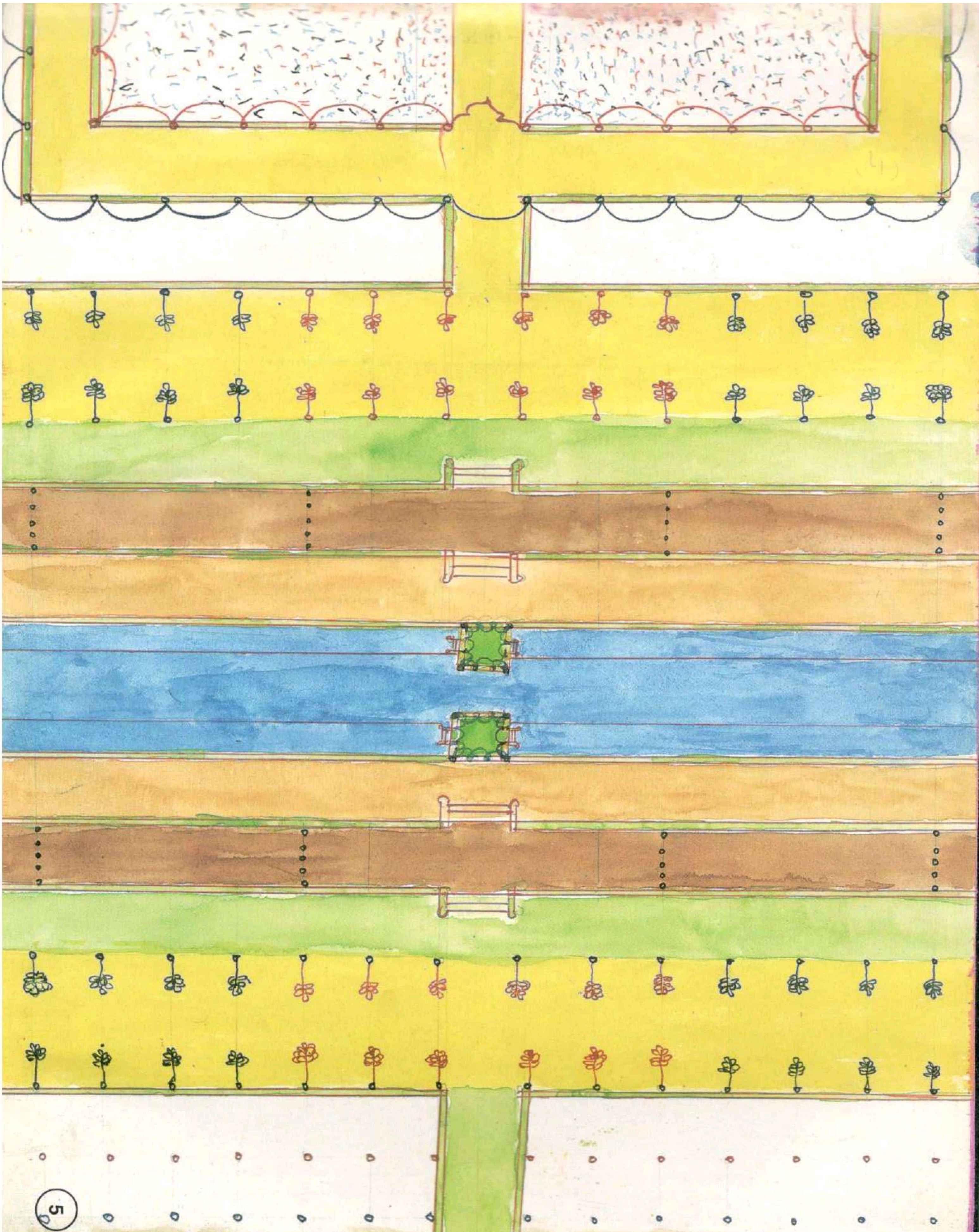

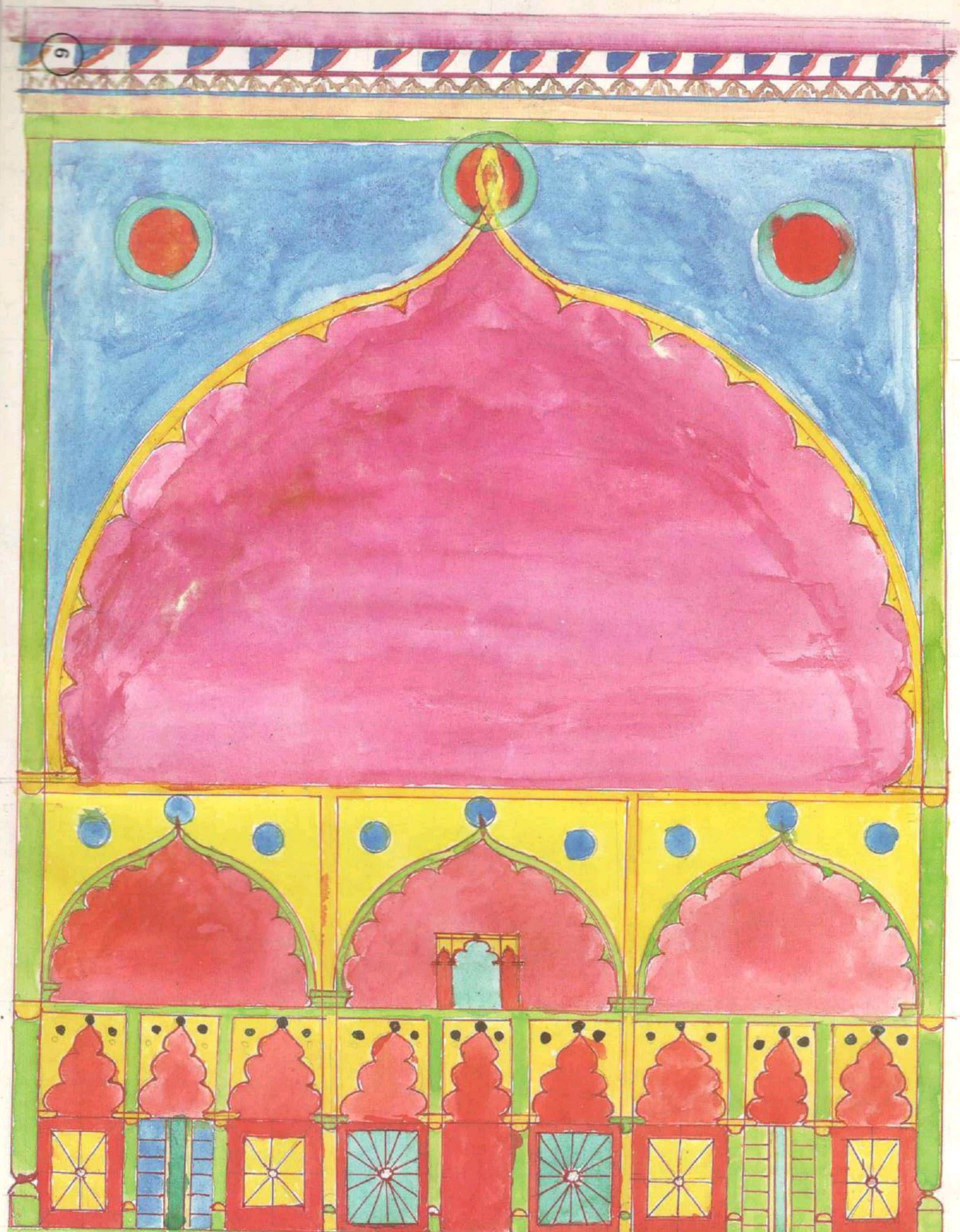

रंग भवन – एक मन्दिर

मन्दिर की बगली दिवाल

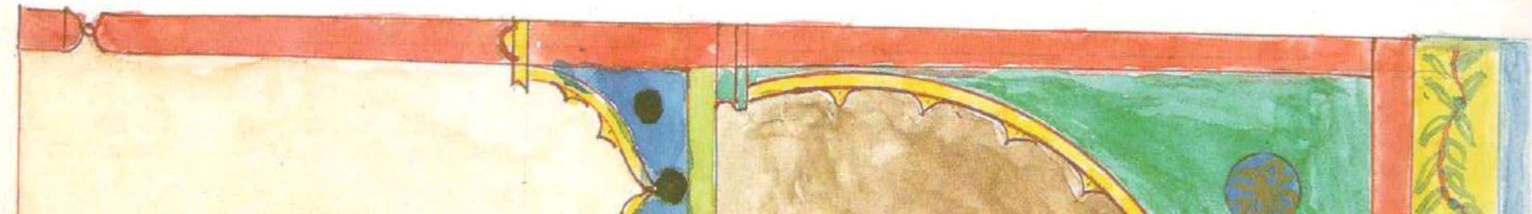

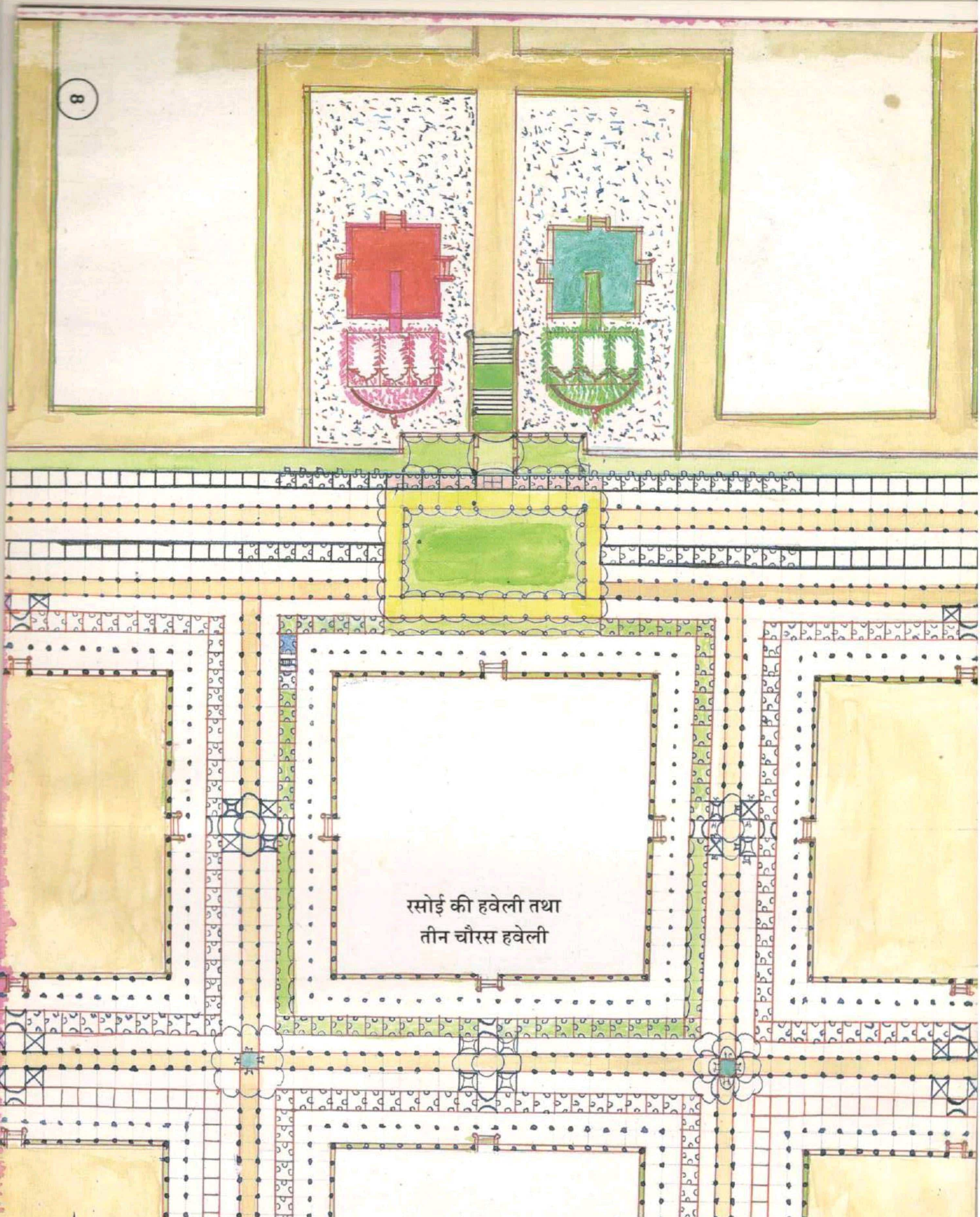
8
रसोई की हवेली तथा
तीन चौरस हवेली

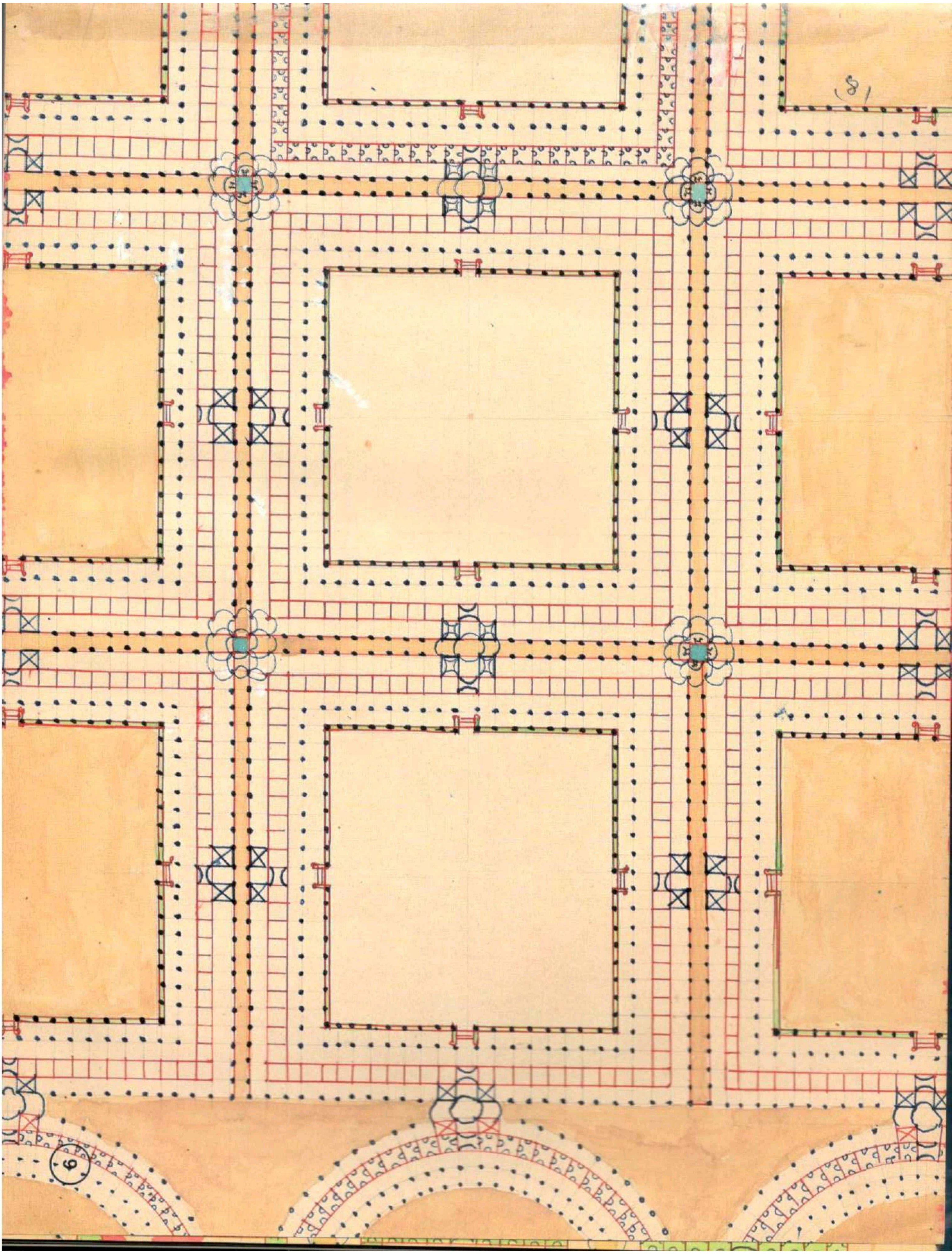

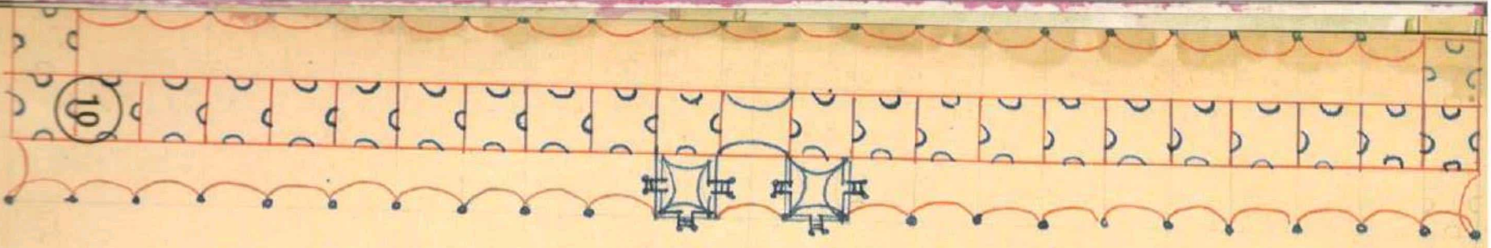

(9)

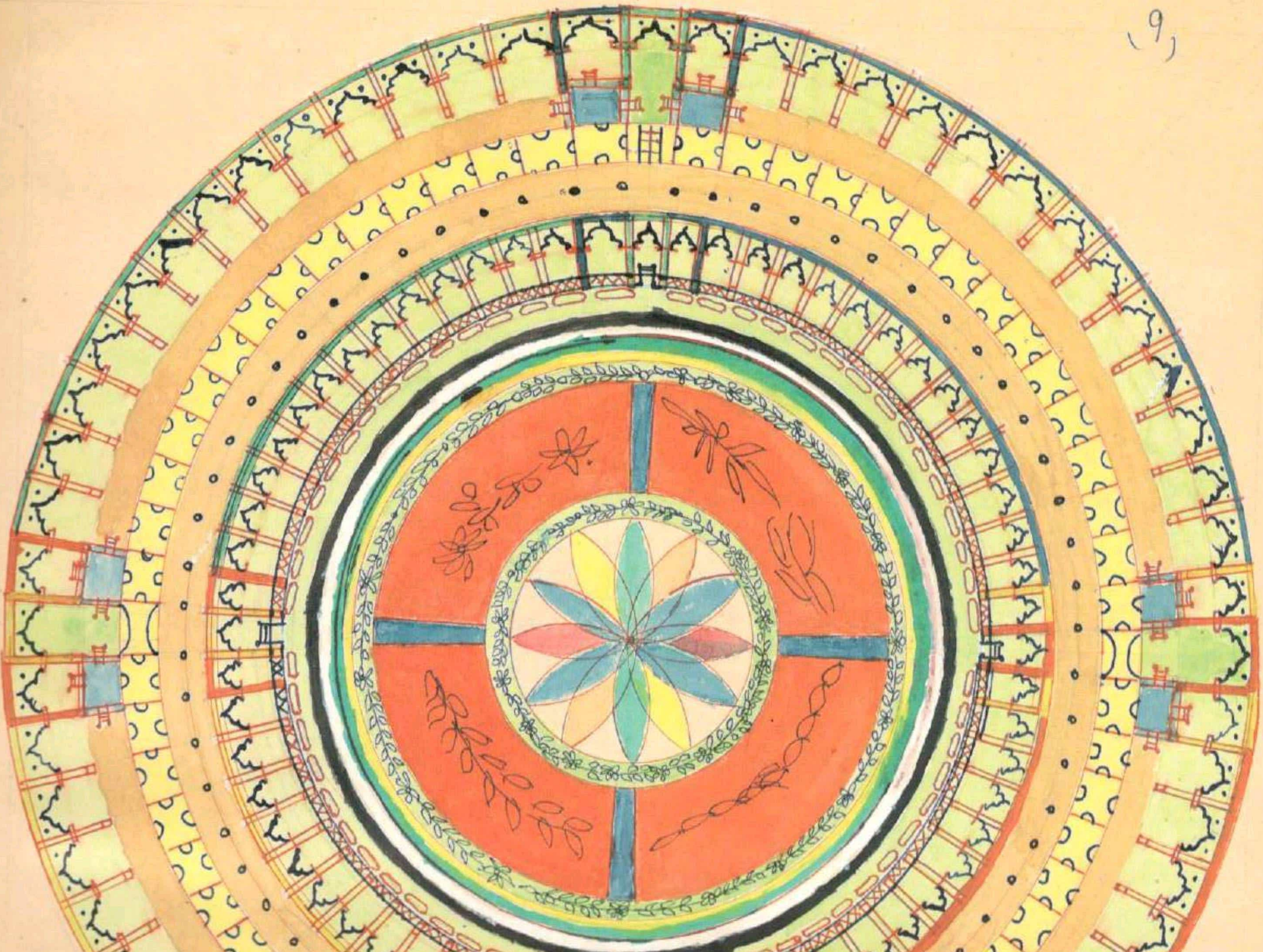

पांचवाँ चौक मूल मिलावा

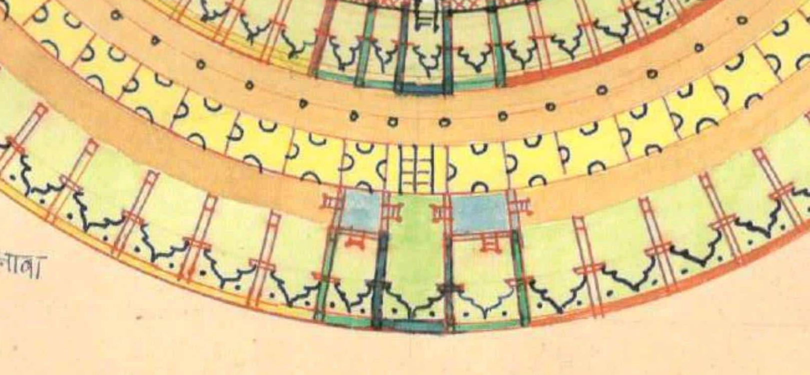

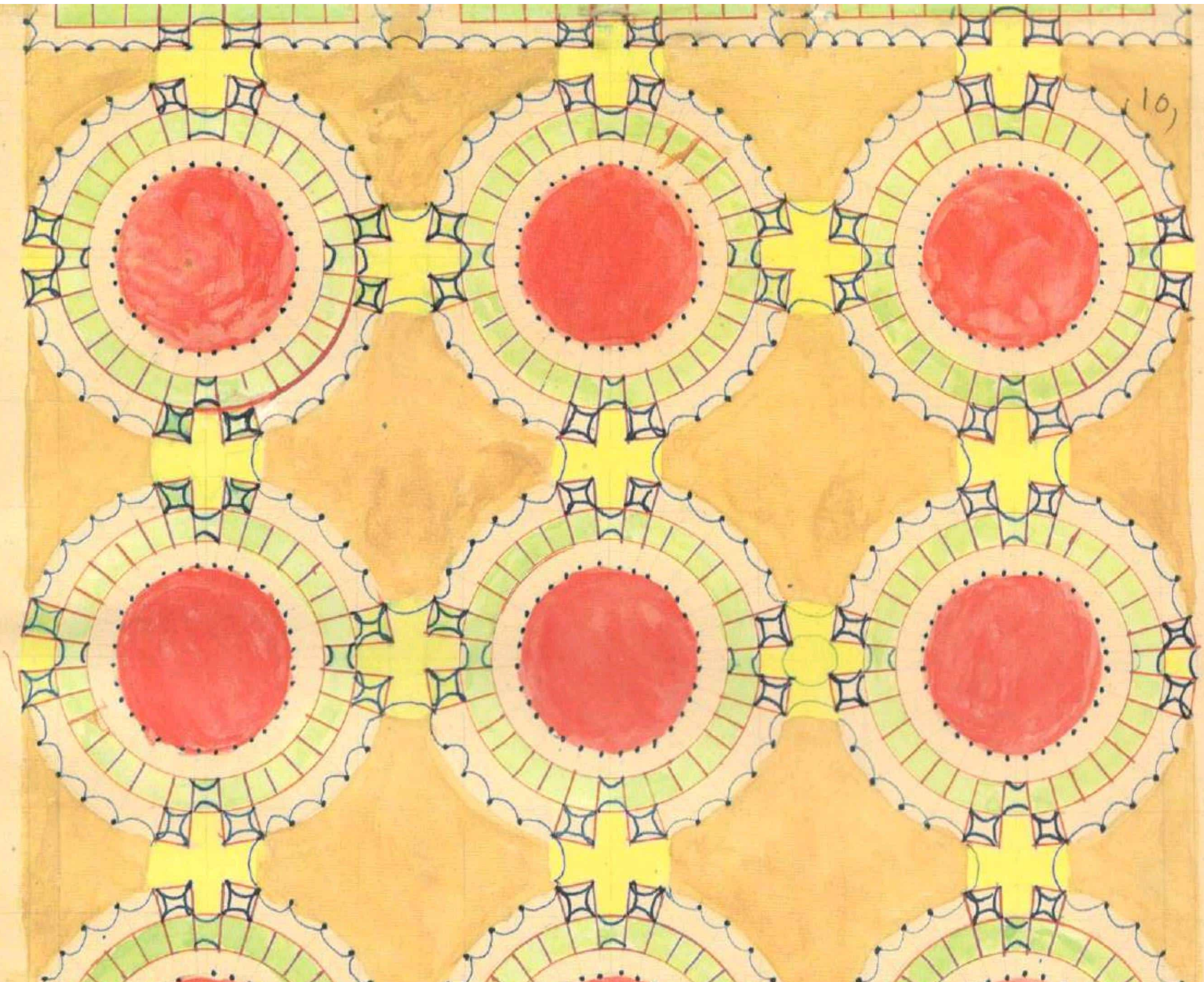
गोल हवेली

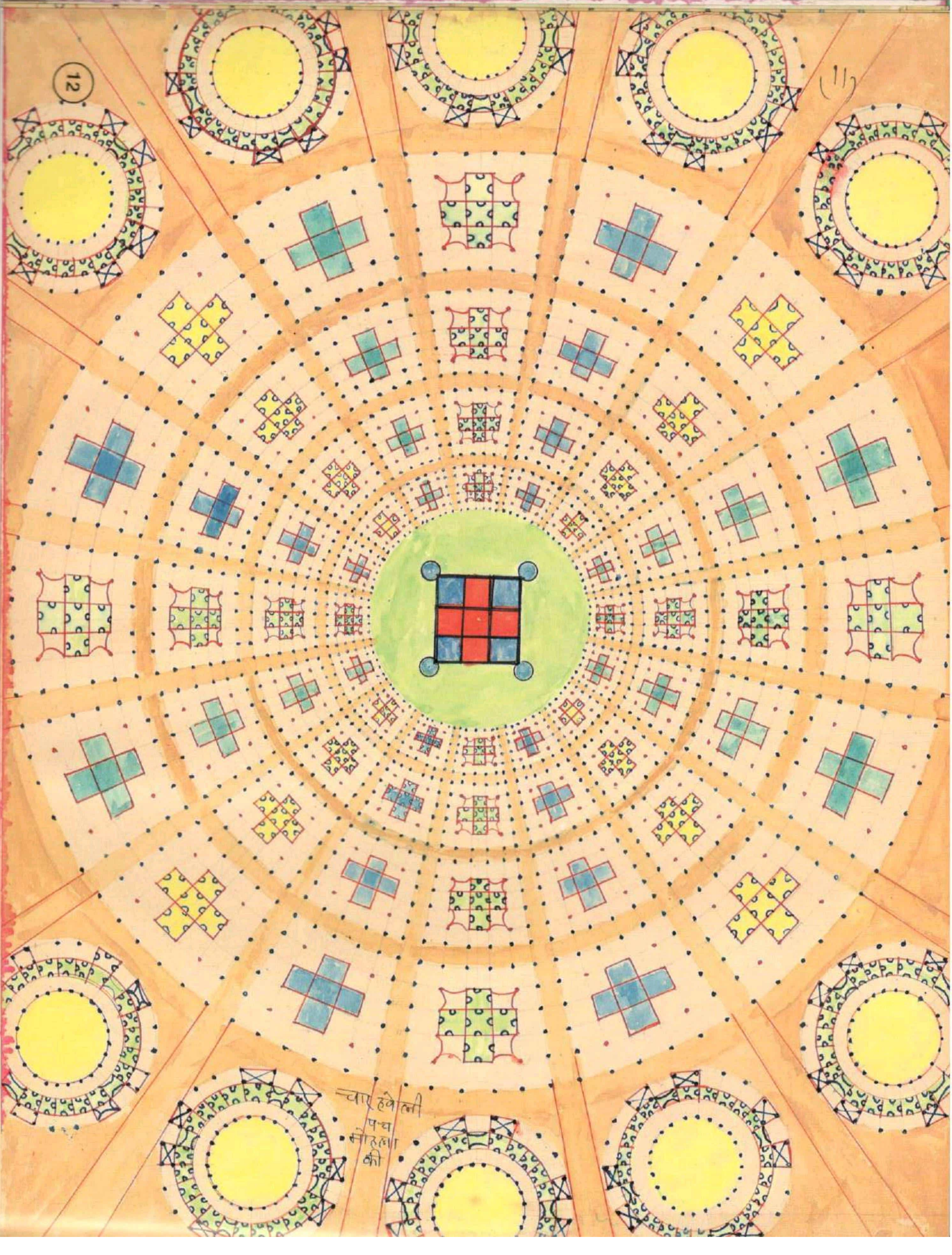
12
(11)
चार हवेली
पञ्च
मोहल्ला
की

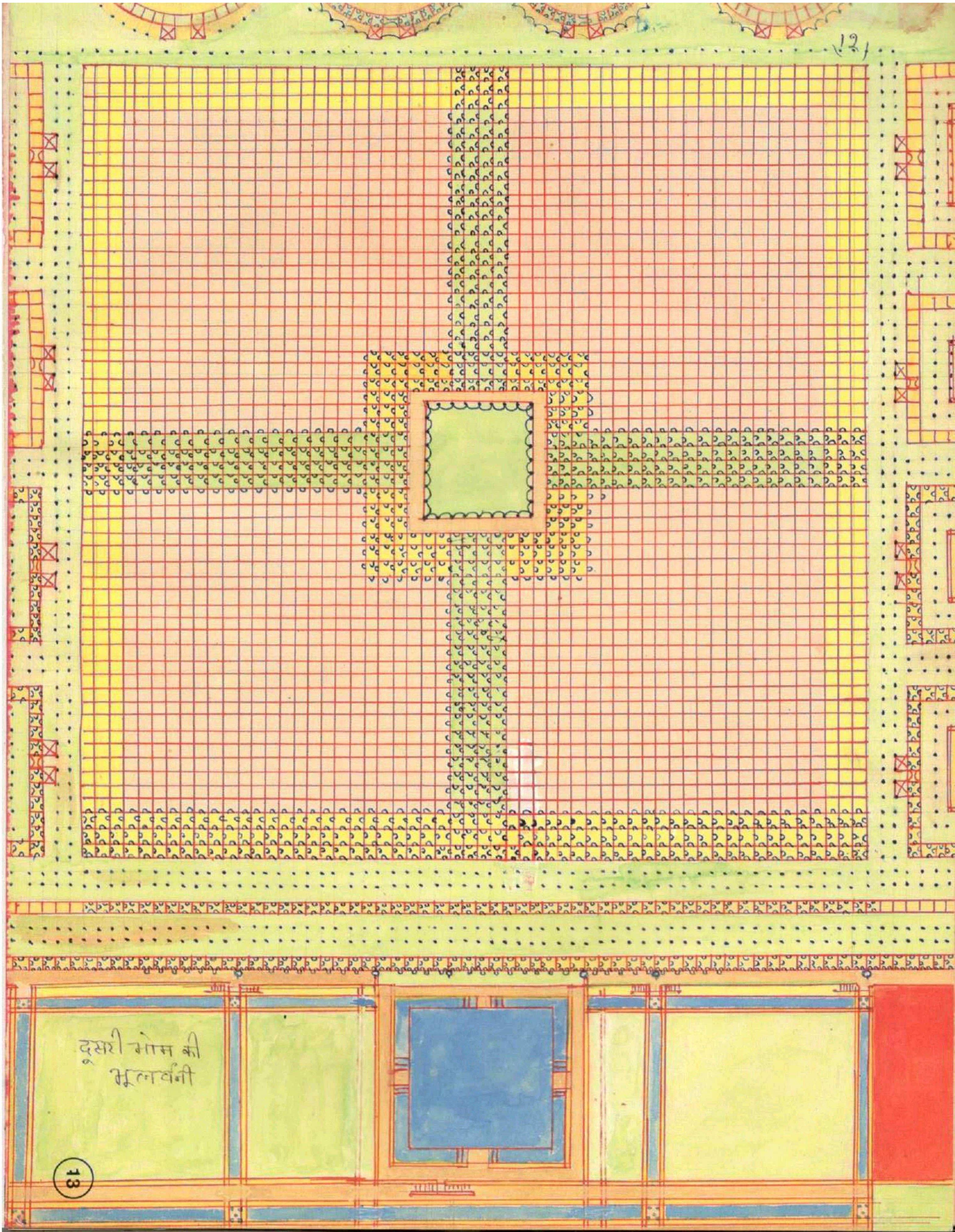
(12)
दूसरी भोम की
भूलवनी

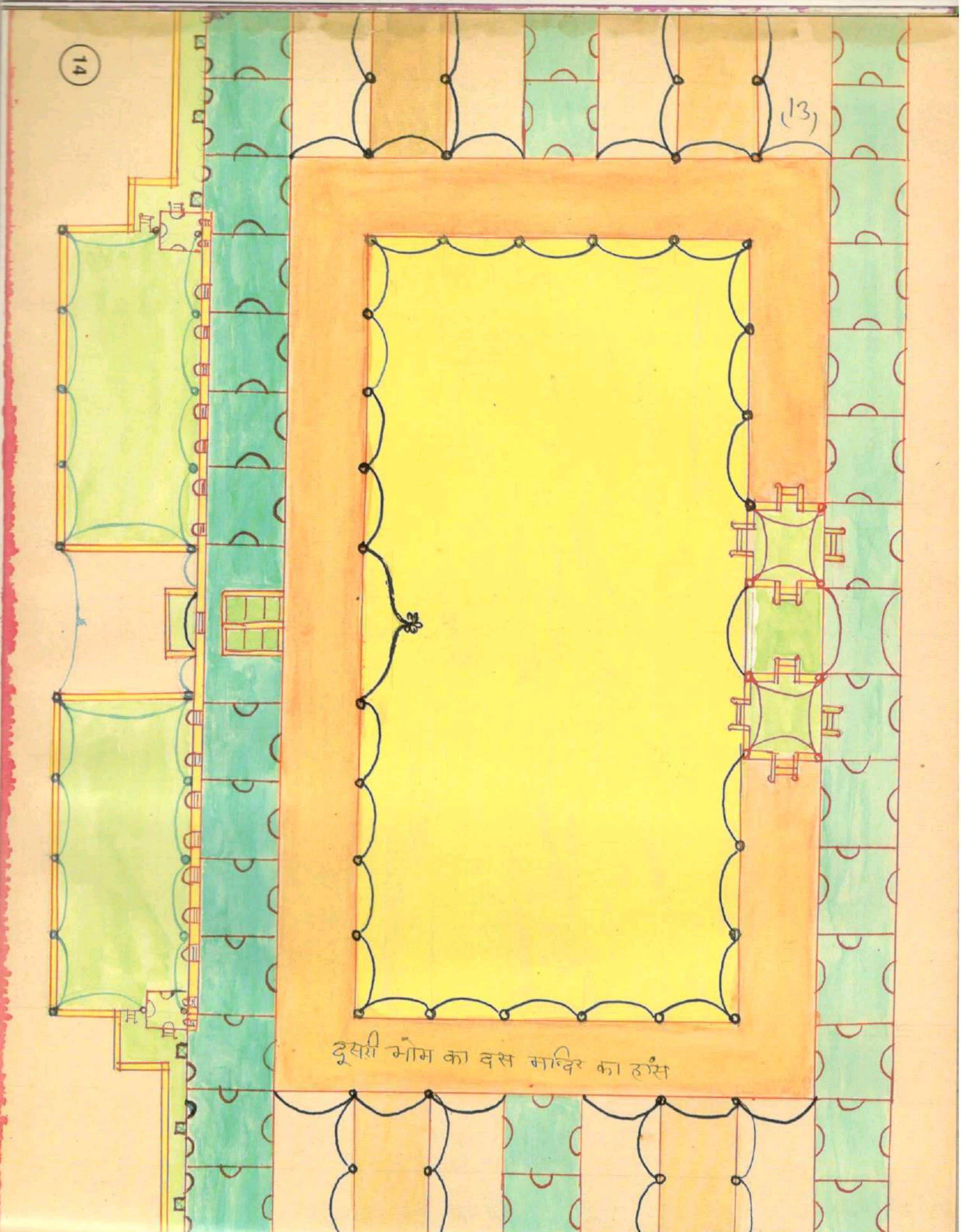

14
(13)
दूसरी भोम का दस मन्दिर का हांस

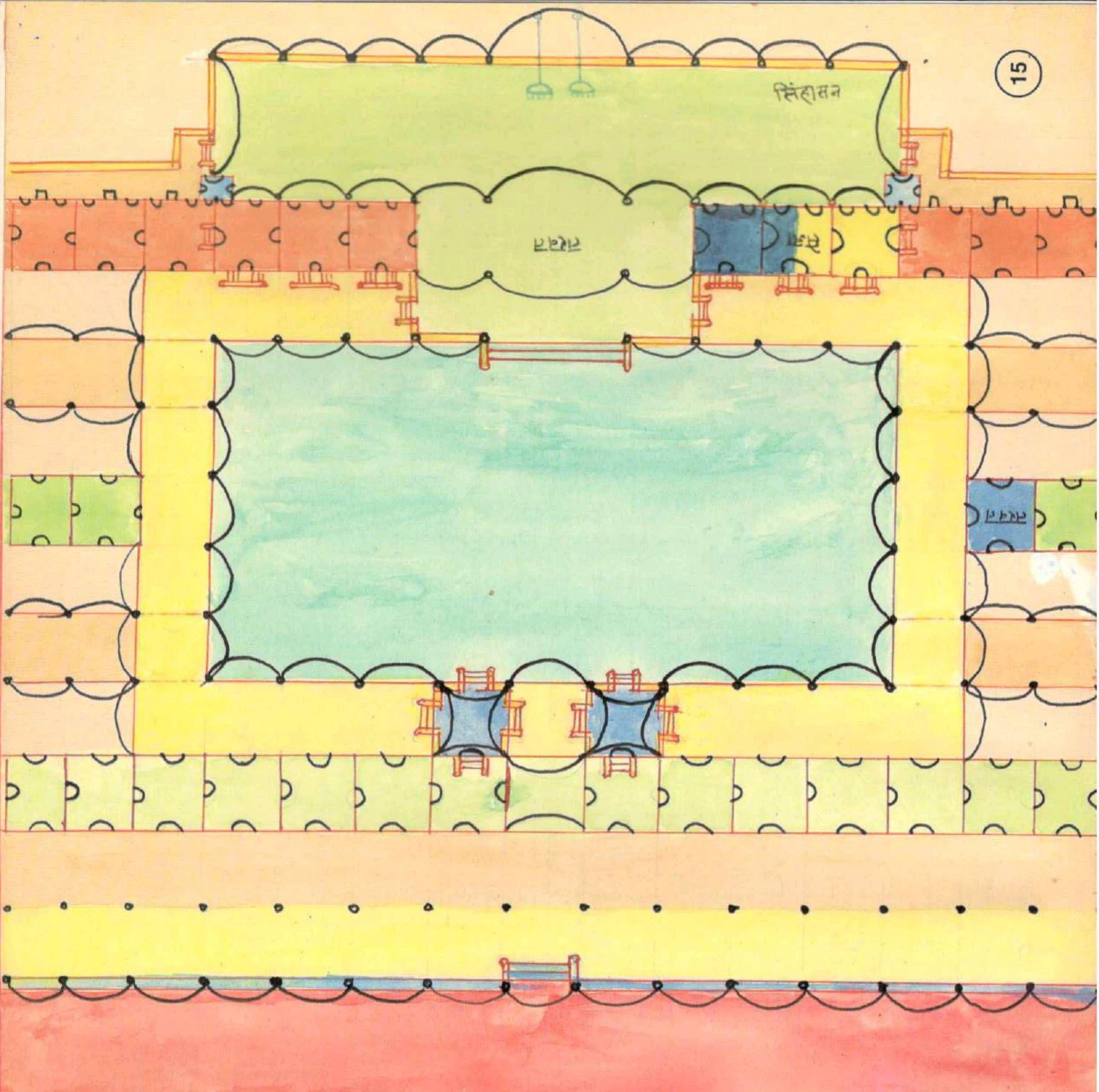

(14) तीसरी भोम का दस मन्दिर
का हांस

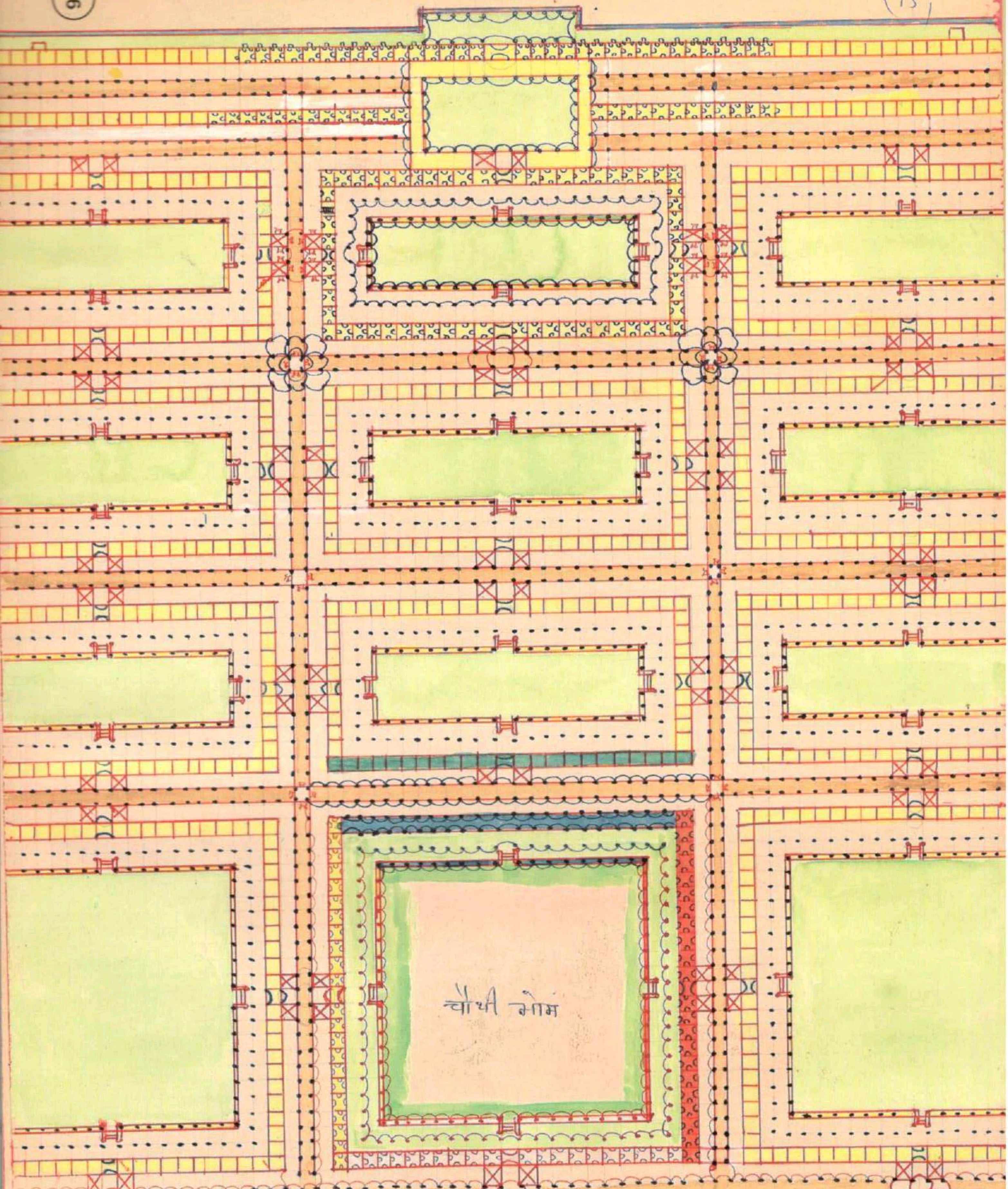
चौथी भोम

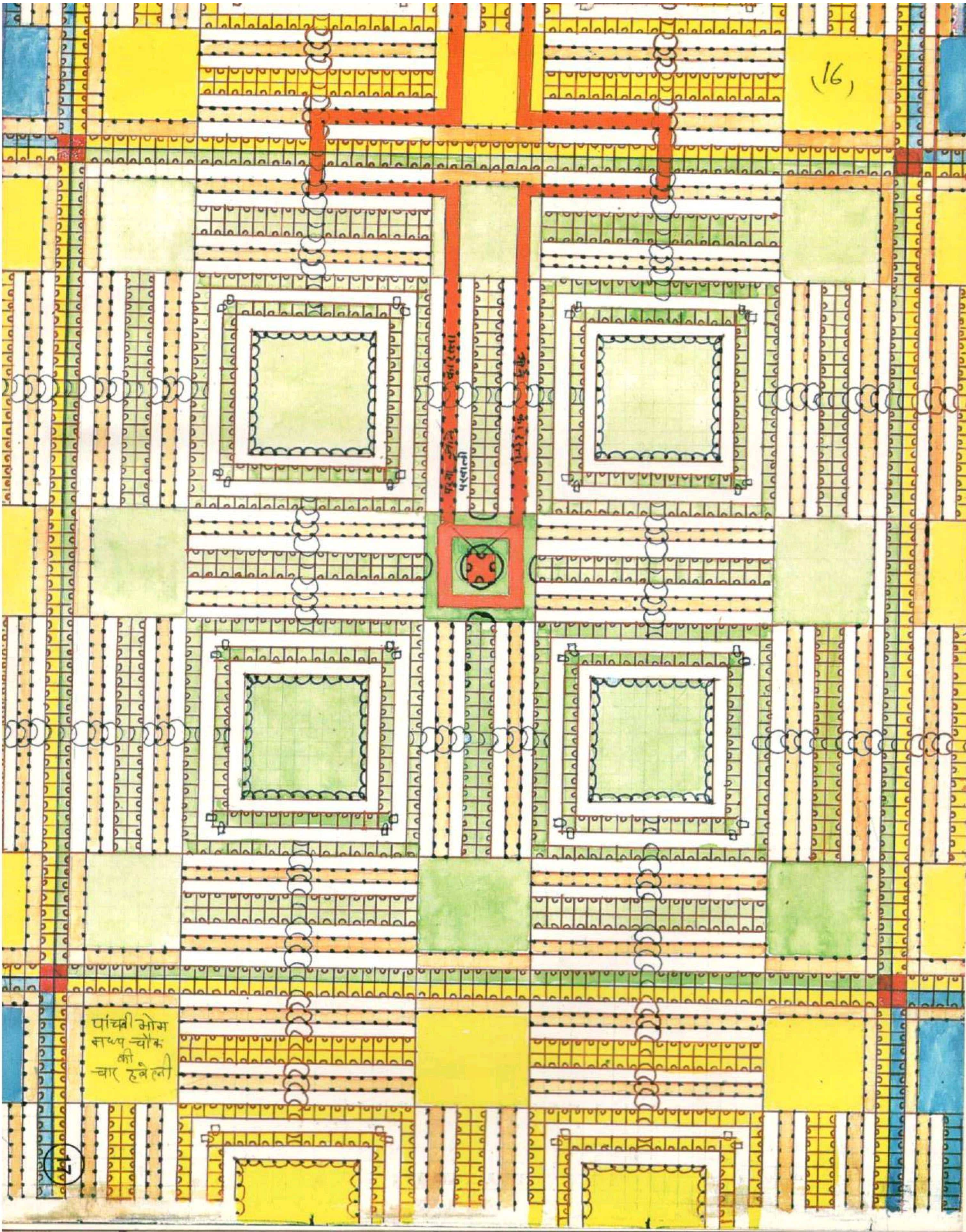
(16)
पांचवी भोम
मध्य चौक
की
चार हवेली
पदवाली
17

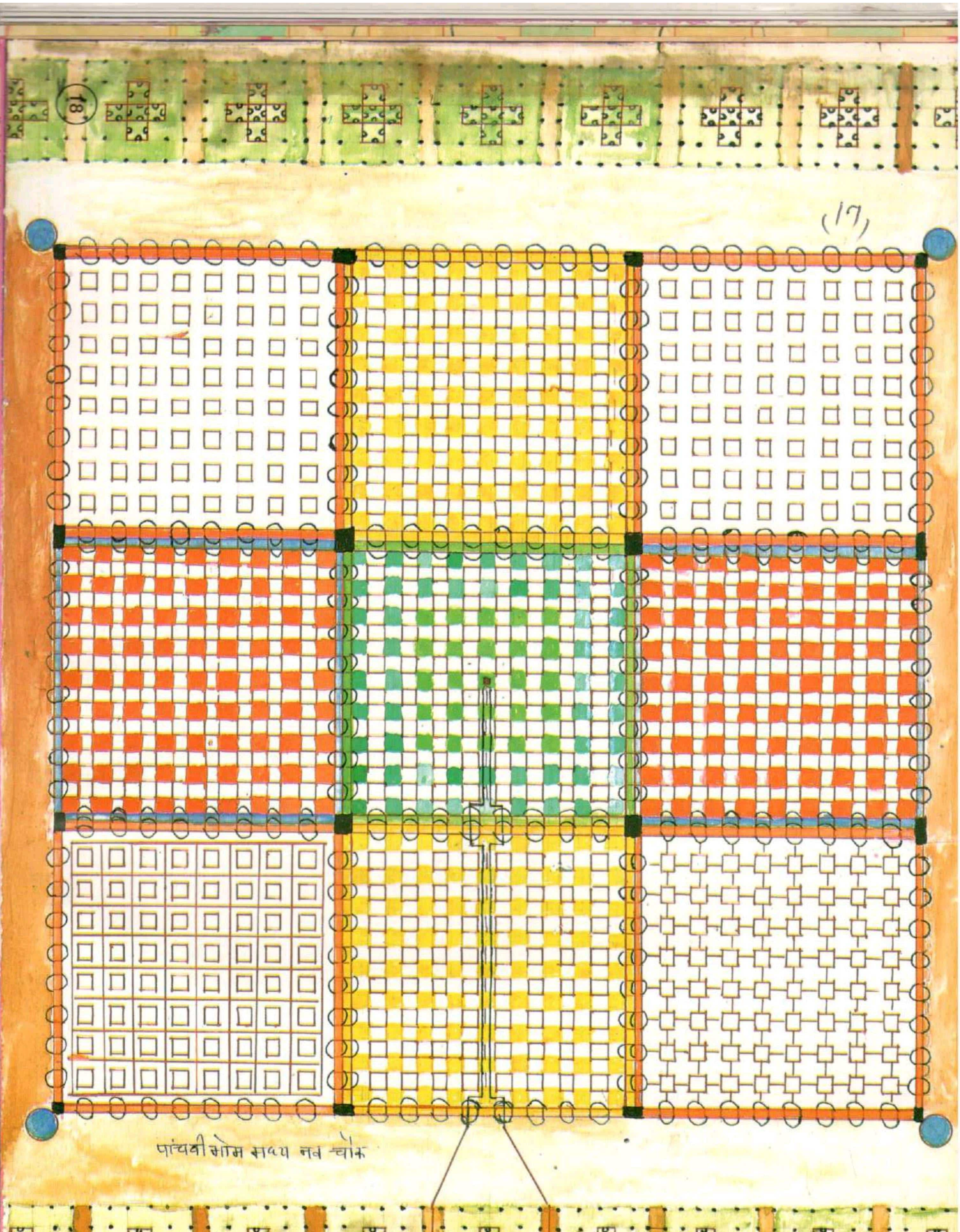
18
(17)
पांचवी भोम मध्य नव चौक

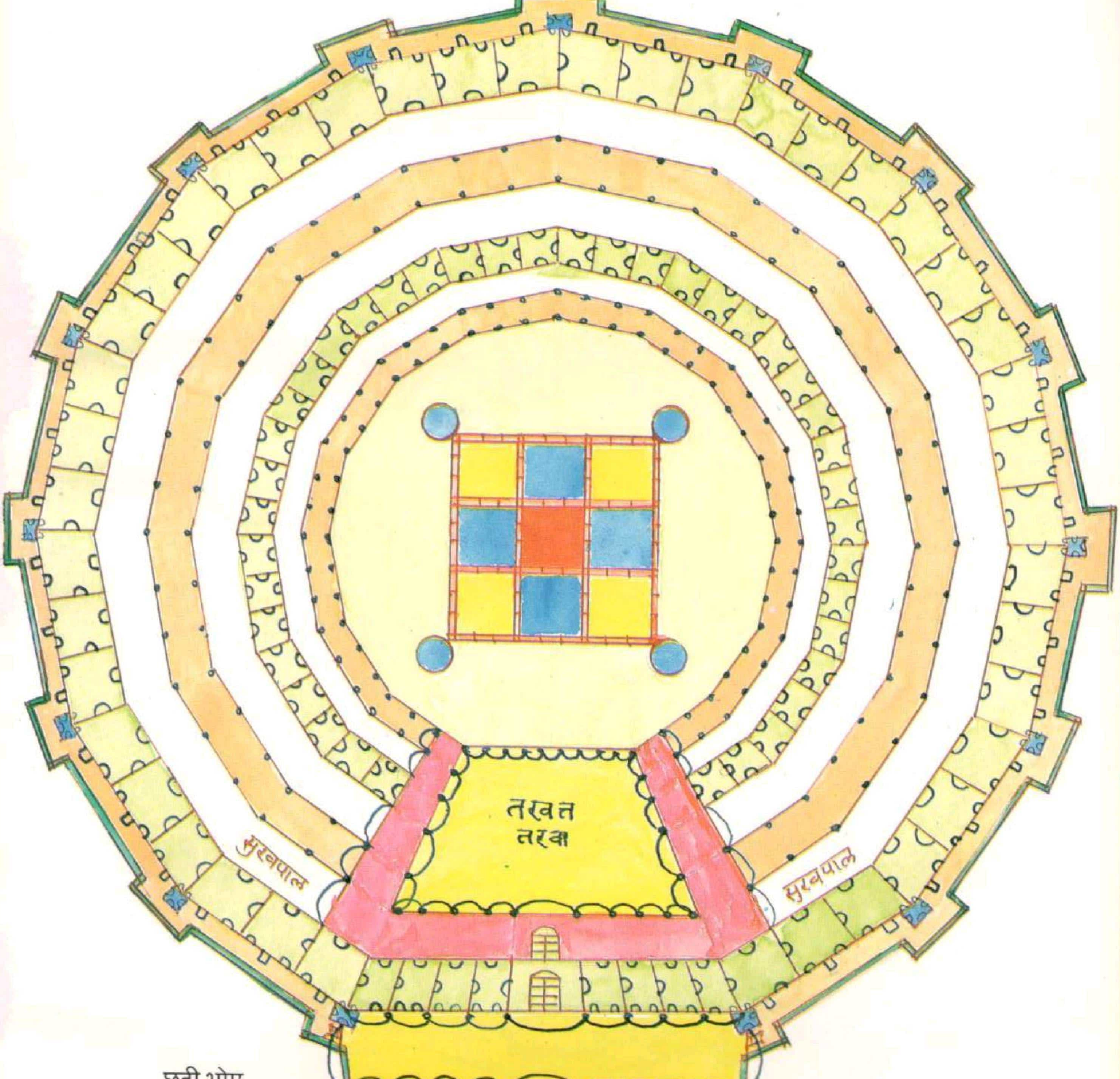

छटी भोम

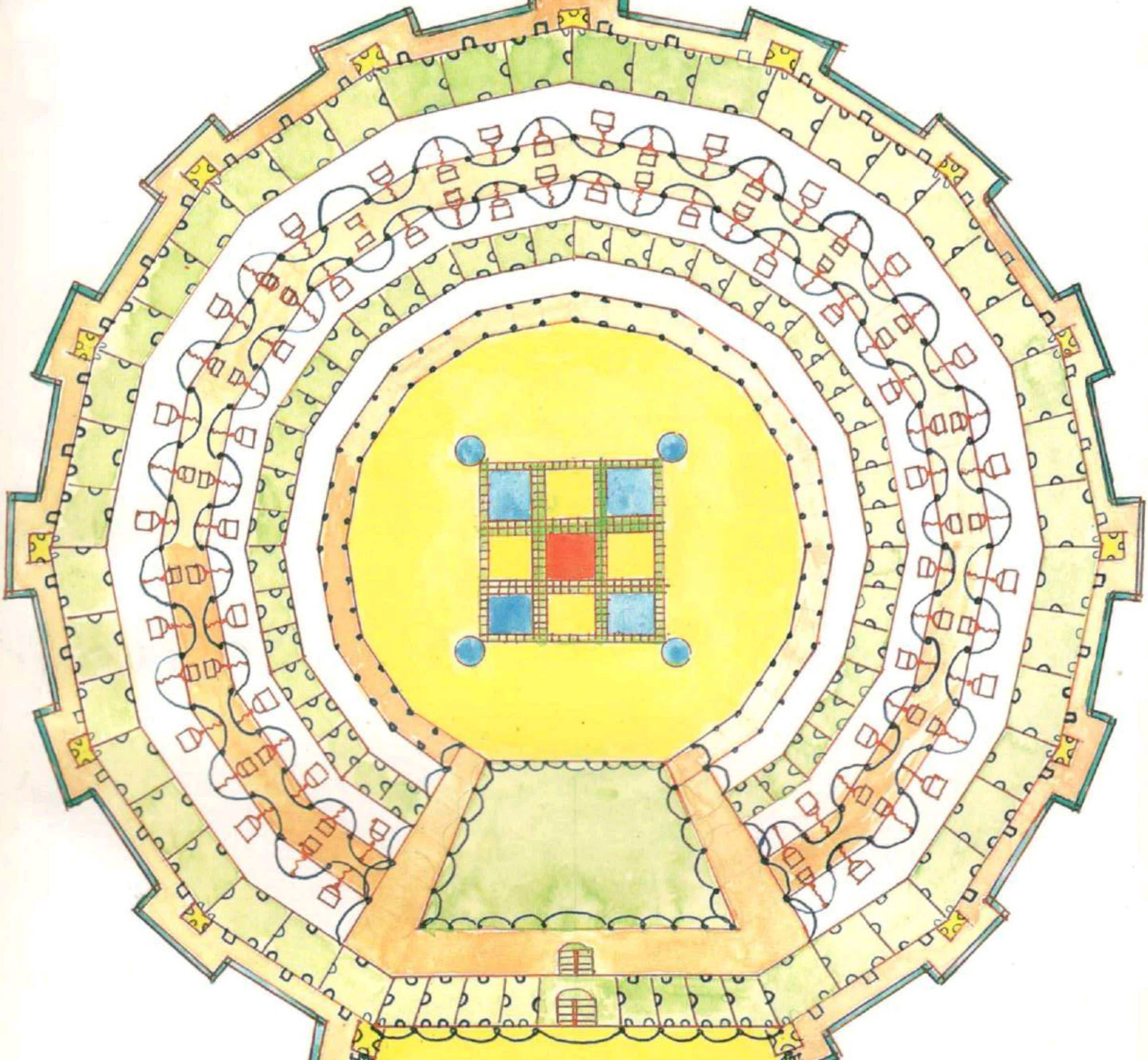

सातवीं भोम

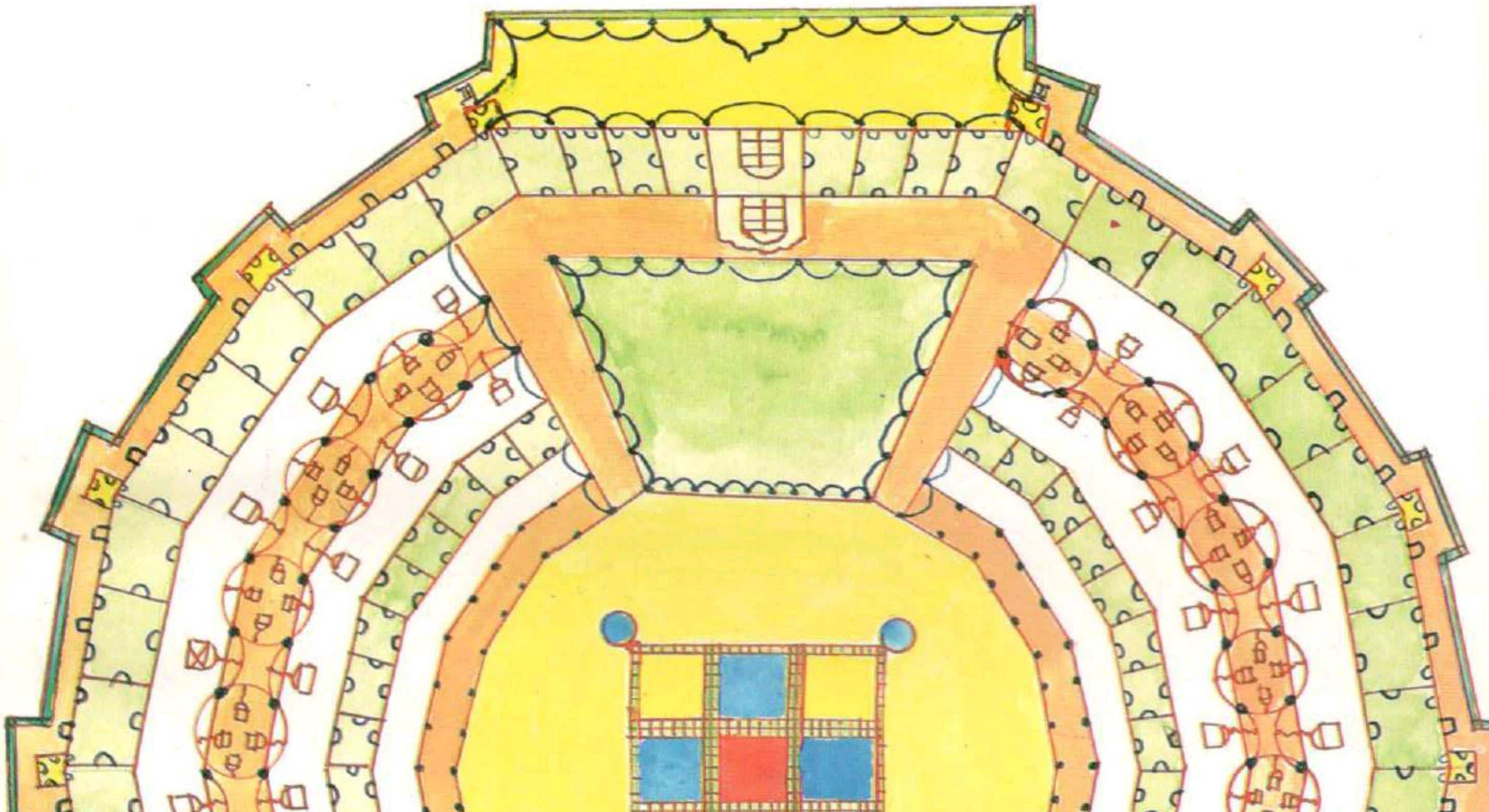

आठवीं भोम

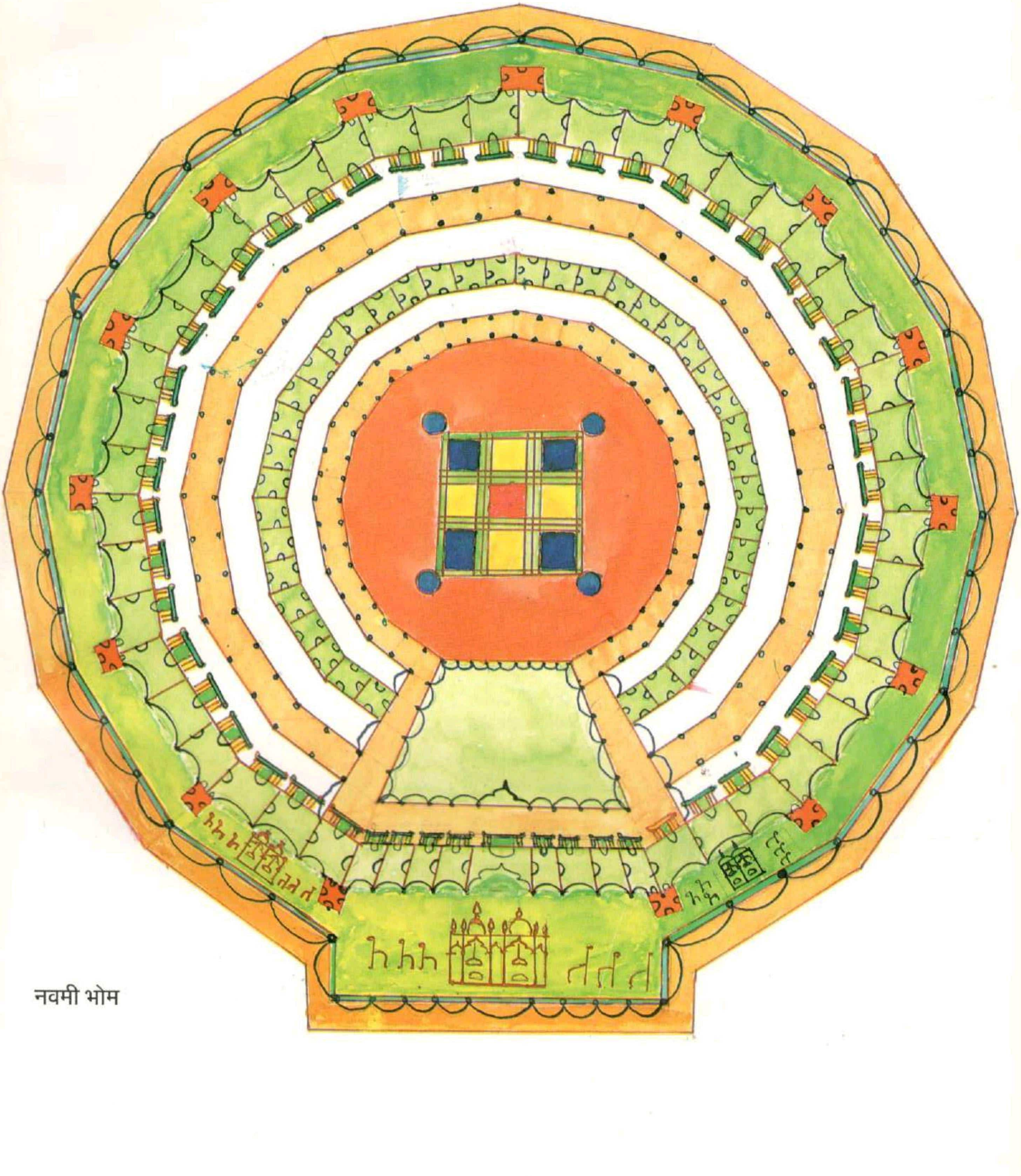

नवमी भोम

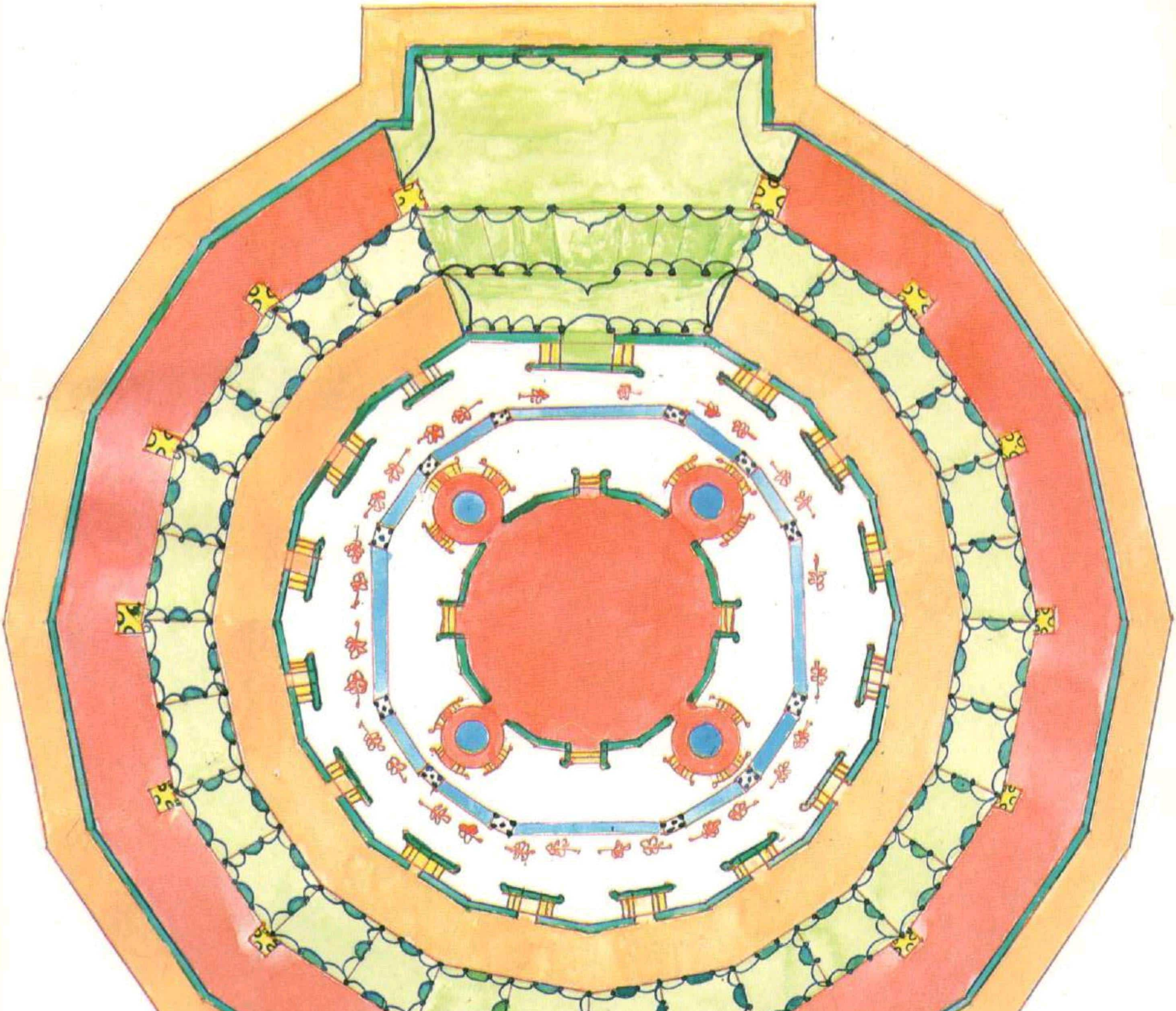

दसमी चान्दनी
पर दहलाने

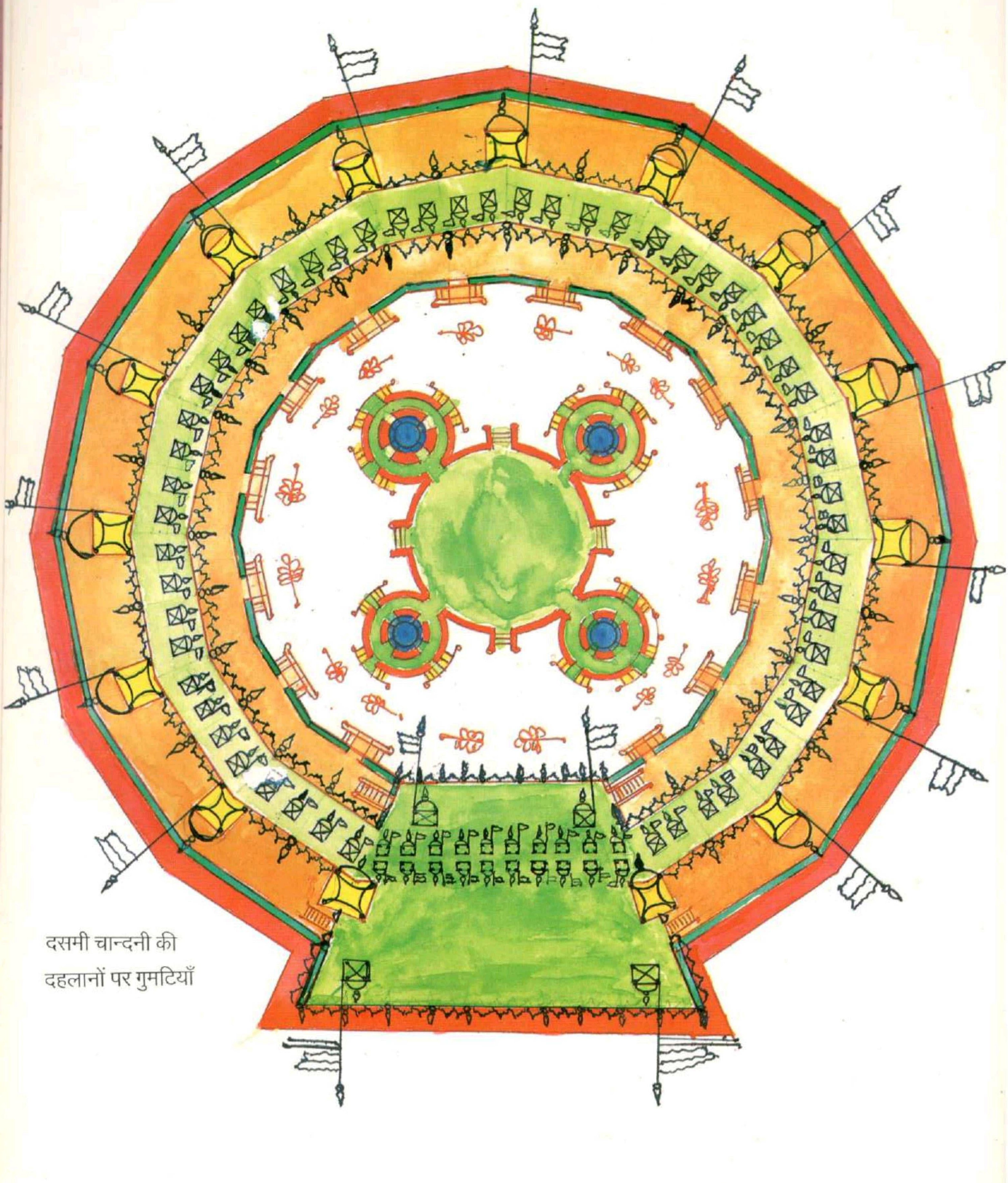

दसमी चान्दनी की
दहलानों पर गुमटियाँ

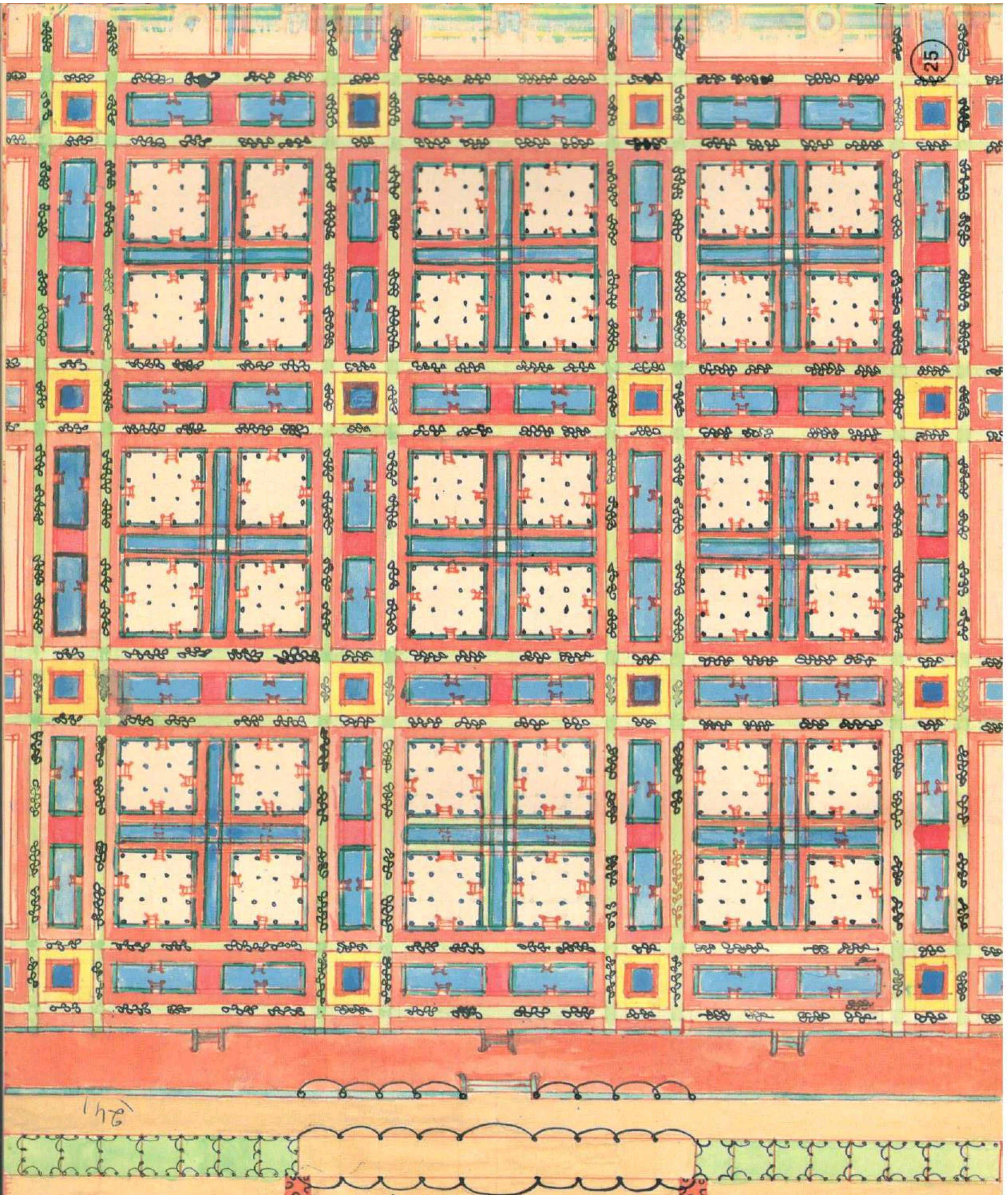
२४।
दसमी चांदनी पर बाग बगीचे

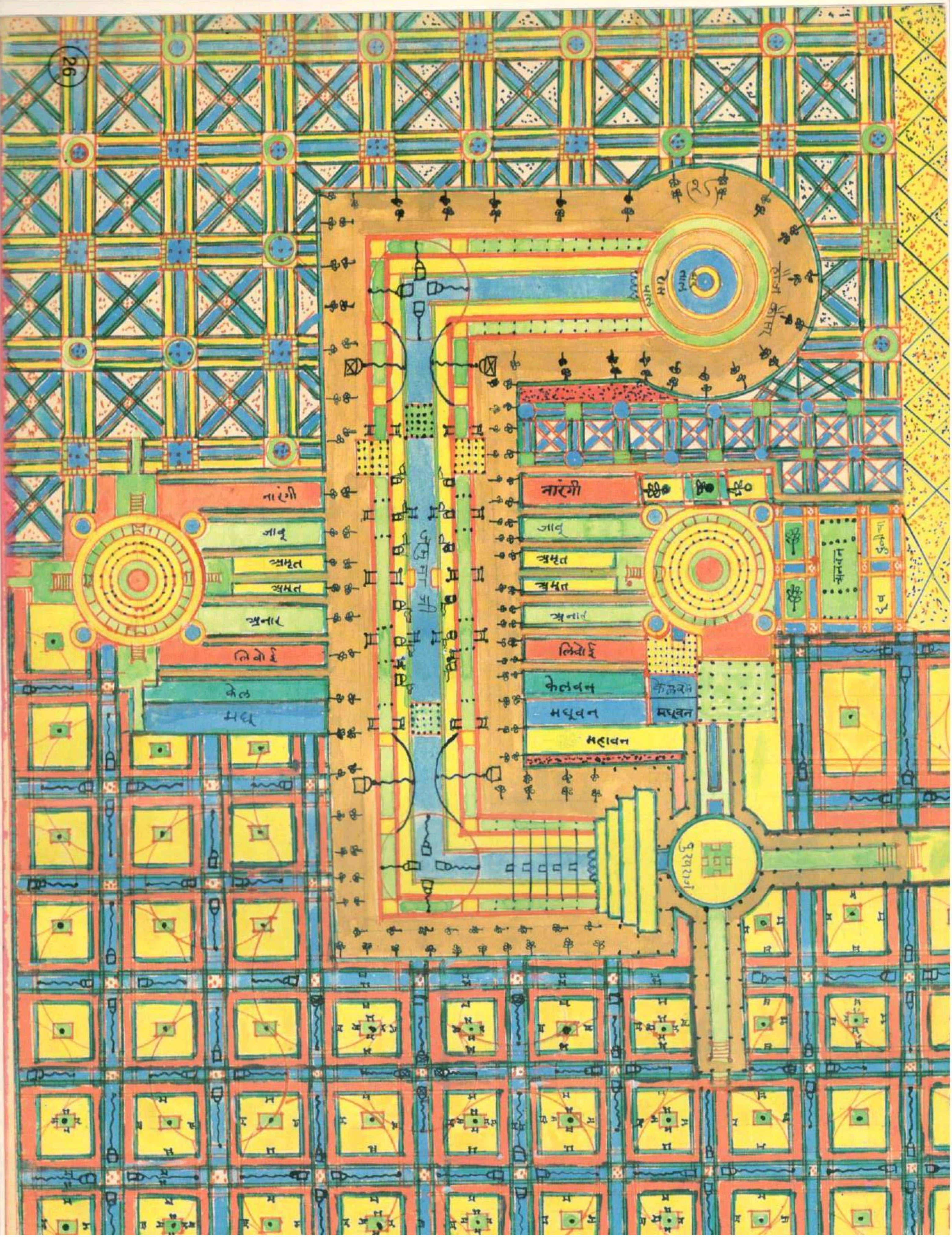

नारंगी
अमृत
अमृत
नारंगी
अमृत
अमृत
केलवन
मधुवन
महावन

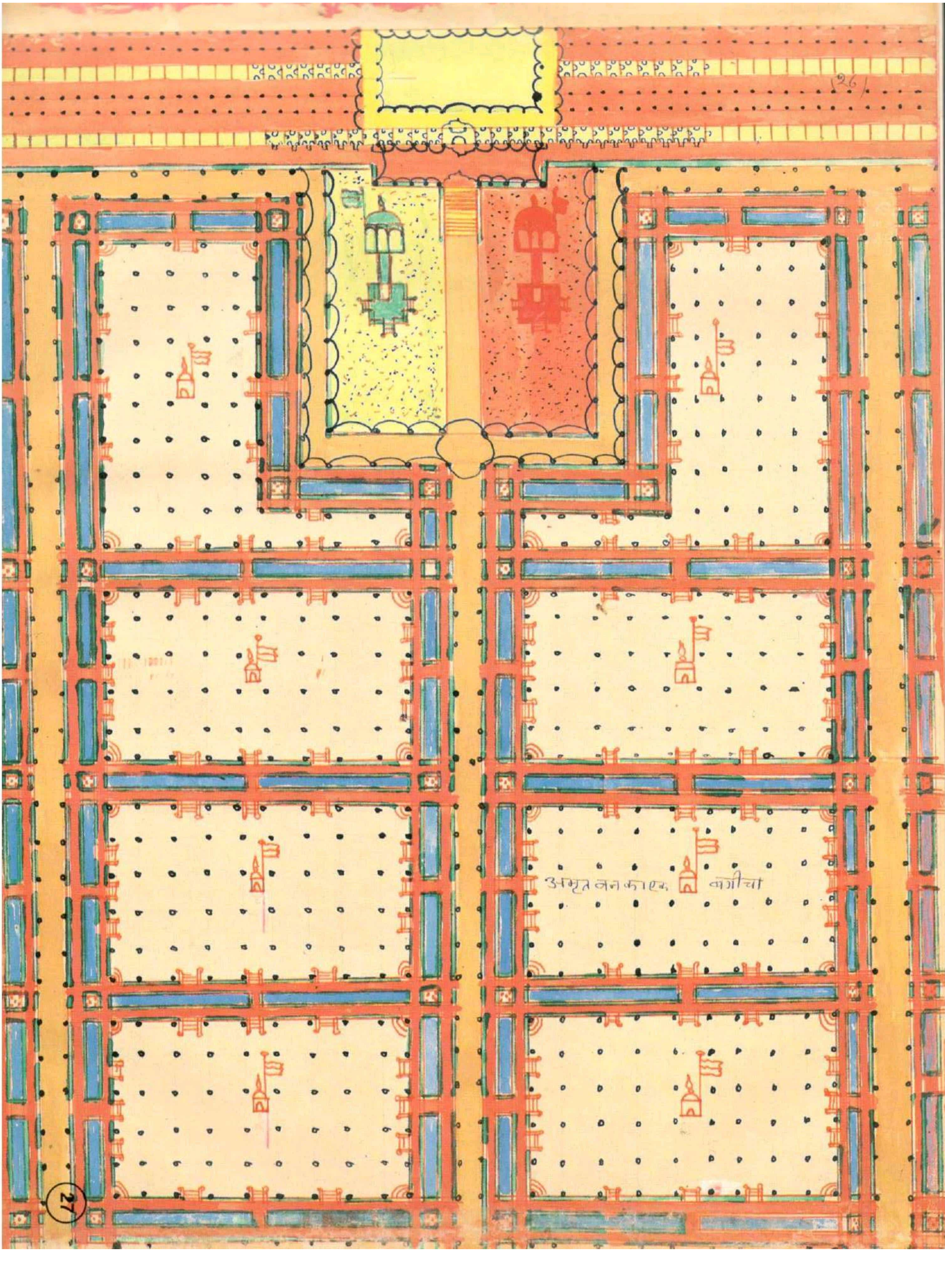
(26)
अमृत वन का एक बगीचा

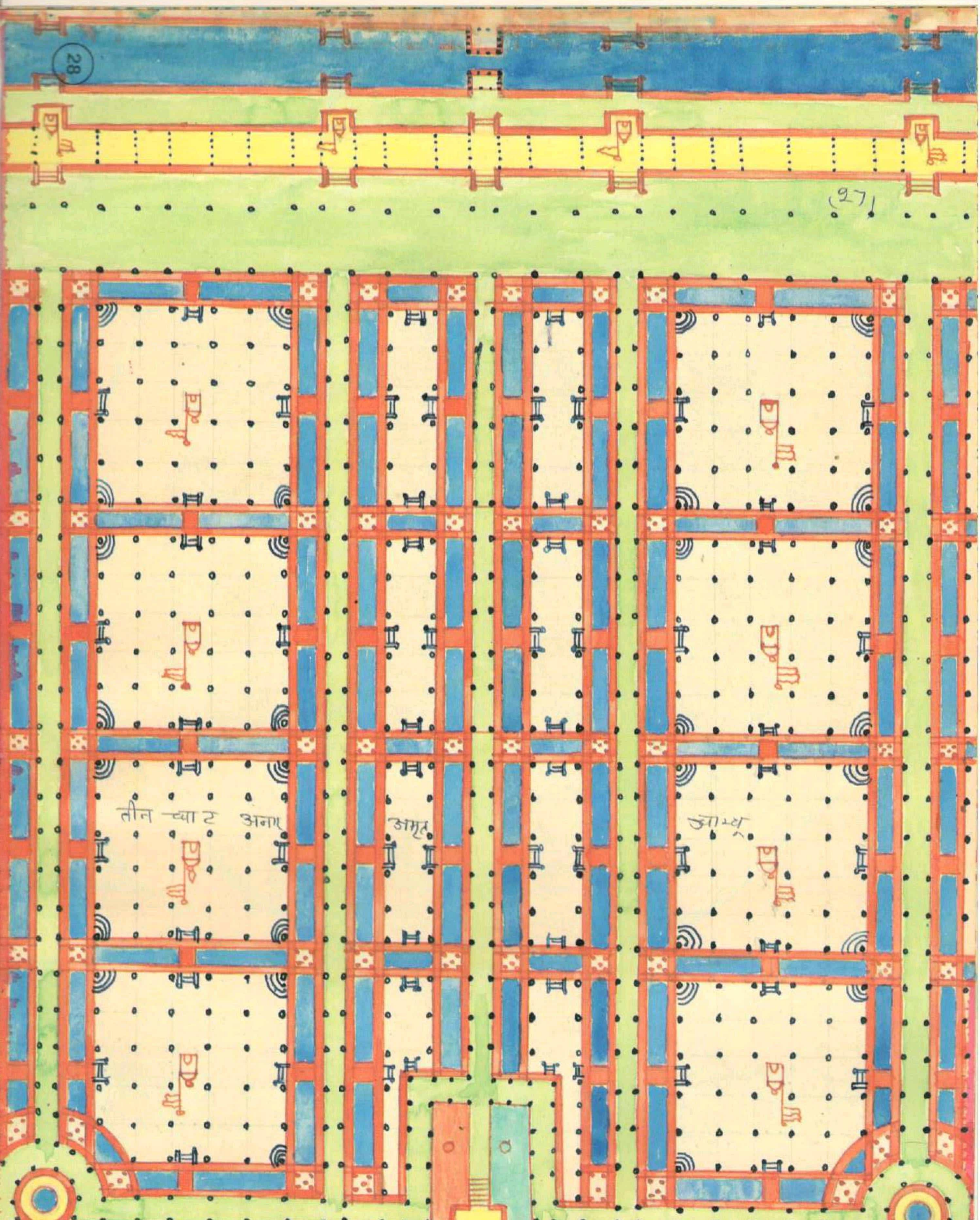
28
(27)
तीन च्यार अना
अमृत
आम्र

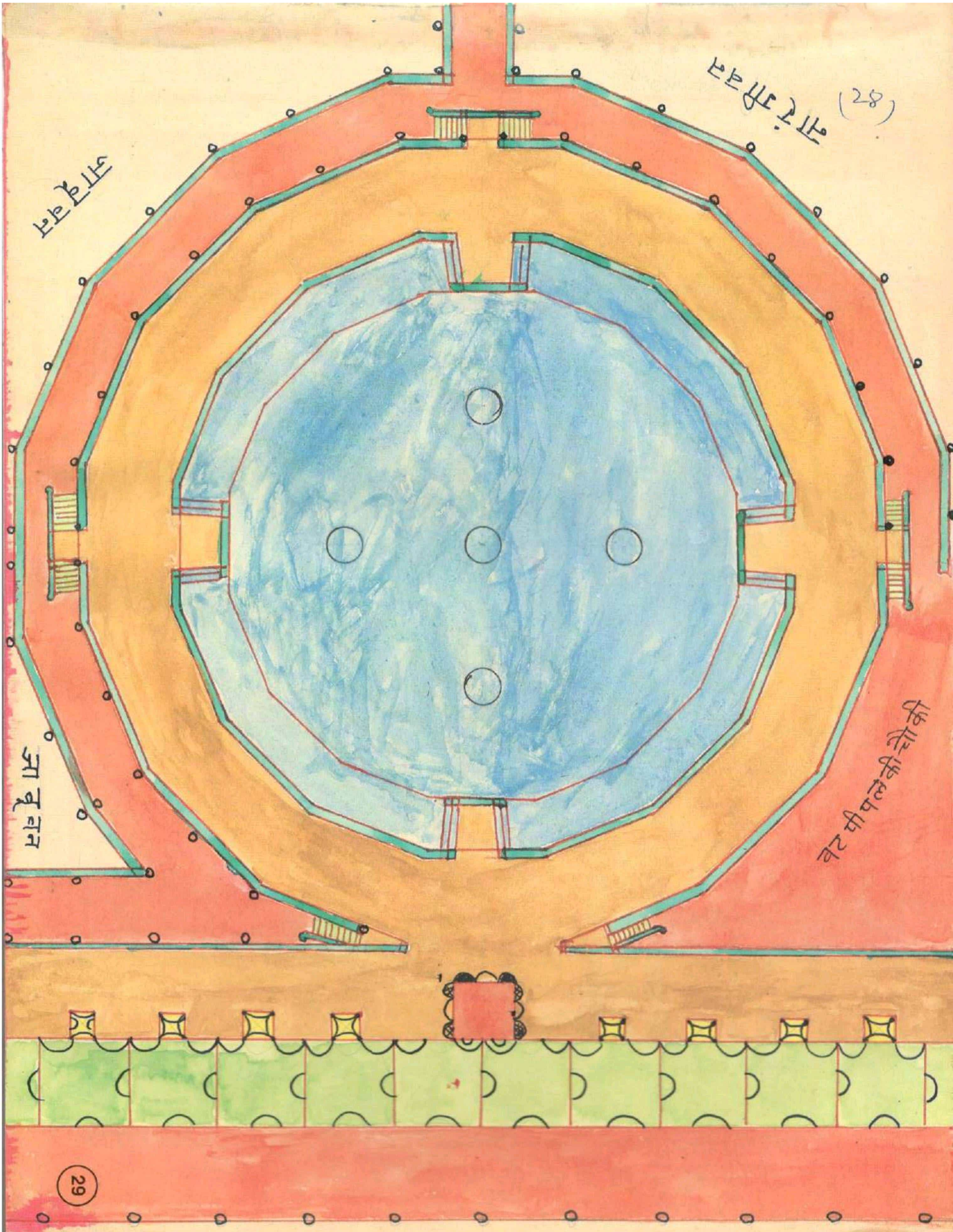
(28)
बर पीपल की चौकी

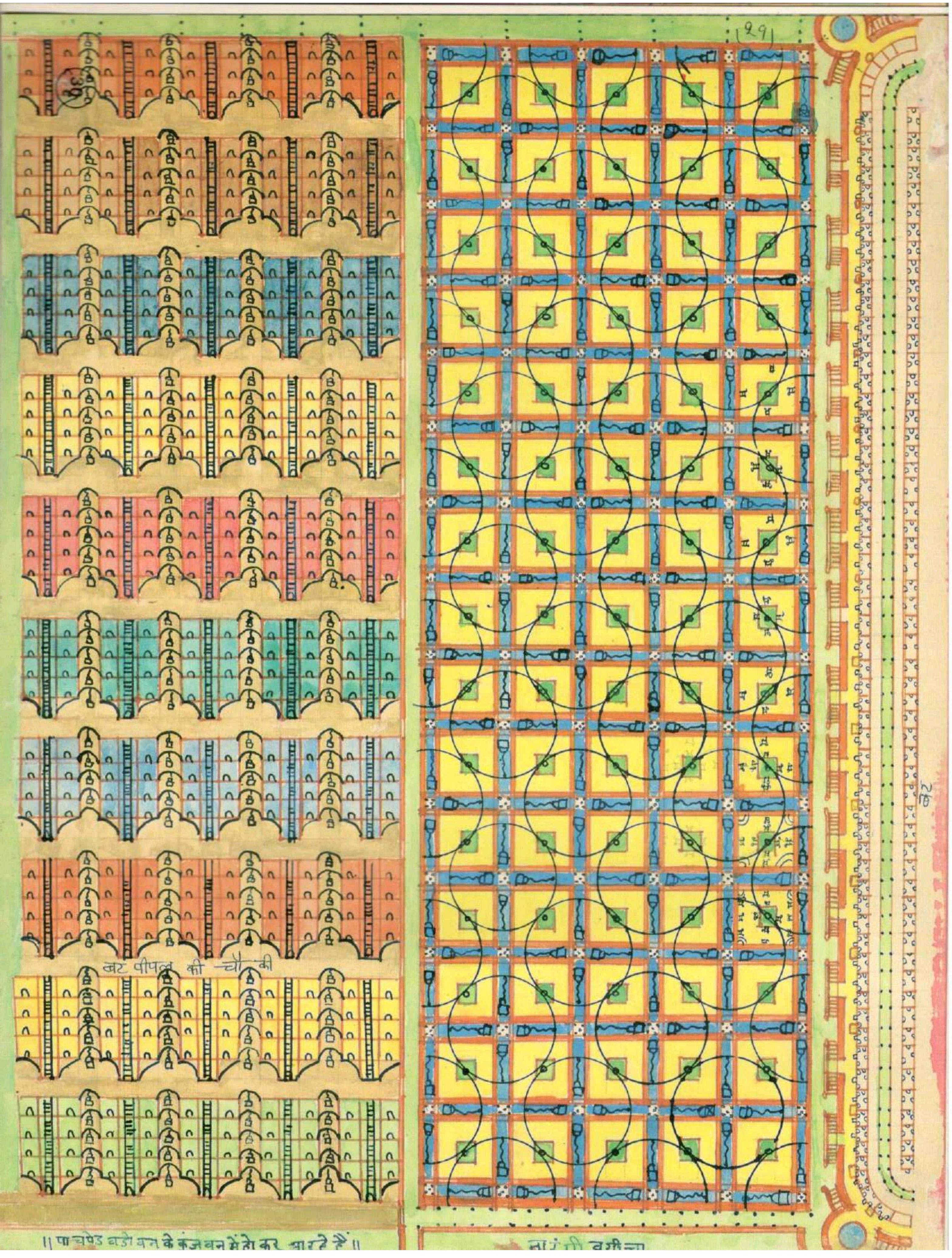
(29)
39
बट पीपल की चौकी
।। पाचपेड बडो वन के कुंजवन में हो कर आ रहे हैं ।।
नारंगी बगीचा

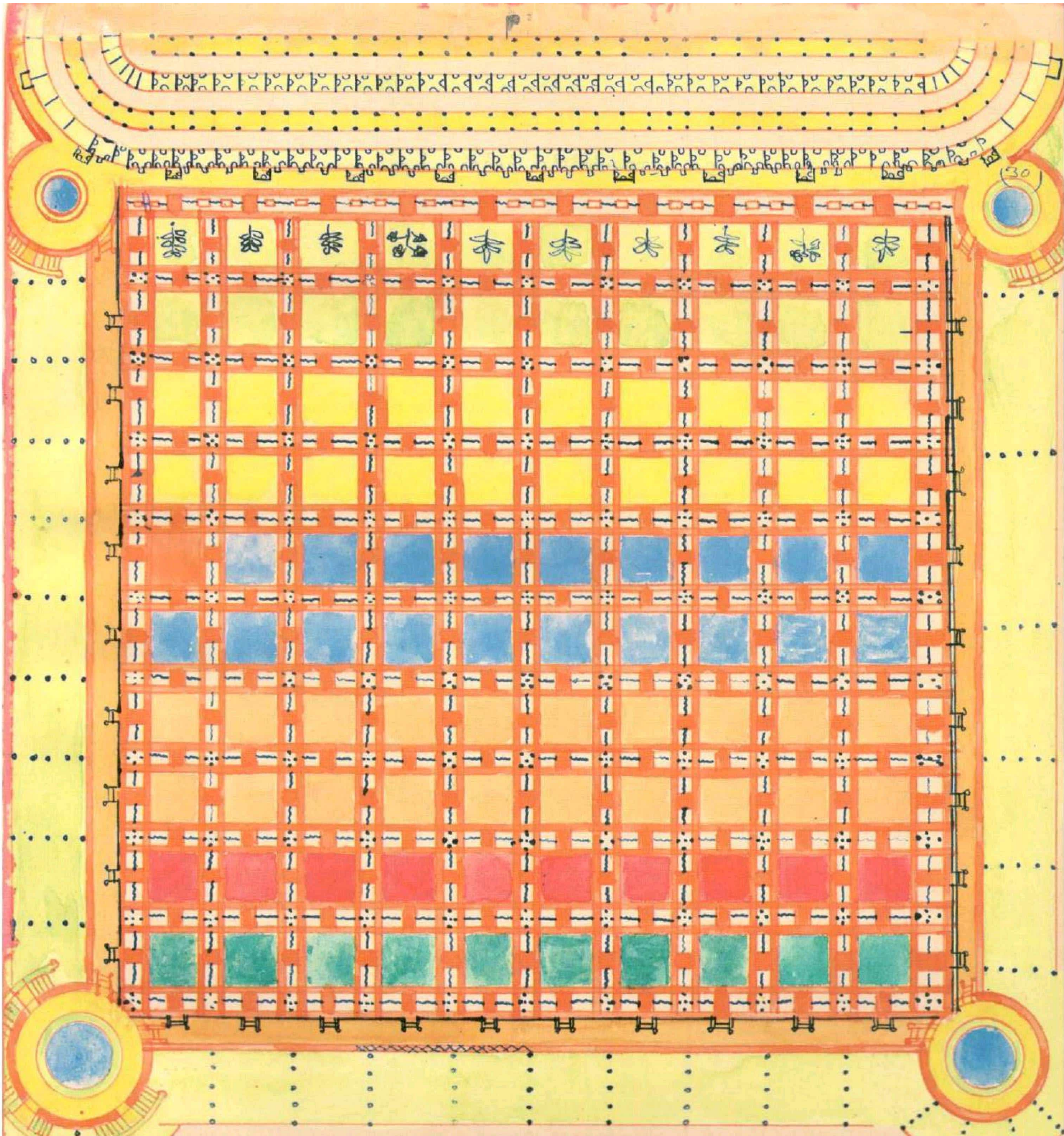

ফুলে বাগ

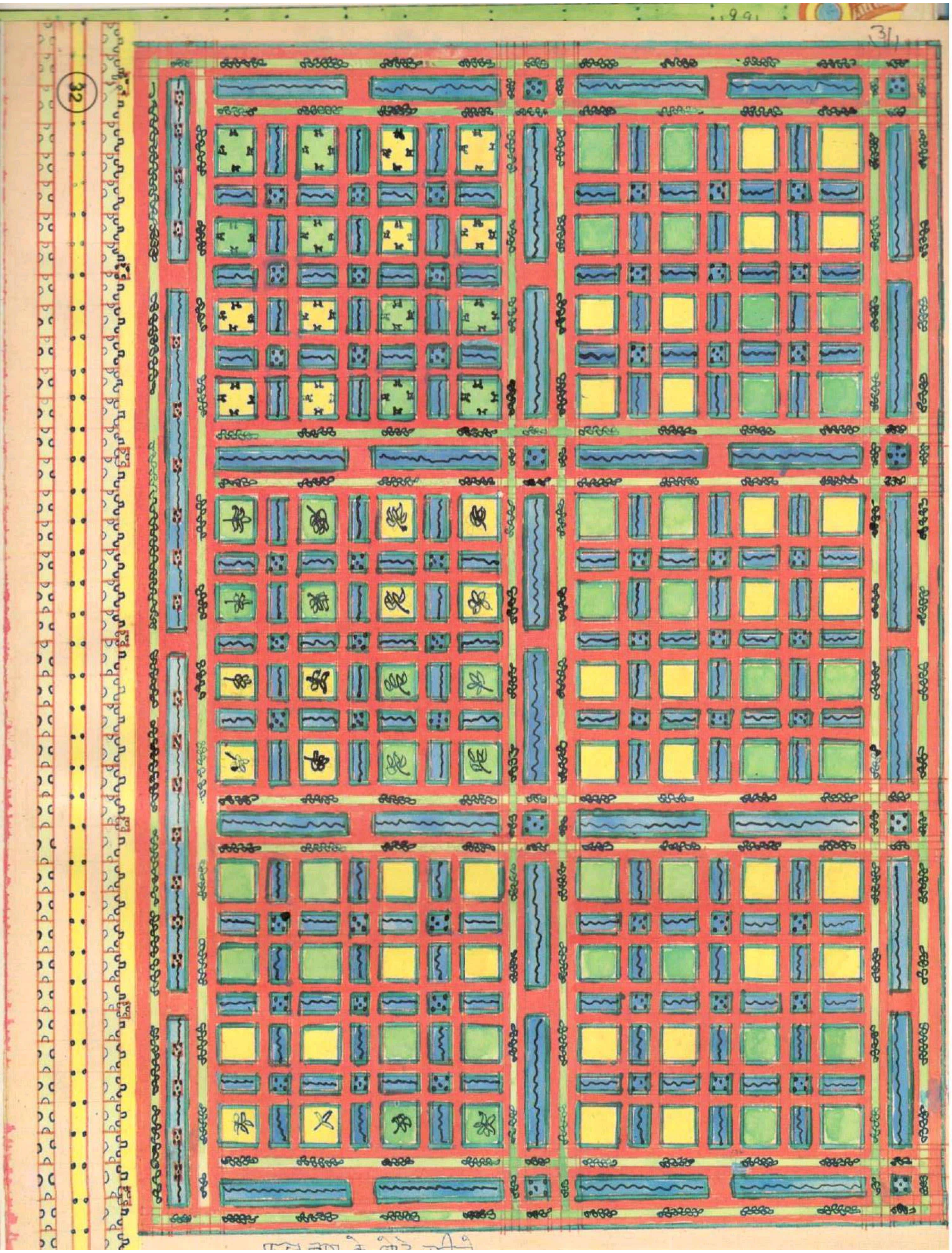

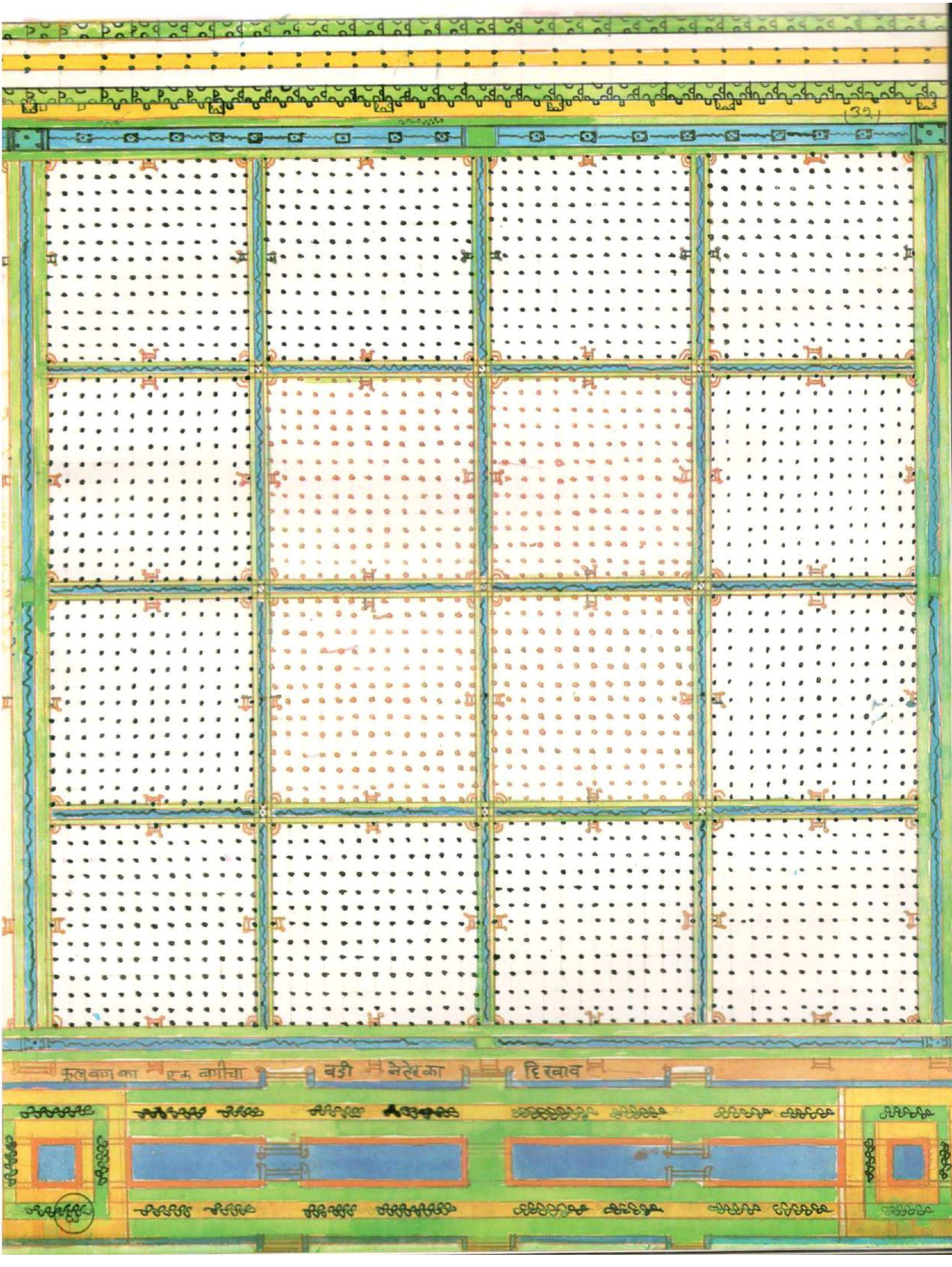
फुलबाग का एक बगीचा बड़ी नेहर का दिखाव

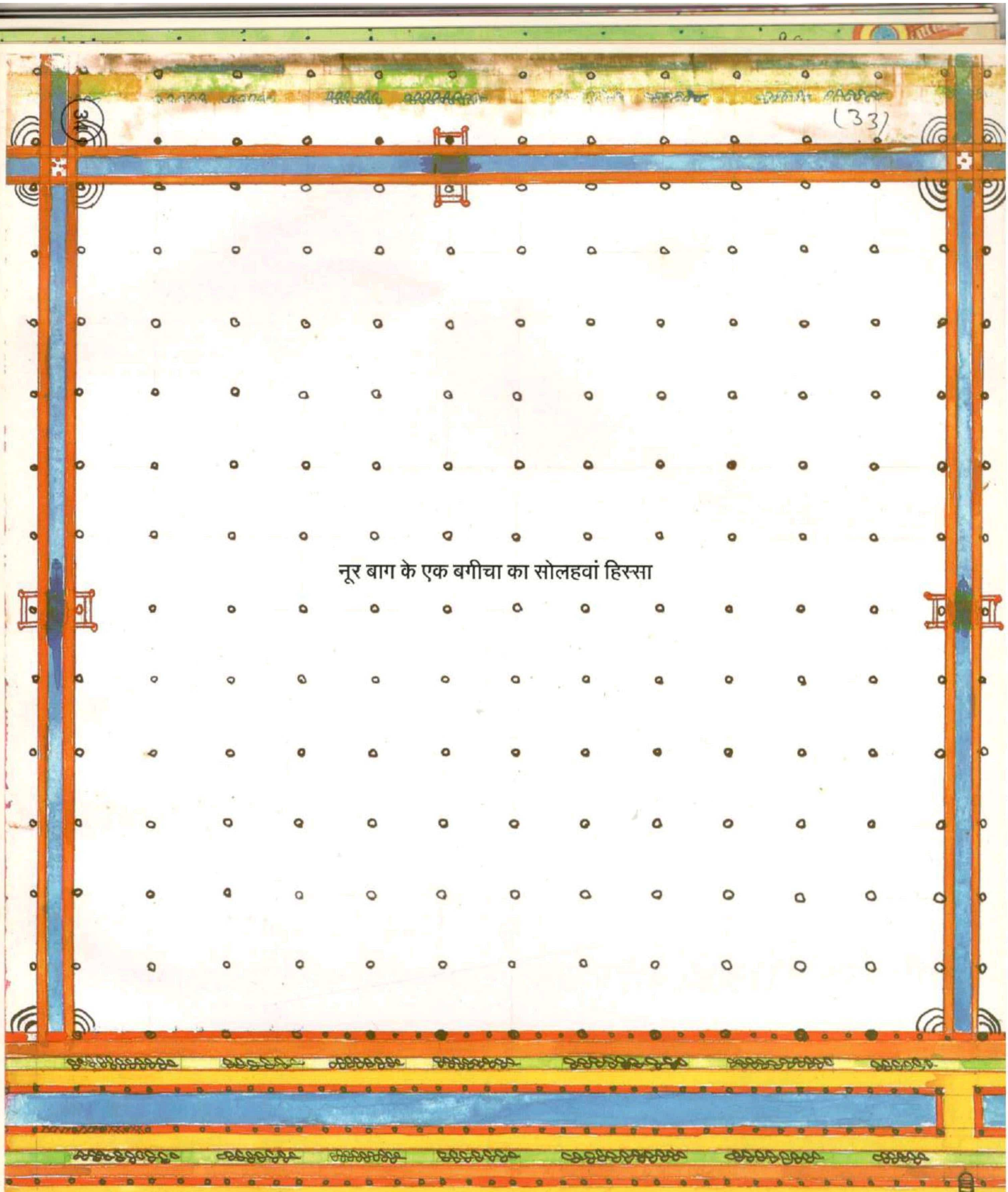

नूर बाग के एक बगीचा का सोलहवां हिस्सा

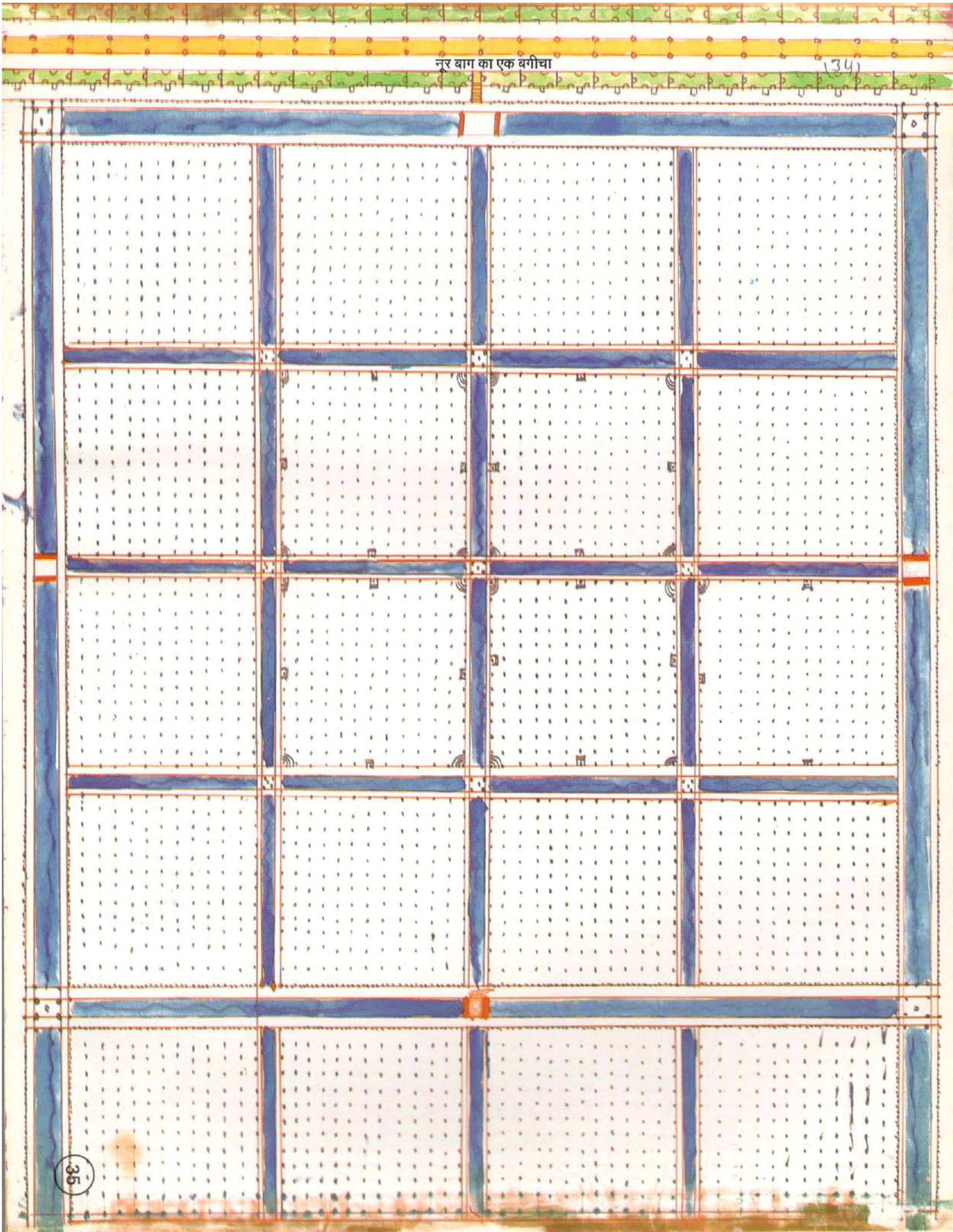

नूर बाग का एक बगीचा

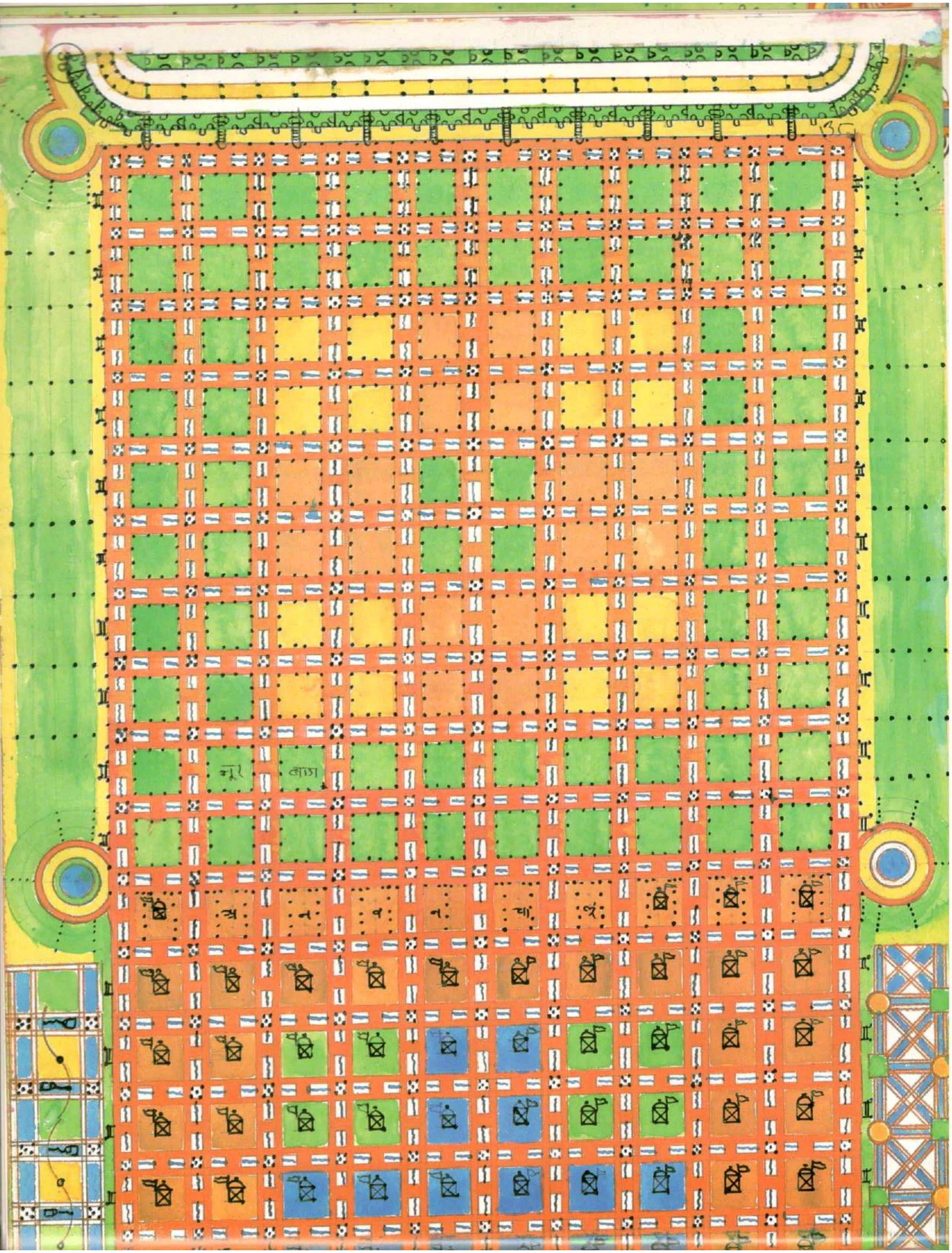

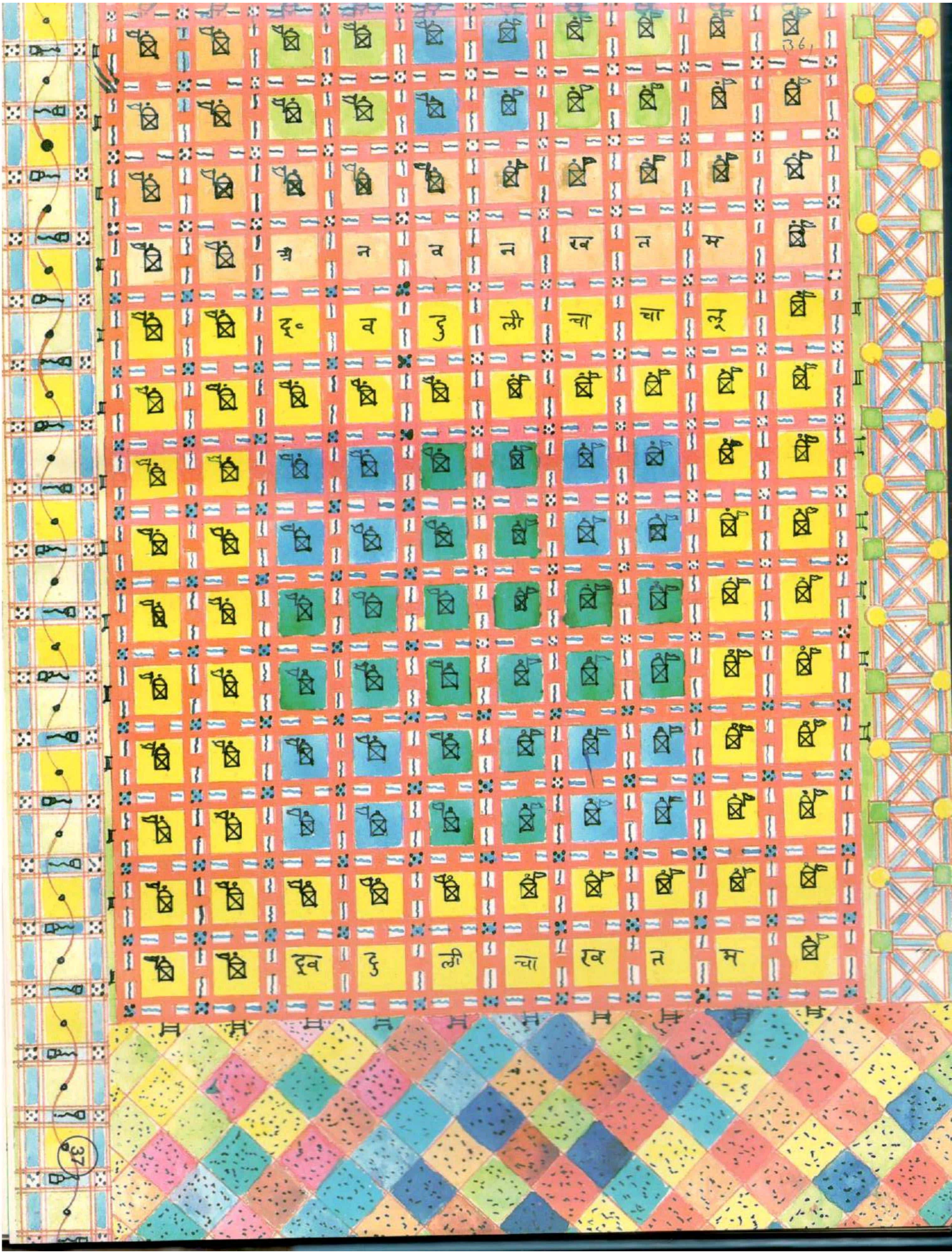

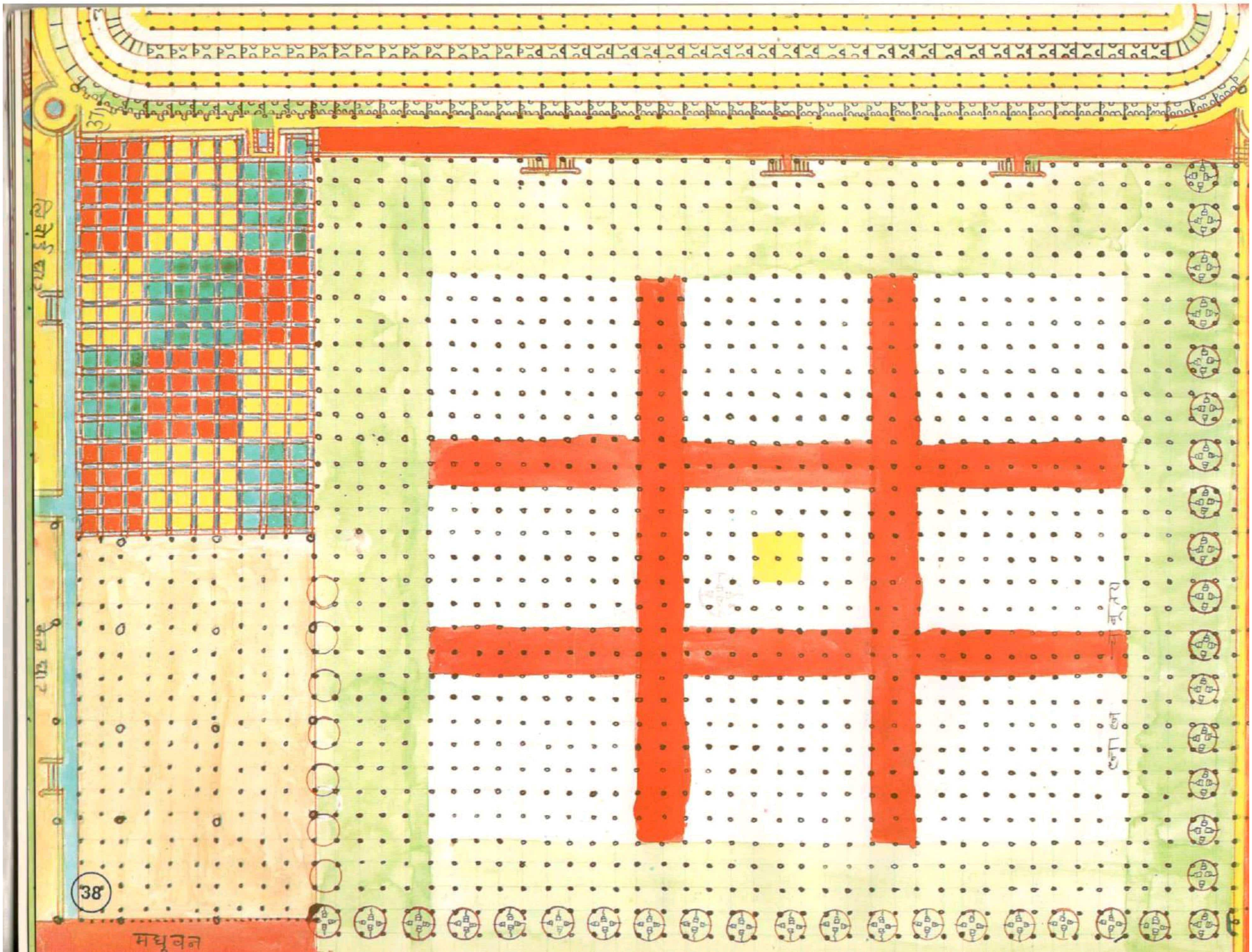
38
37
मधुवन

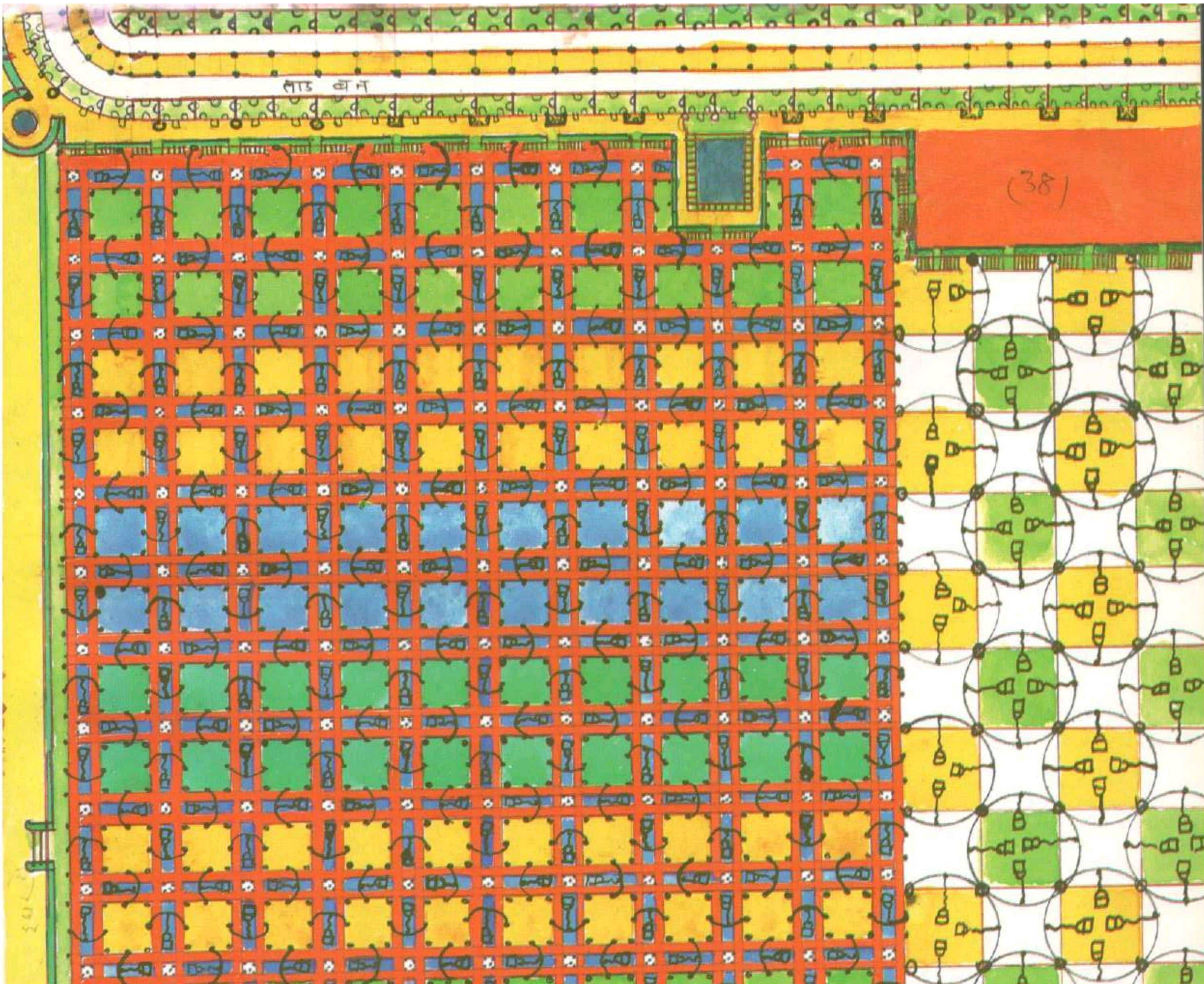
(38)

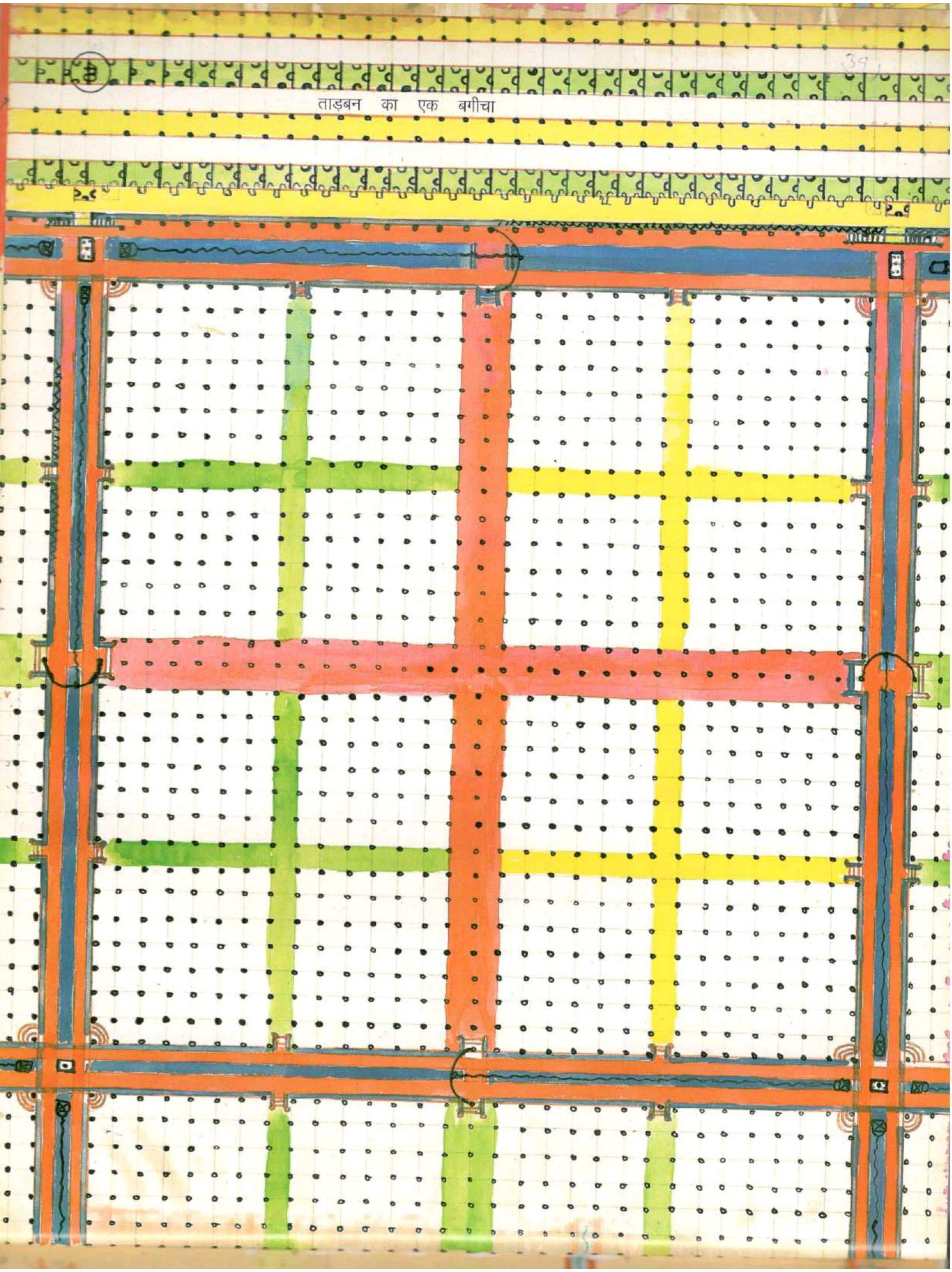
ताड़बन का एक बगीचा

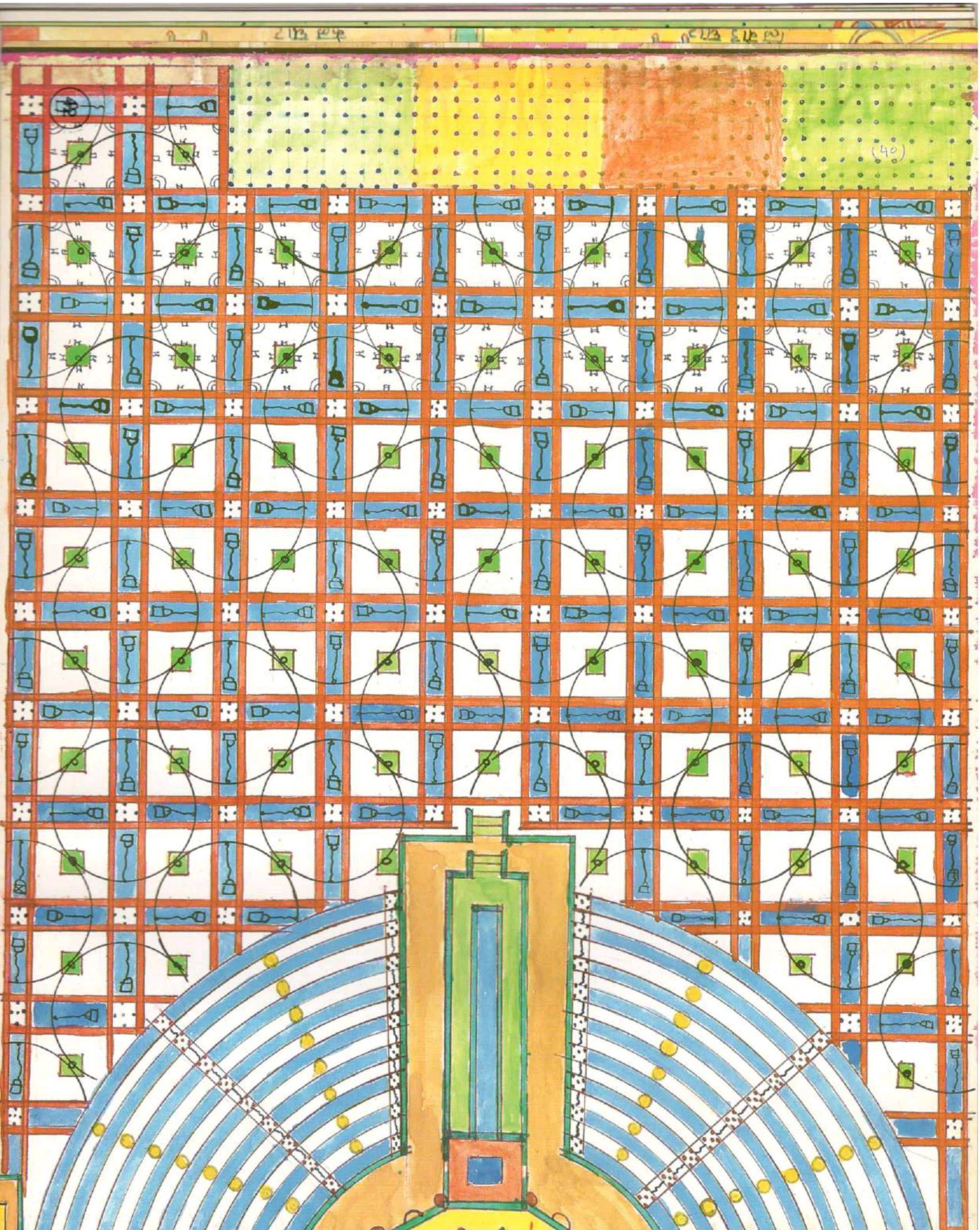
(40)

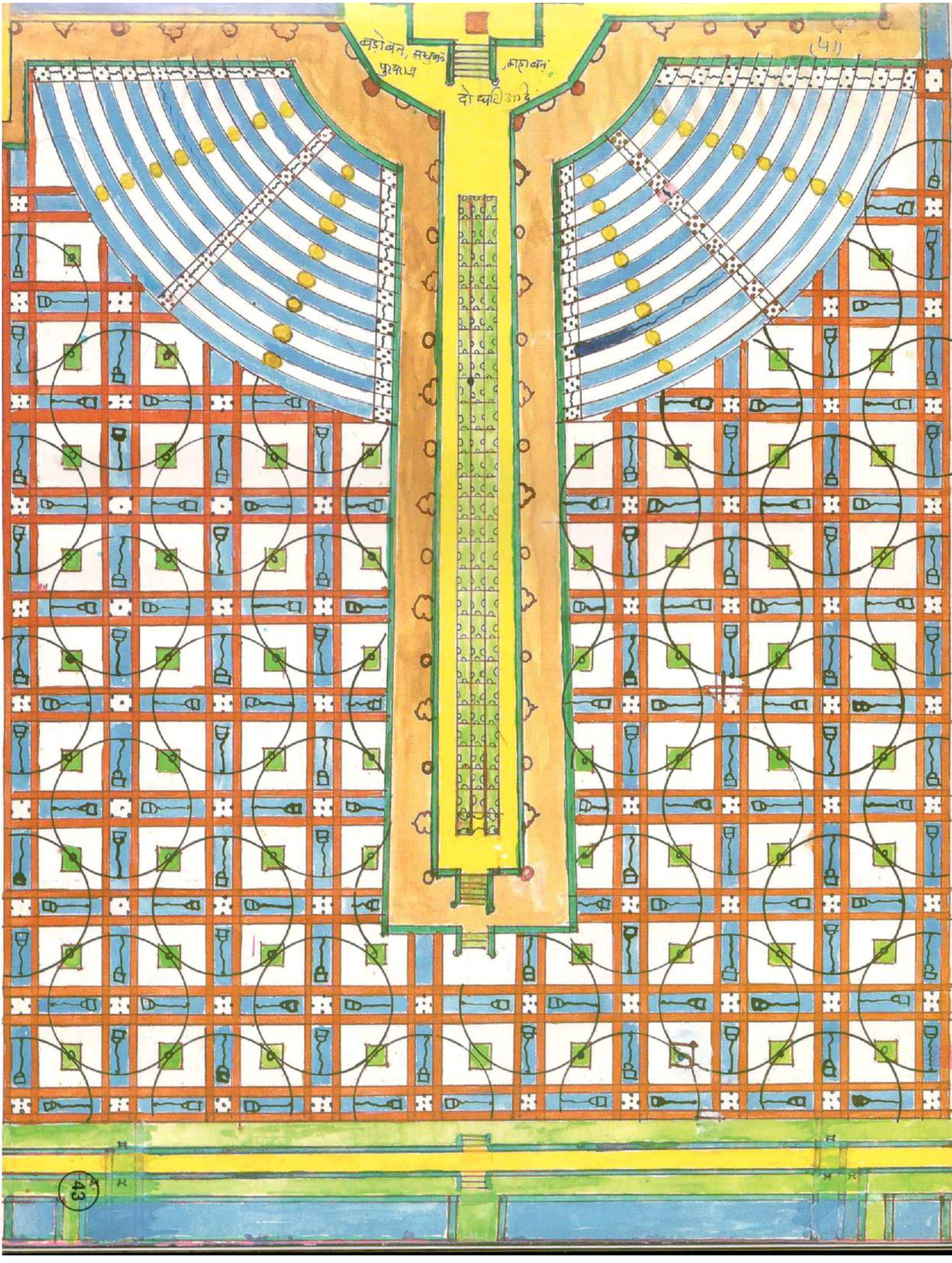
बड़ोबन, मधुबन
महाबन
(५१)

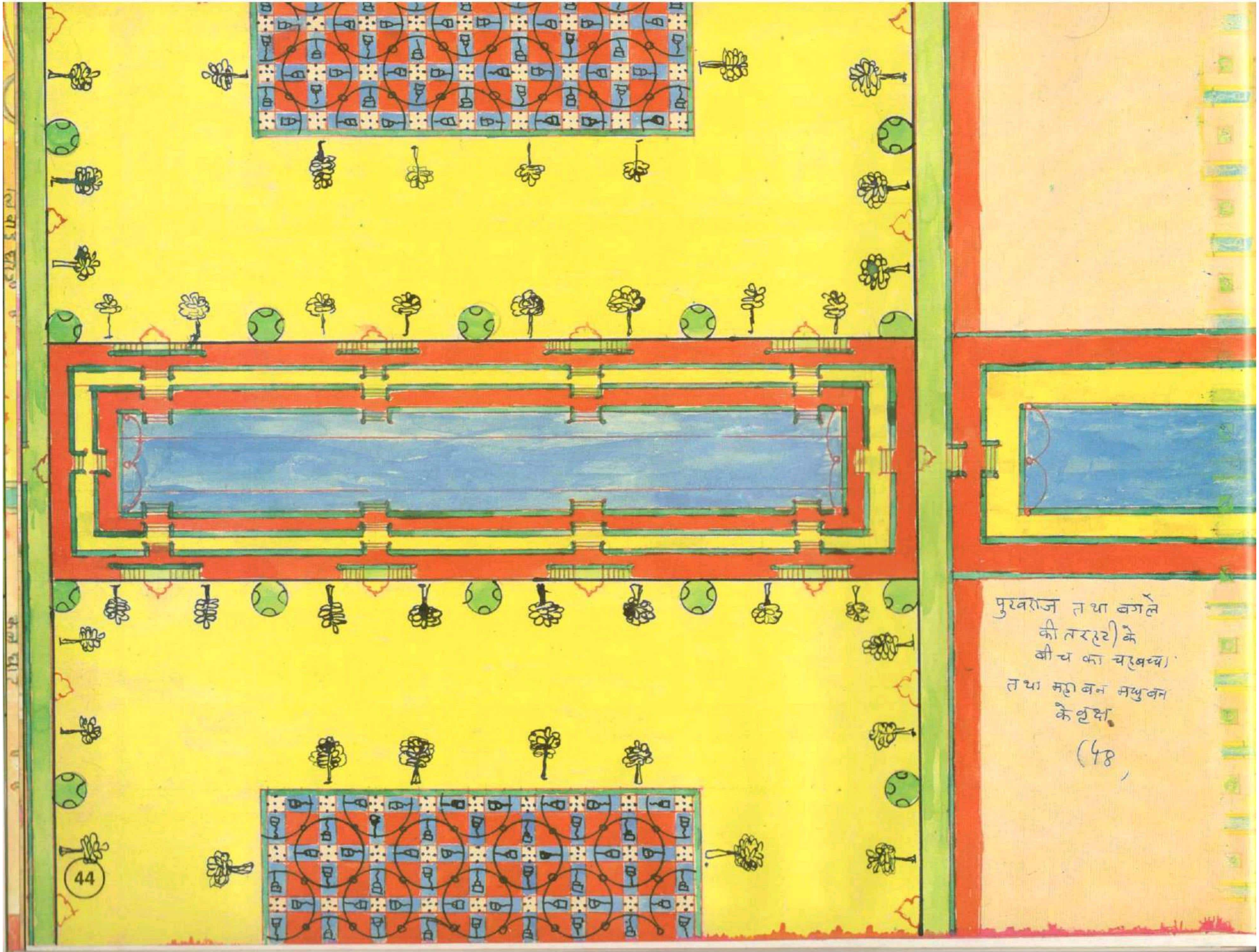
44
पुखराज तथा वगले
की तरहटी के
बीच का चहबच्चा
तथा महावन मधुवन
के वृक्ष.
(48)

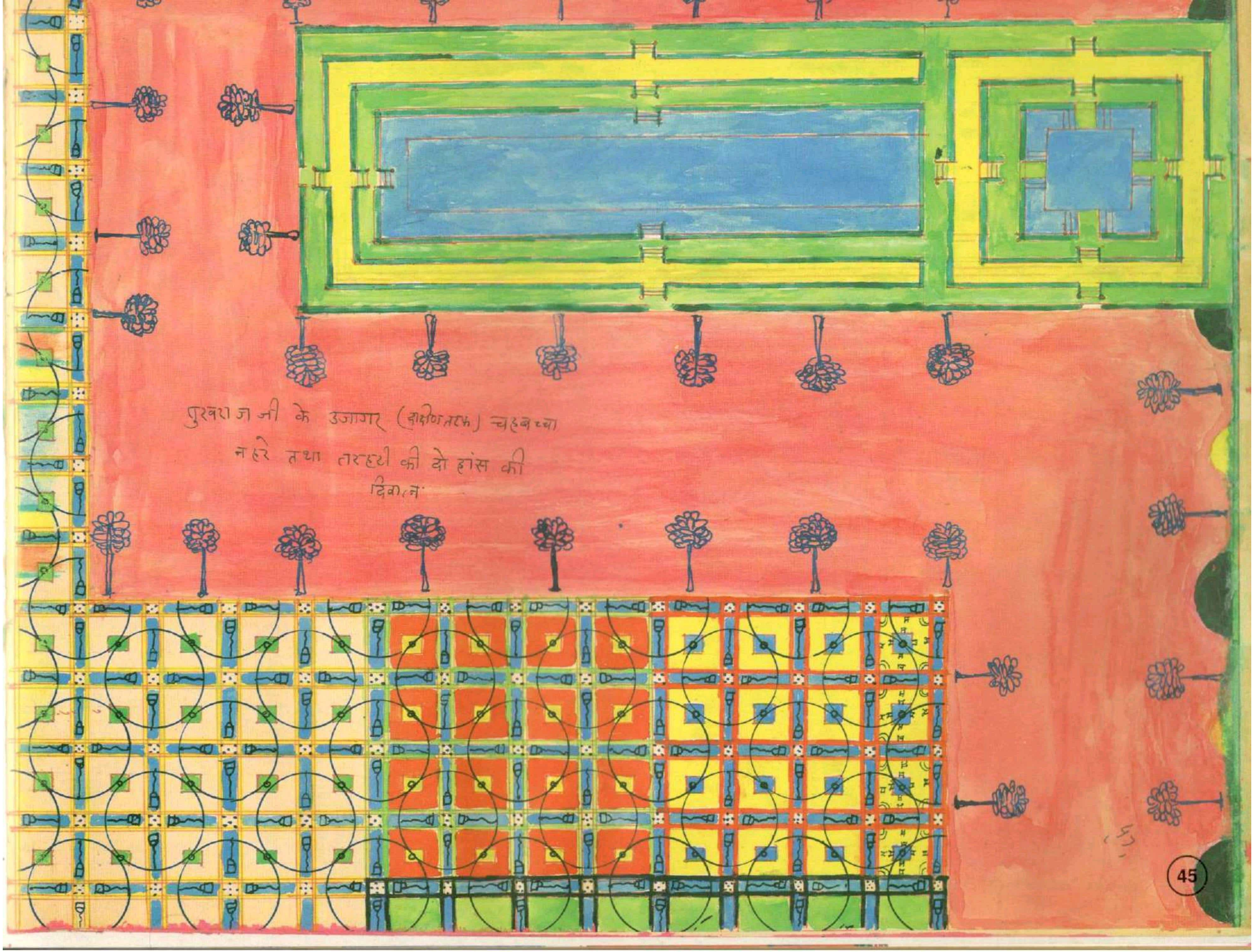
पुरवराज जी के उजागर (दक्षिण तरफ) चहबच्चा
नहरे तथा तरहटी की दो हांस की
दिखावनं

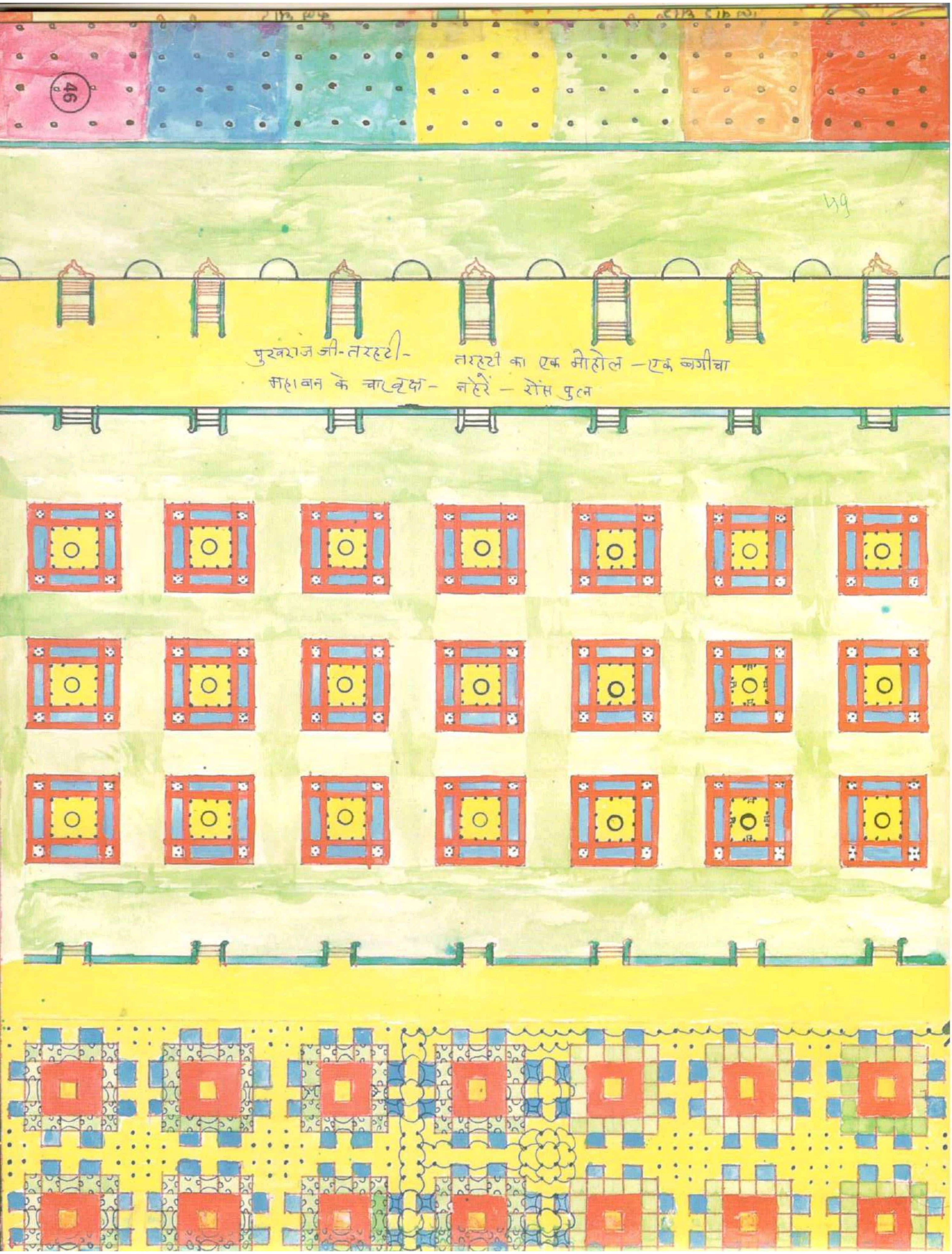
46
49
पुखराज जी-तरहटी- तरहटी का एक मोहोल - एक बगीचा
महावन के चारवृक्ष- नेहरें - रोंस पुल

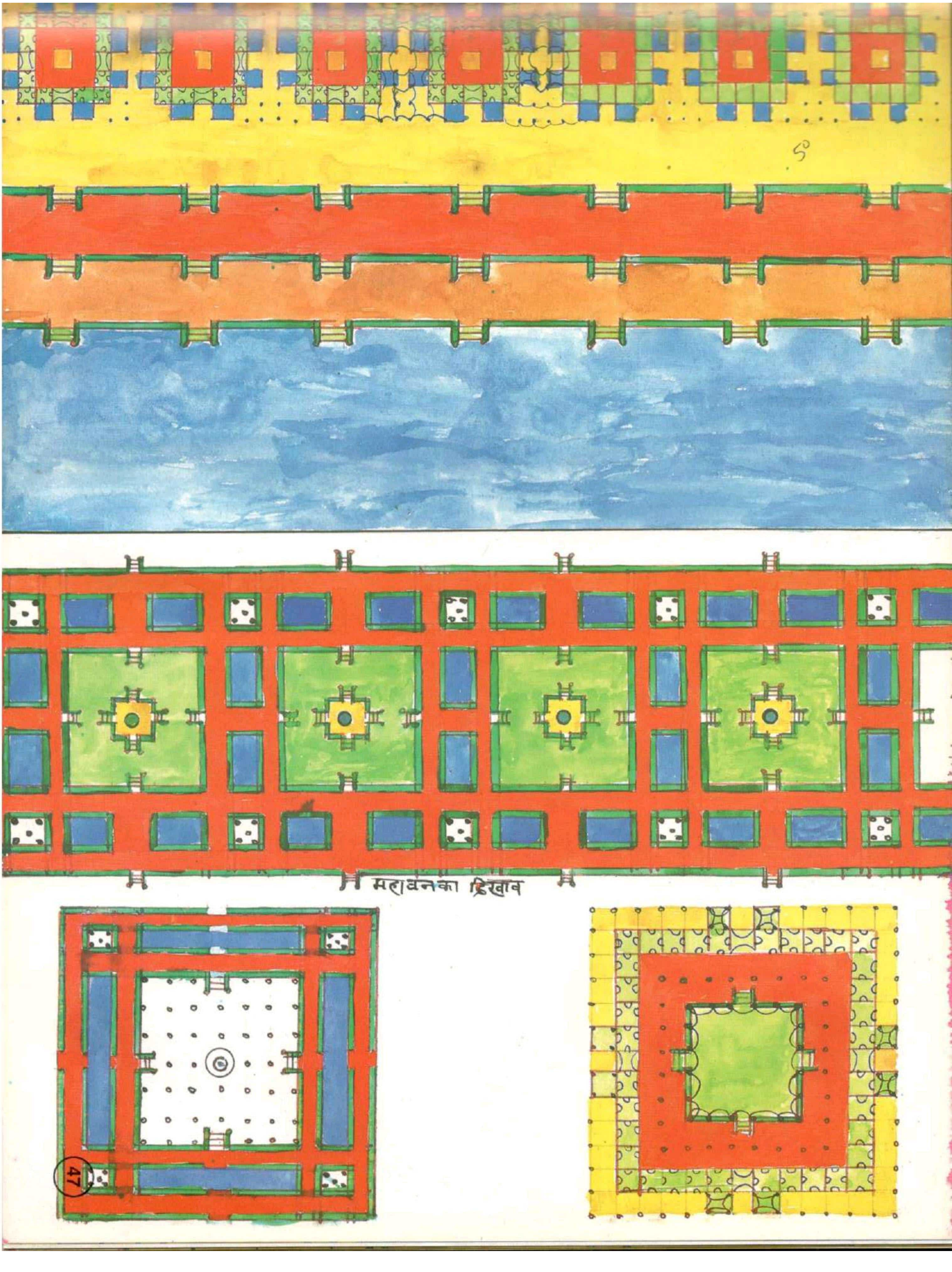
महावंनका दिखाव

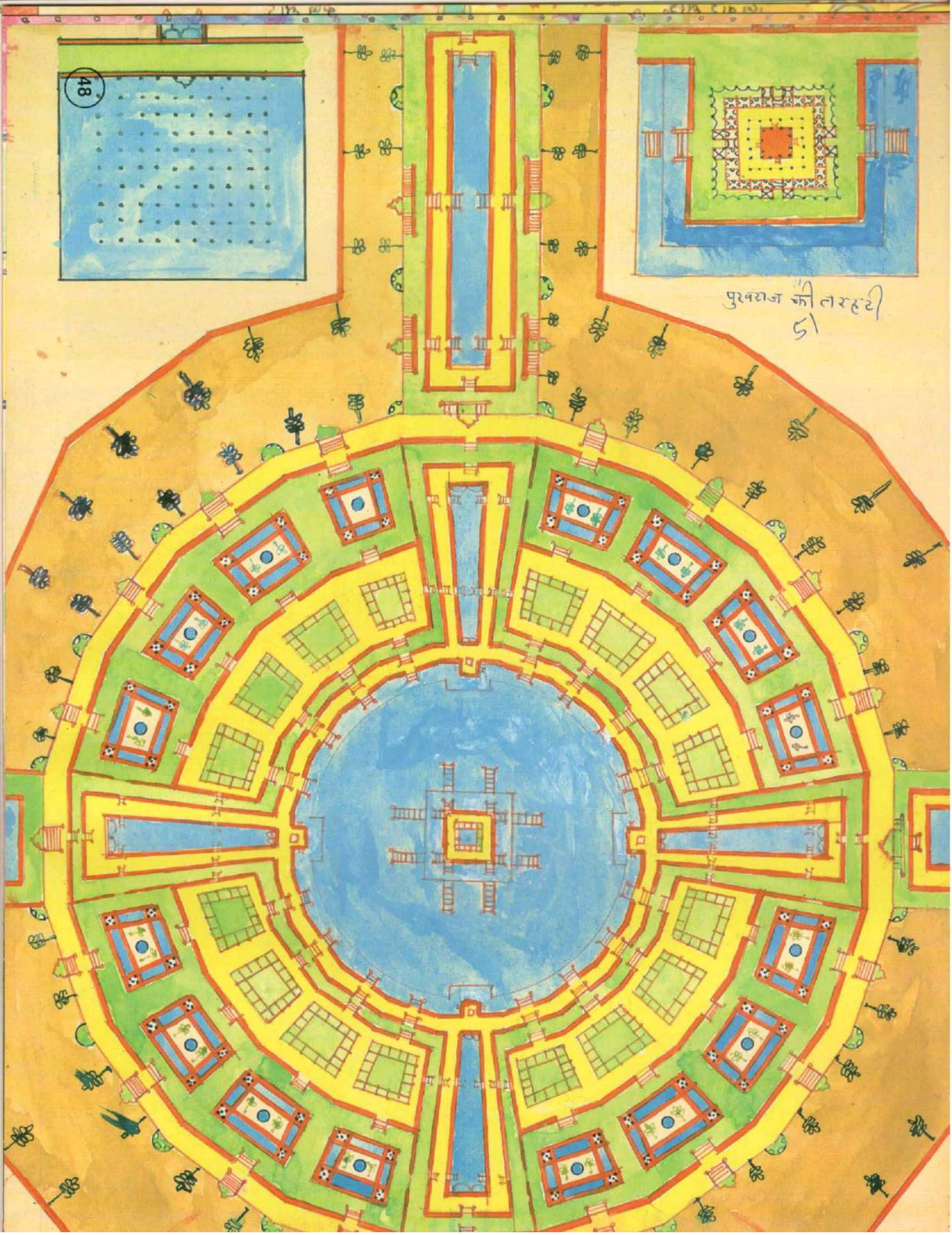
48
पुखराज की तरहटी
51

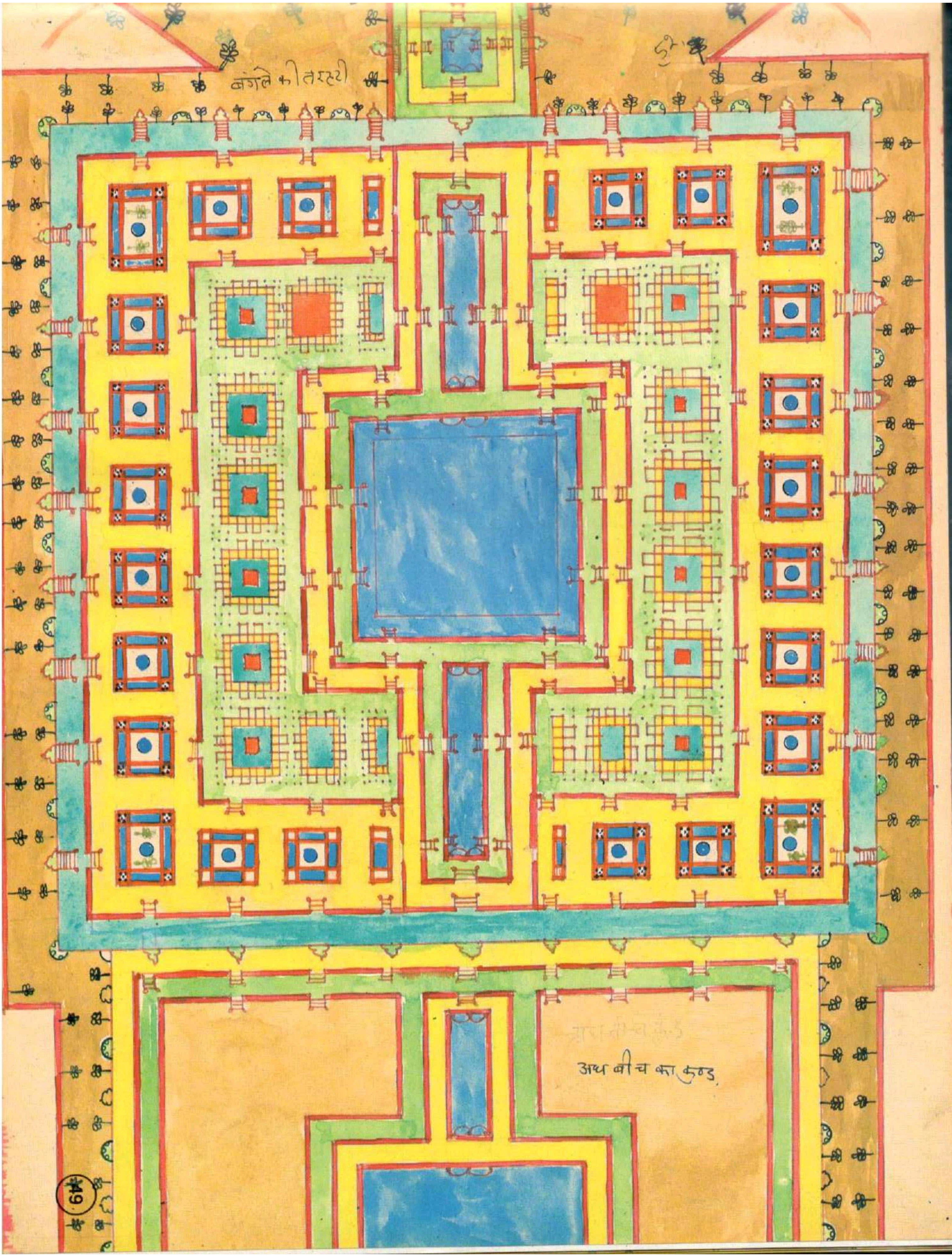
बंगले की तरहदी
अथ बीच का कुण्ड,

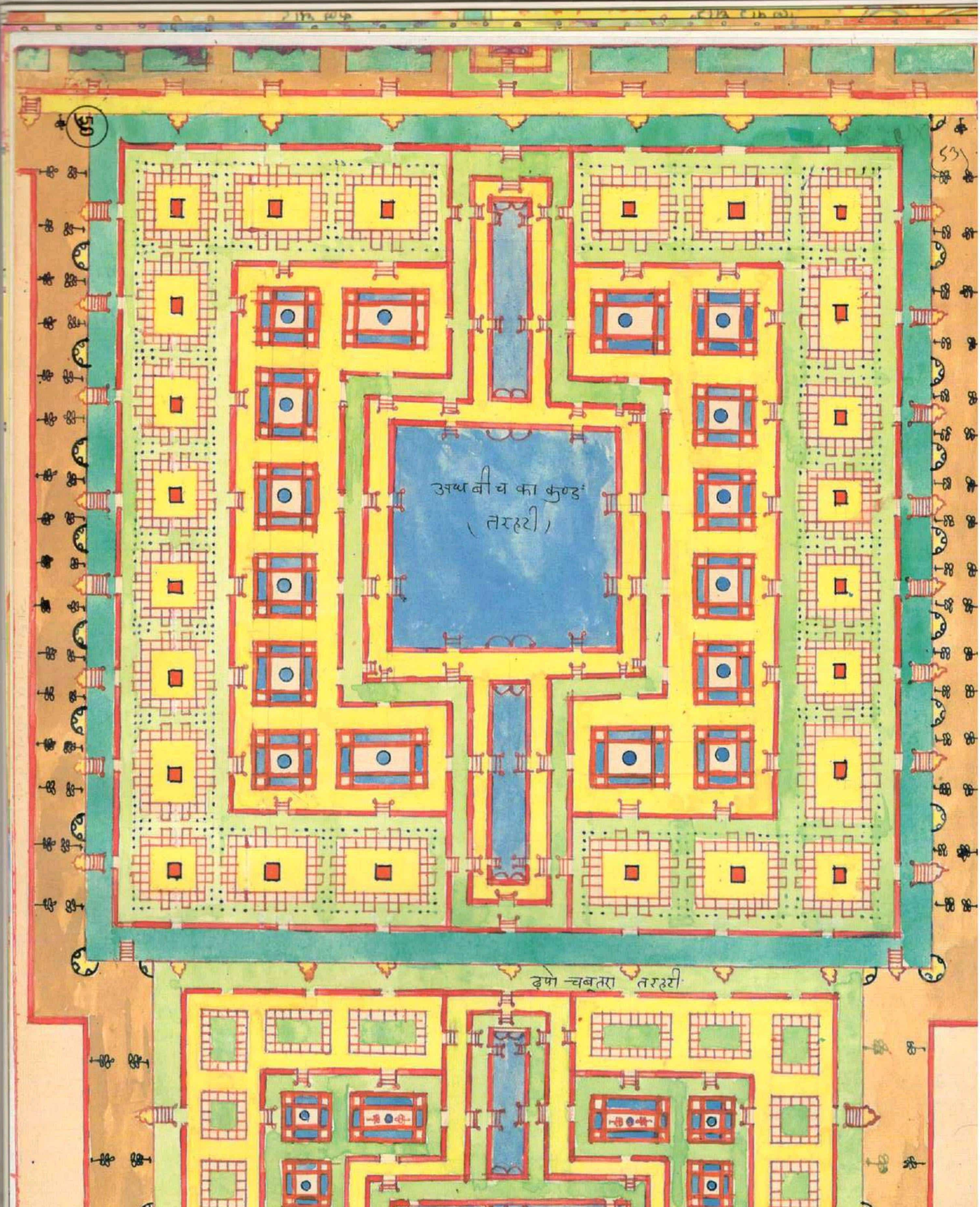
50
53
उपध्य बीच का कुण्ड
(तरहरी)
ढपो चबूतरा तरहरी
ढपो चबूतरा

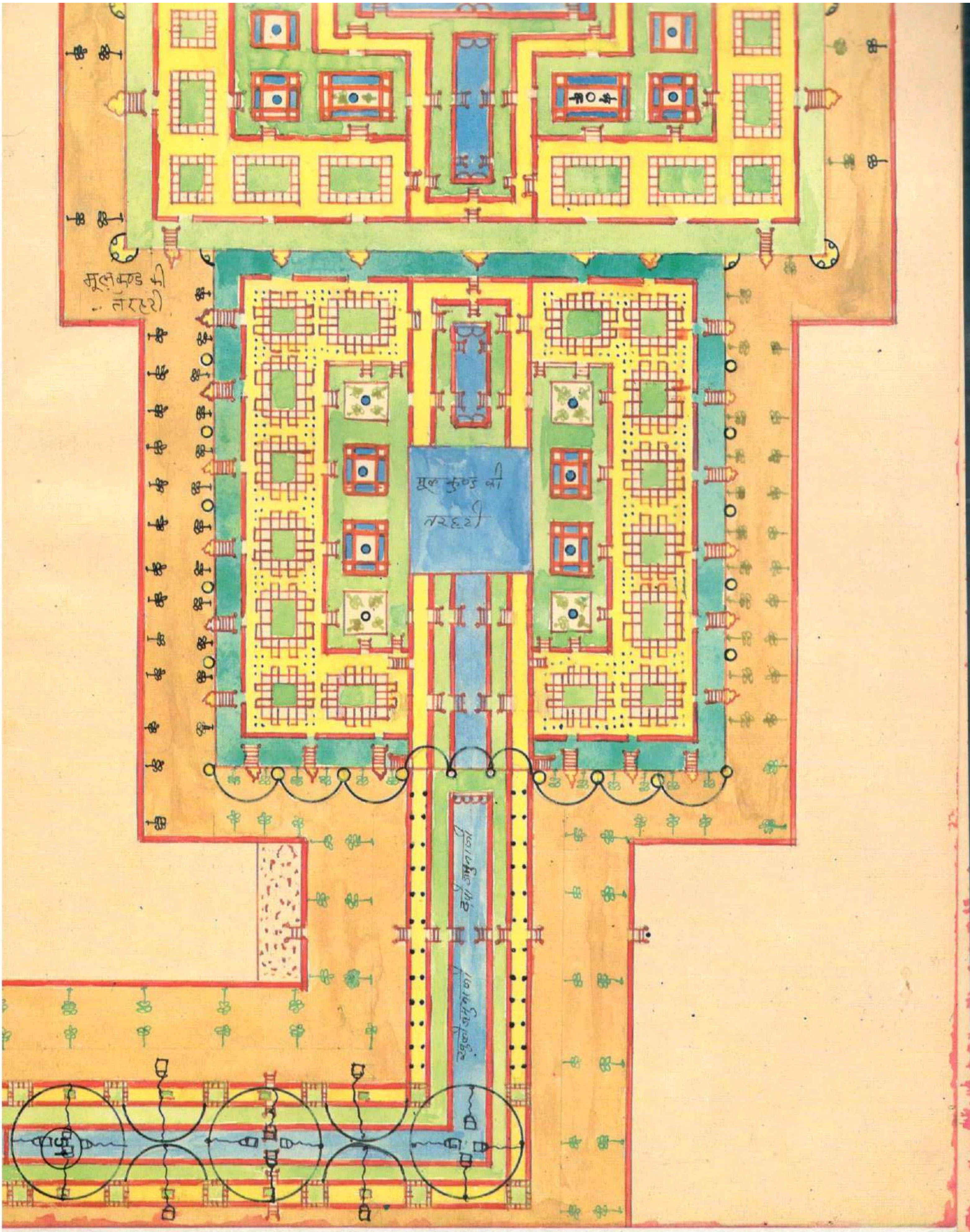
मूलकुण्ड की
तरहटी
मूल कुण्ड की
तरहटी

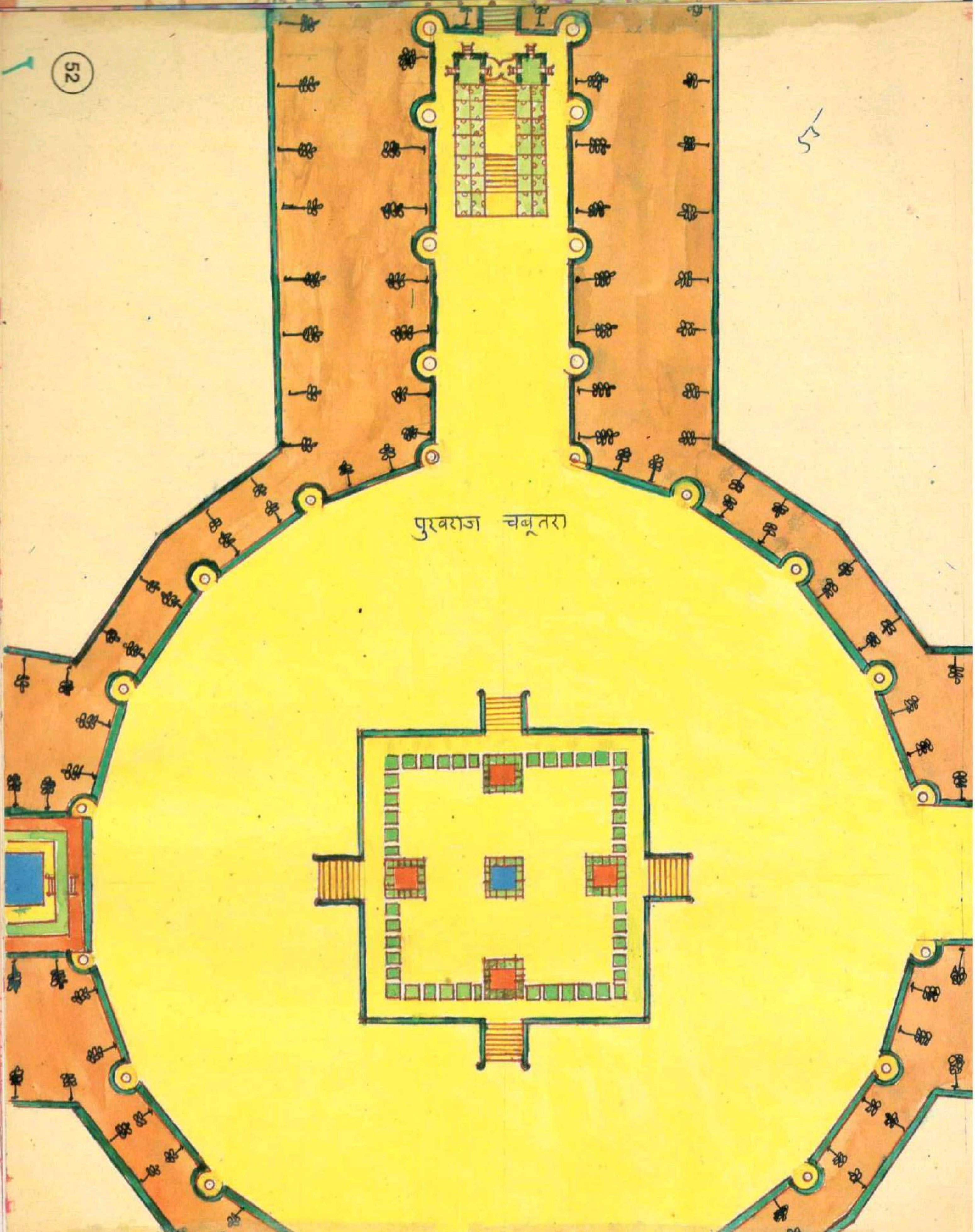
पुखराज चबूतरा

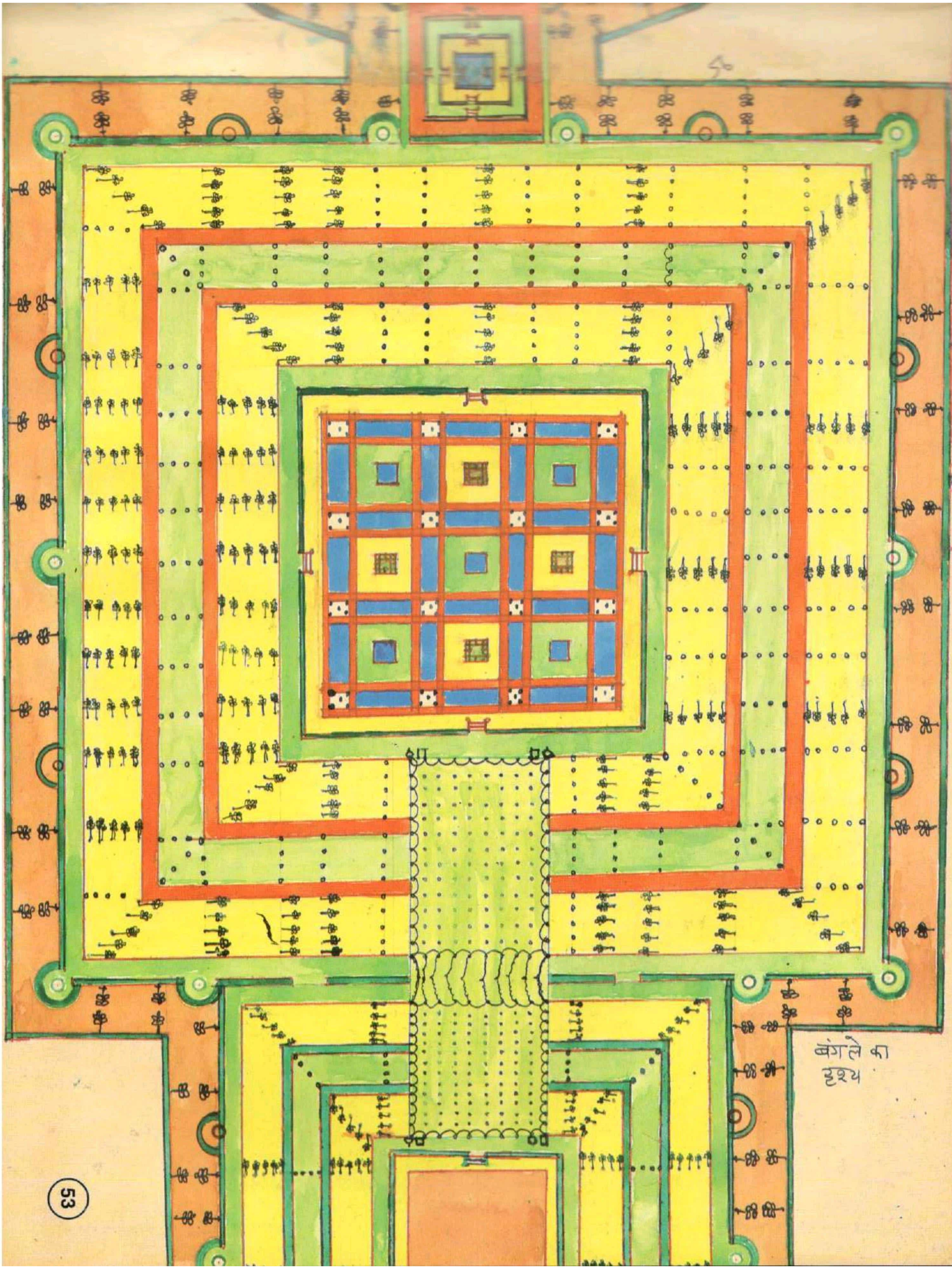
बंगले का
दृश्य

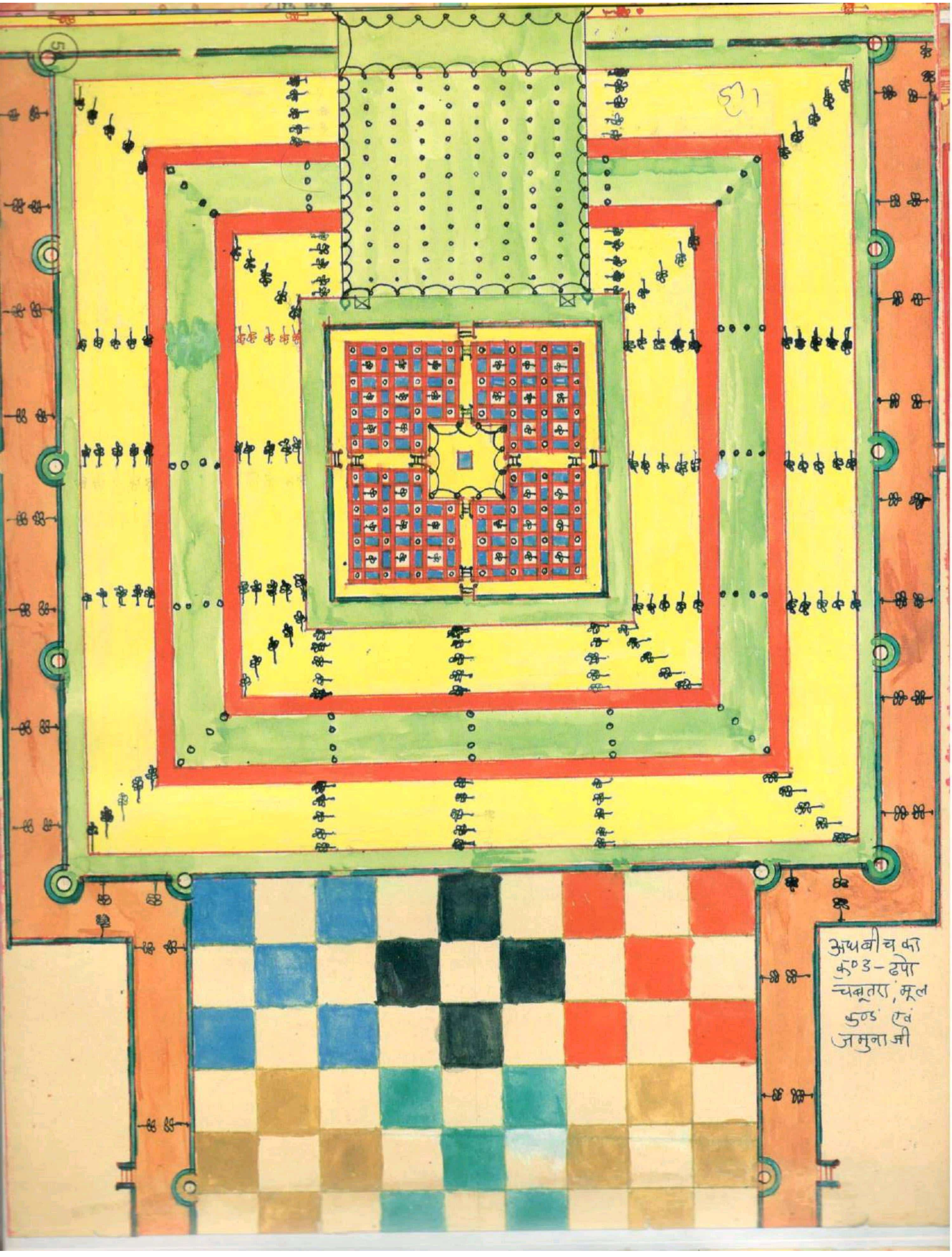
अथ बीच का कुण्ड-ढपा चबूतरा, मूल कुण्ड एवं जमुनाजी

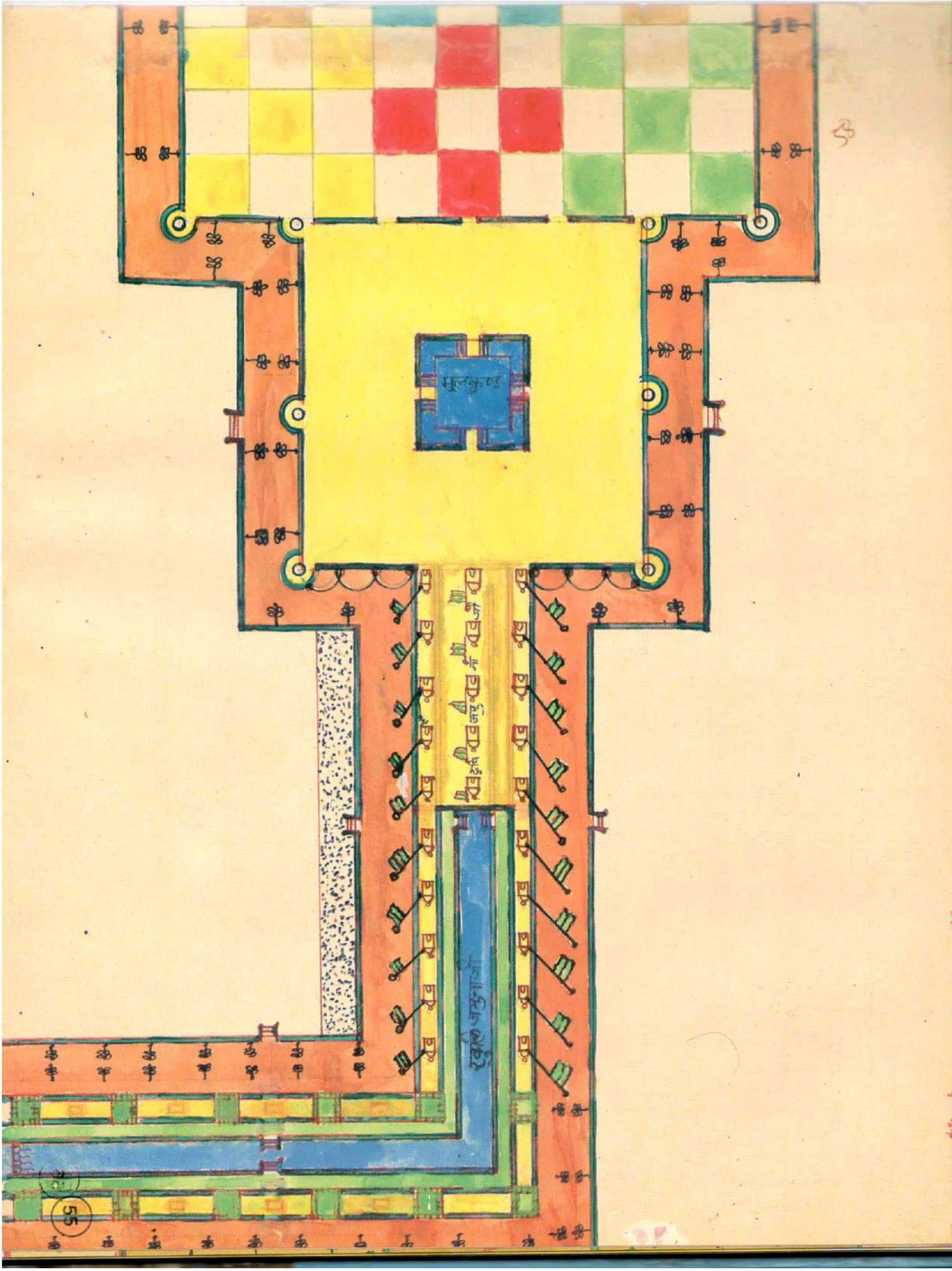

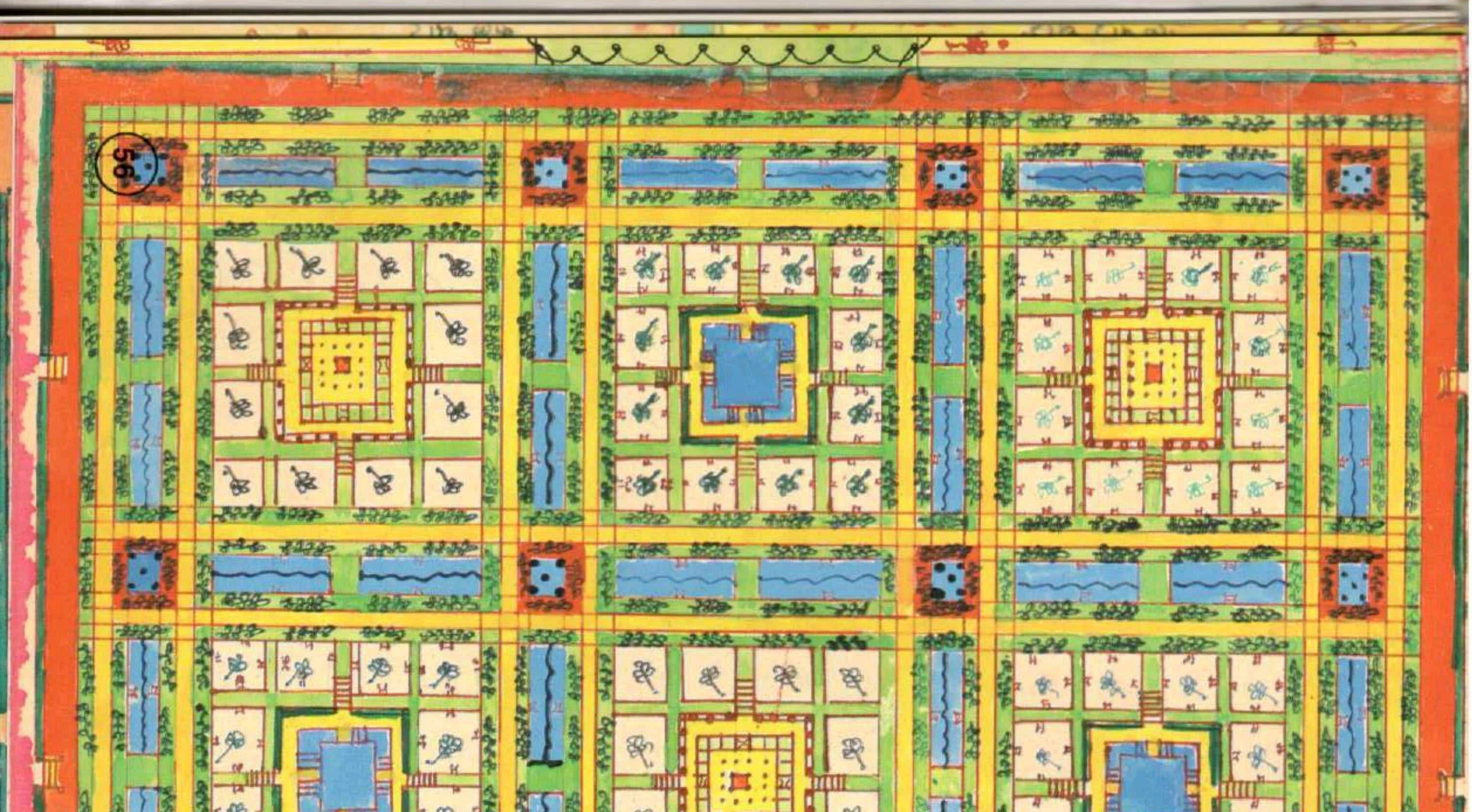

बंगले - तथा चहबचे

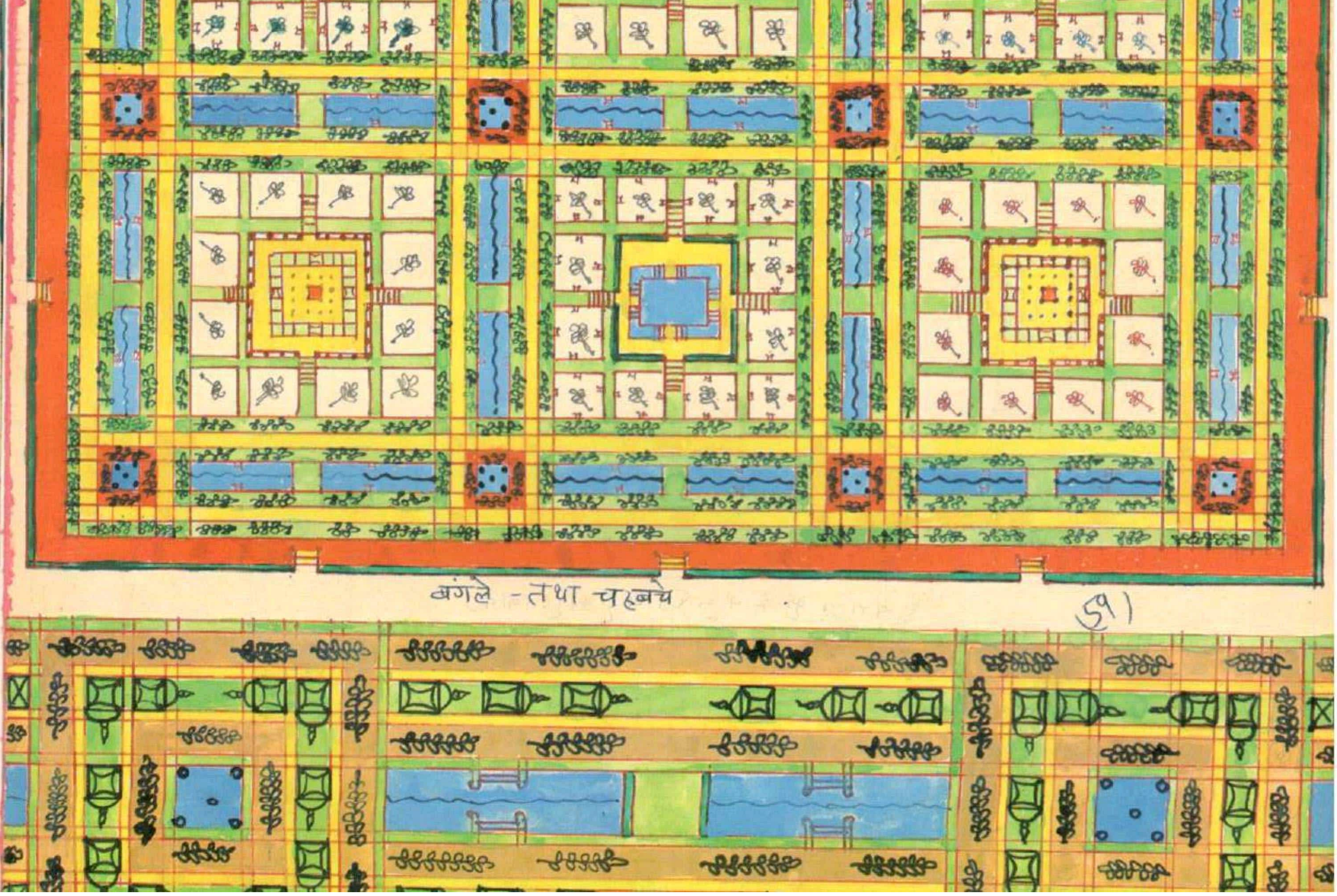

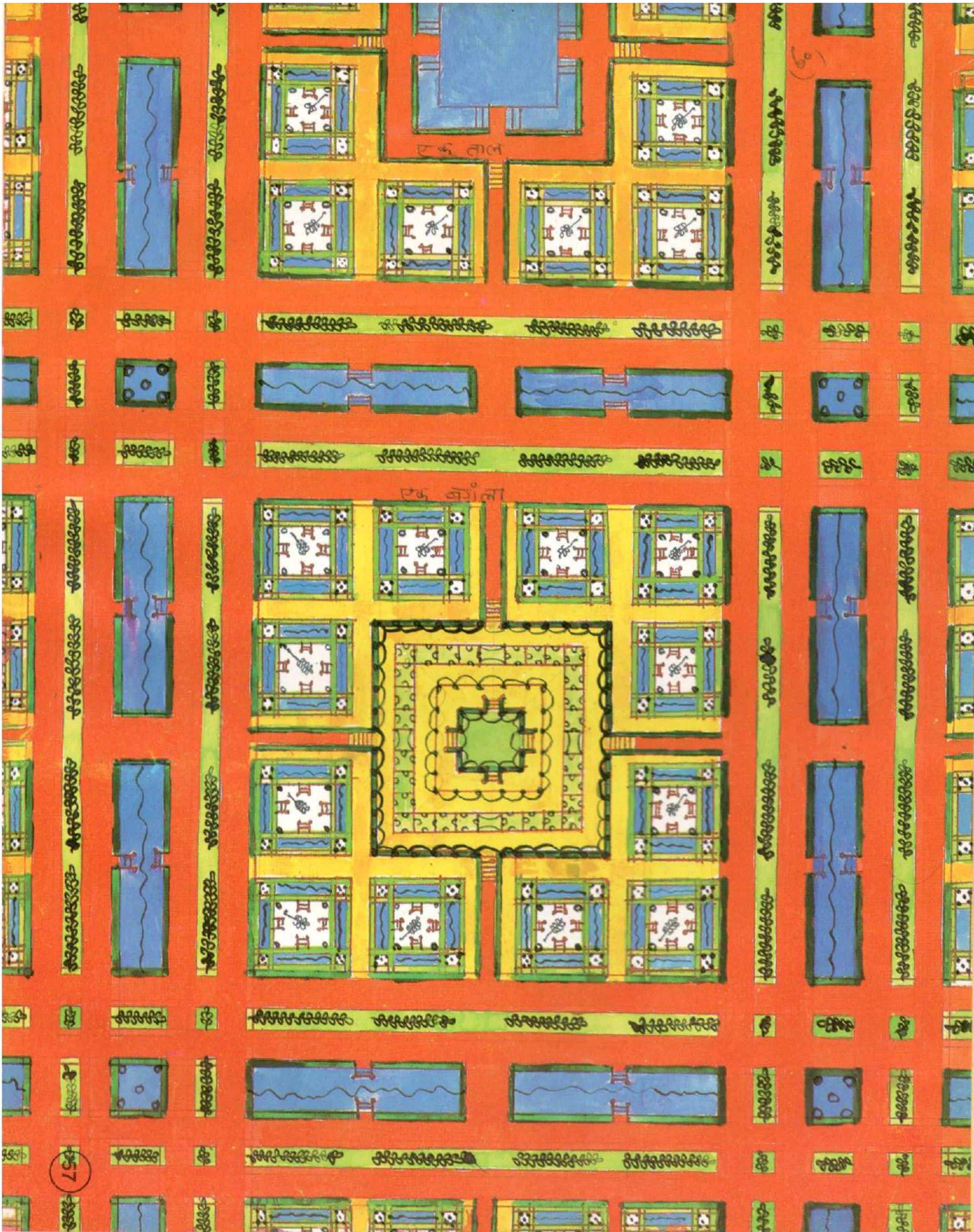
এক তালে
এক বাংলা

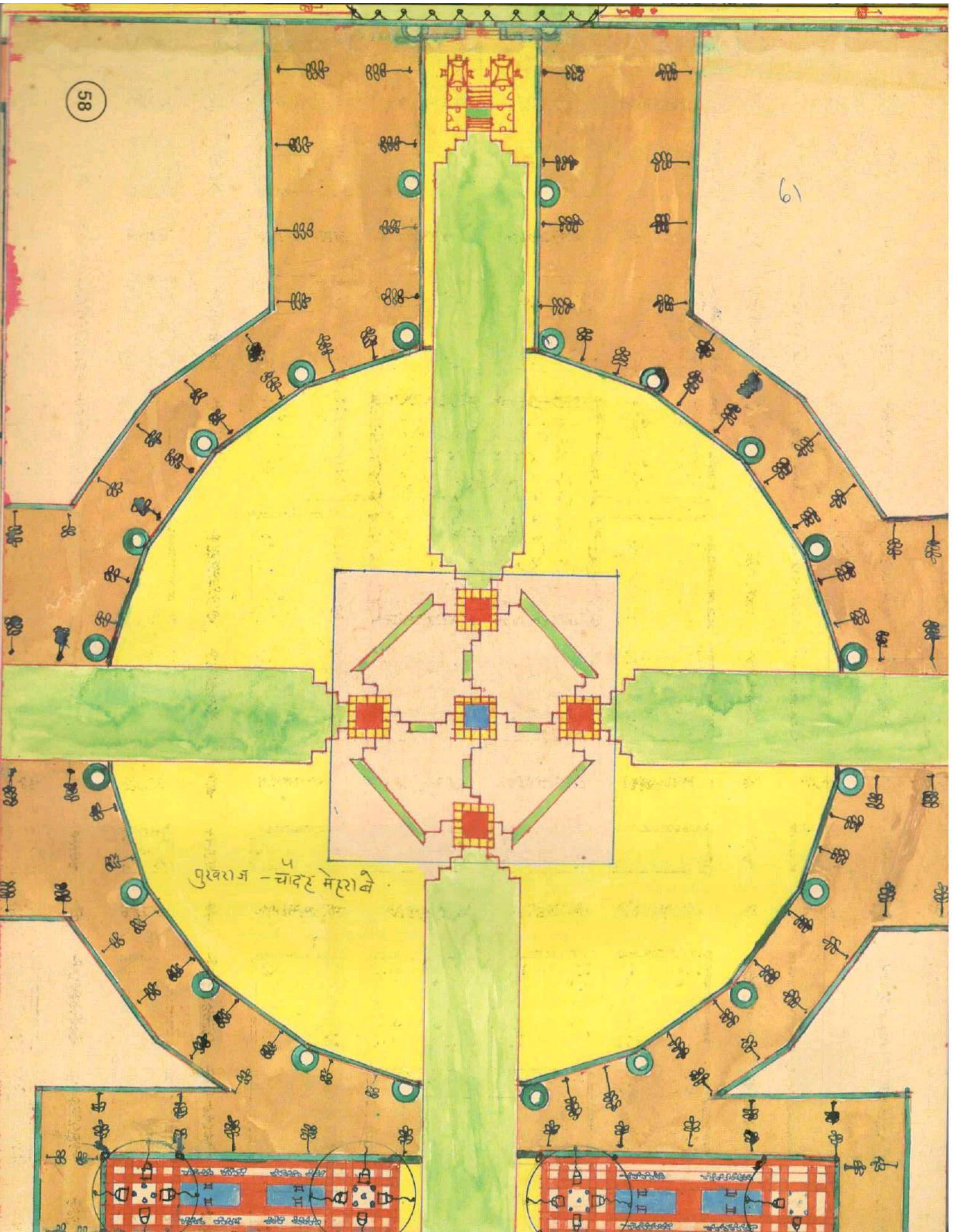
58
61
५
पुखराज - चादर मेहराबे

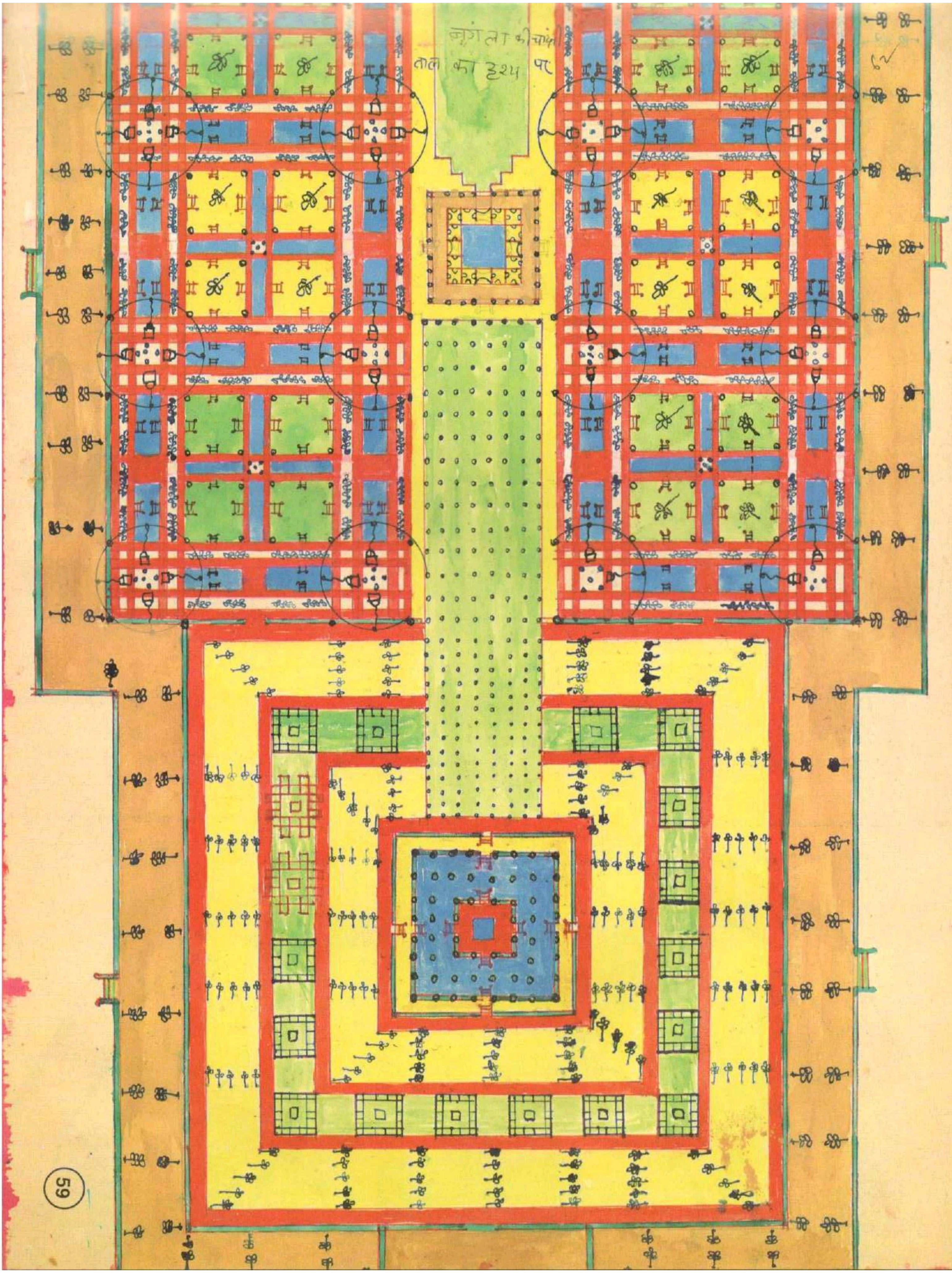
बंगला की चांदनी
ताल का दृश्य पर

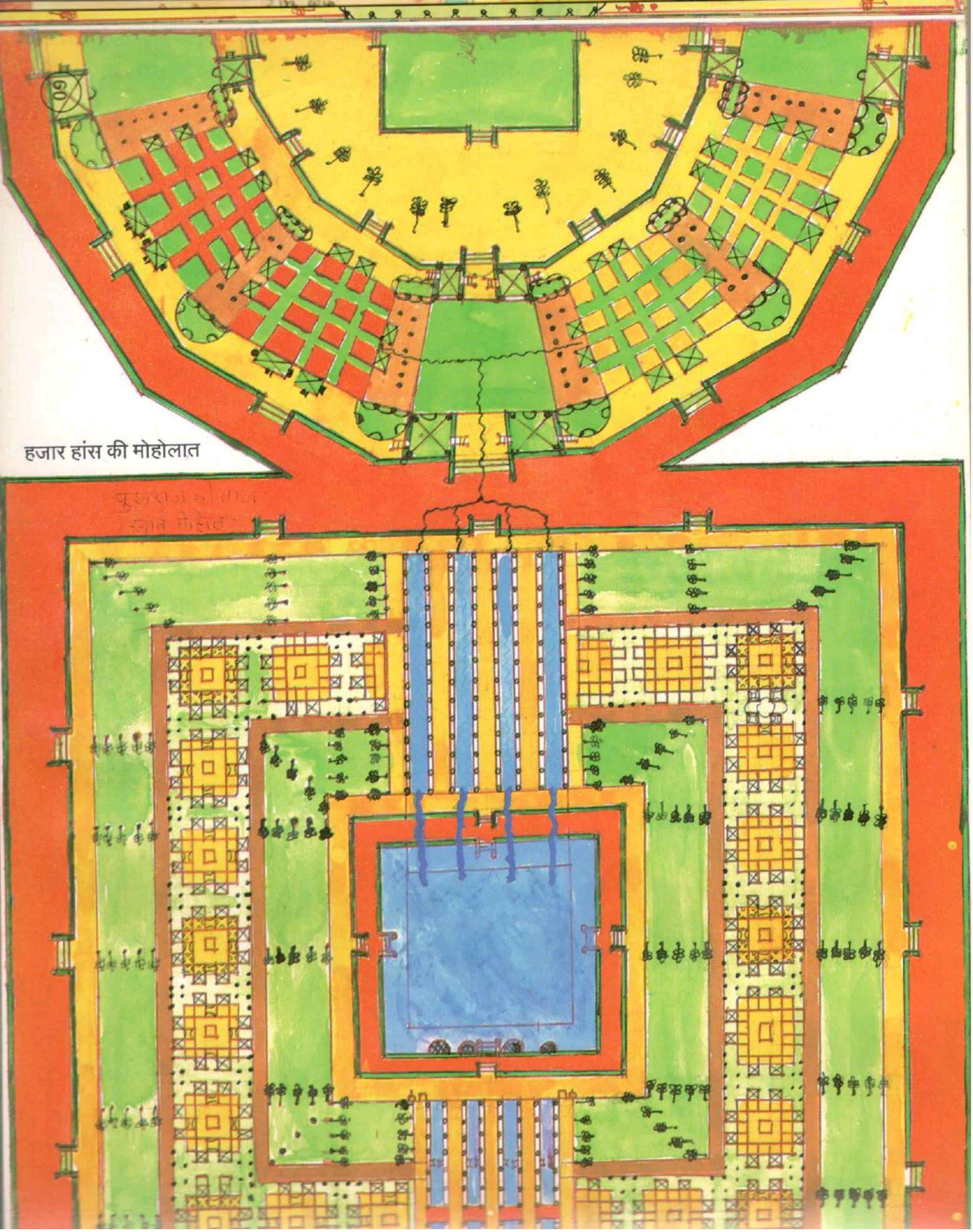

हजार हांस की मोहोलात

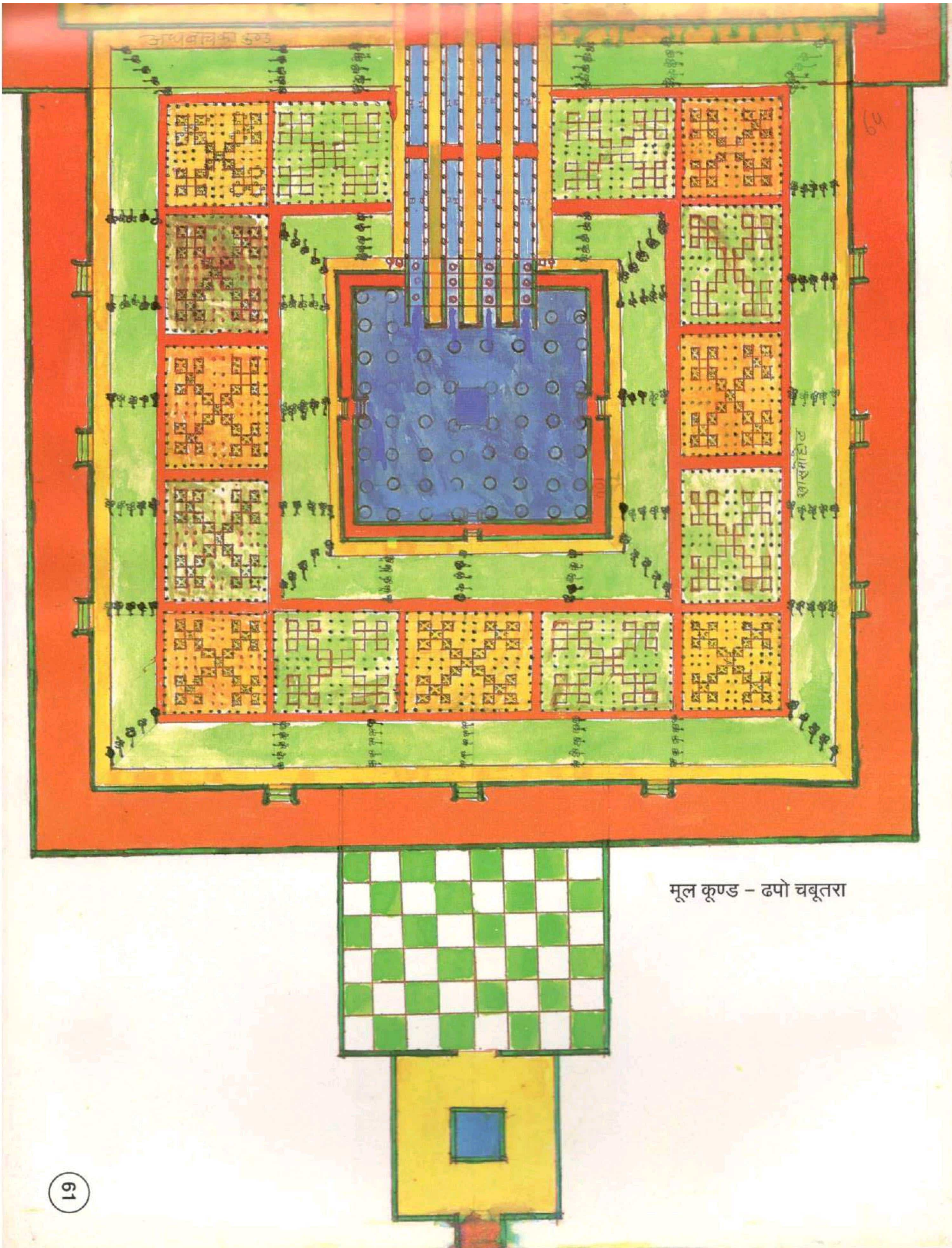

मूल कूण्ड – ढपो चबूतरा

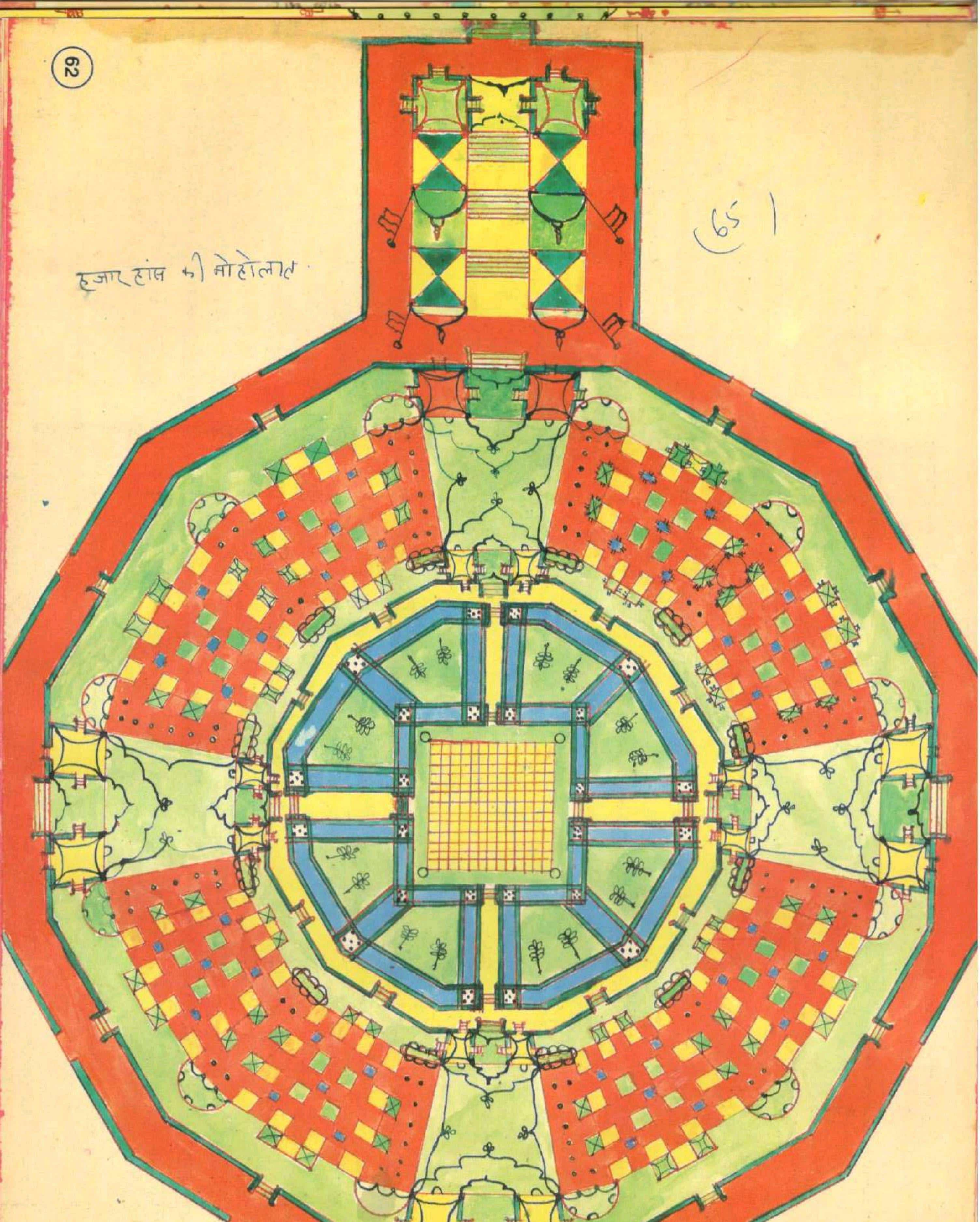
हजार हांस की मोहोलात
(65)

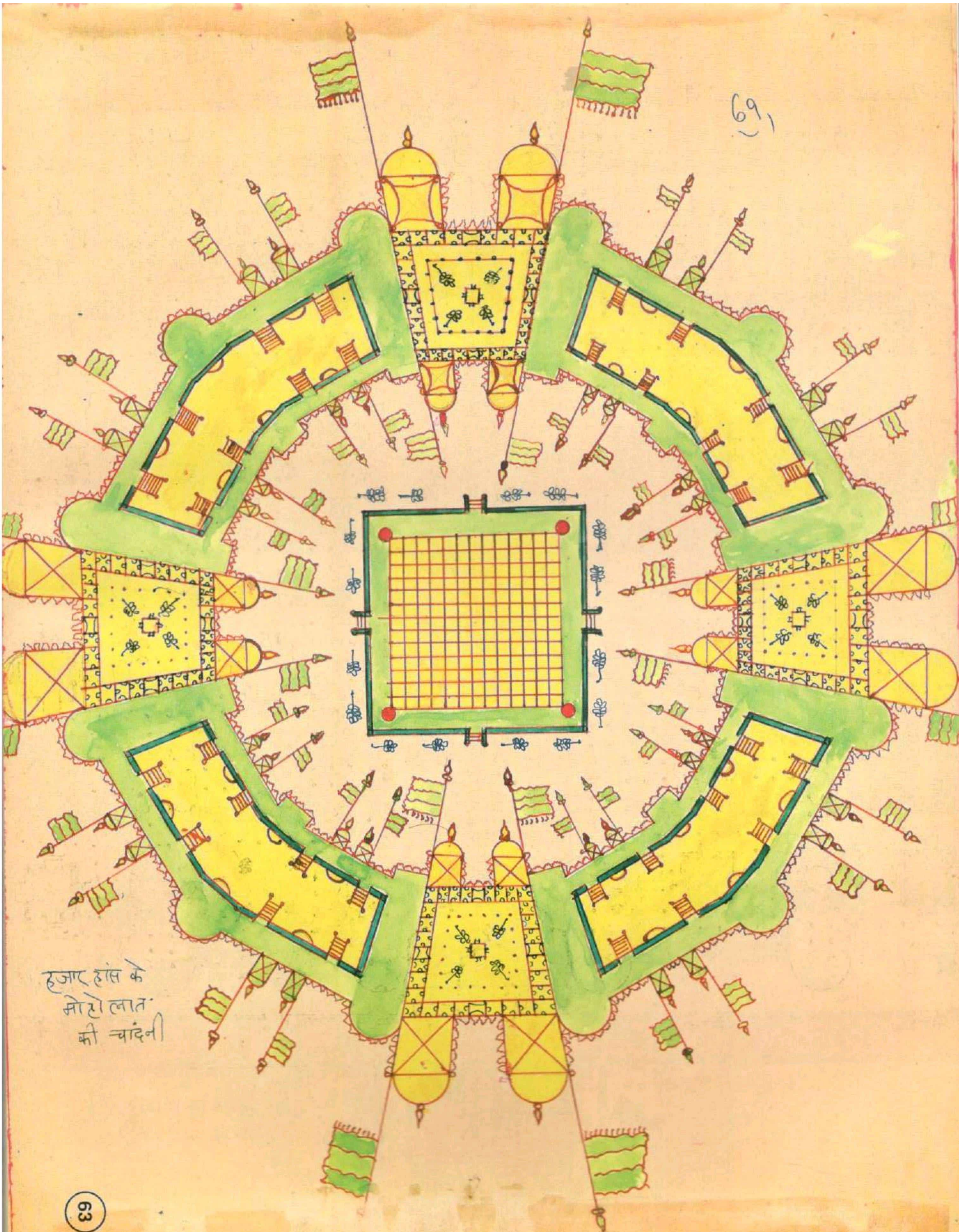
हजार हांल के
मोहोलात
की चांदनी

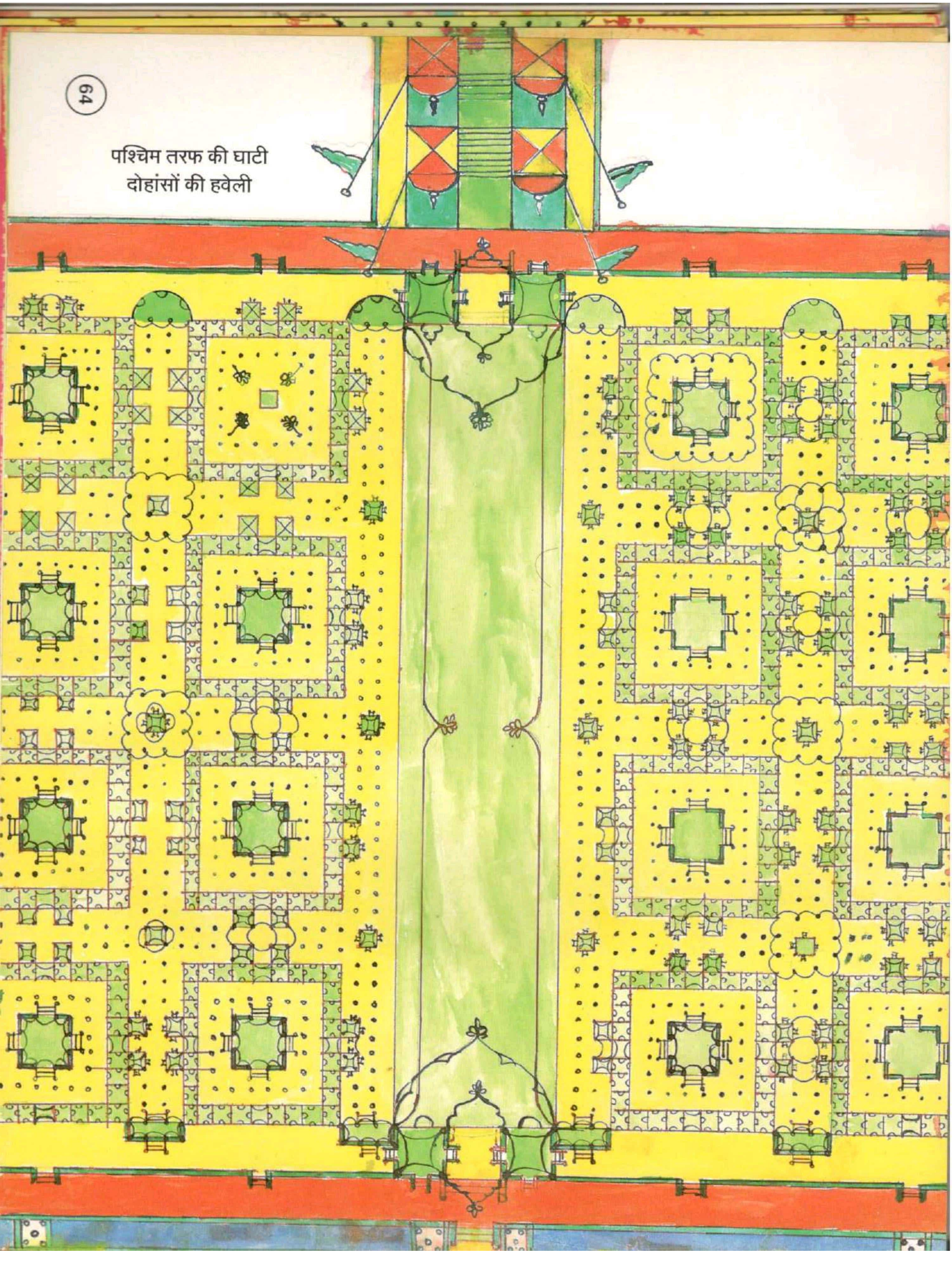

पश्चिम तरफ की घाटी
दोहांसों की हवेली

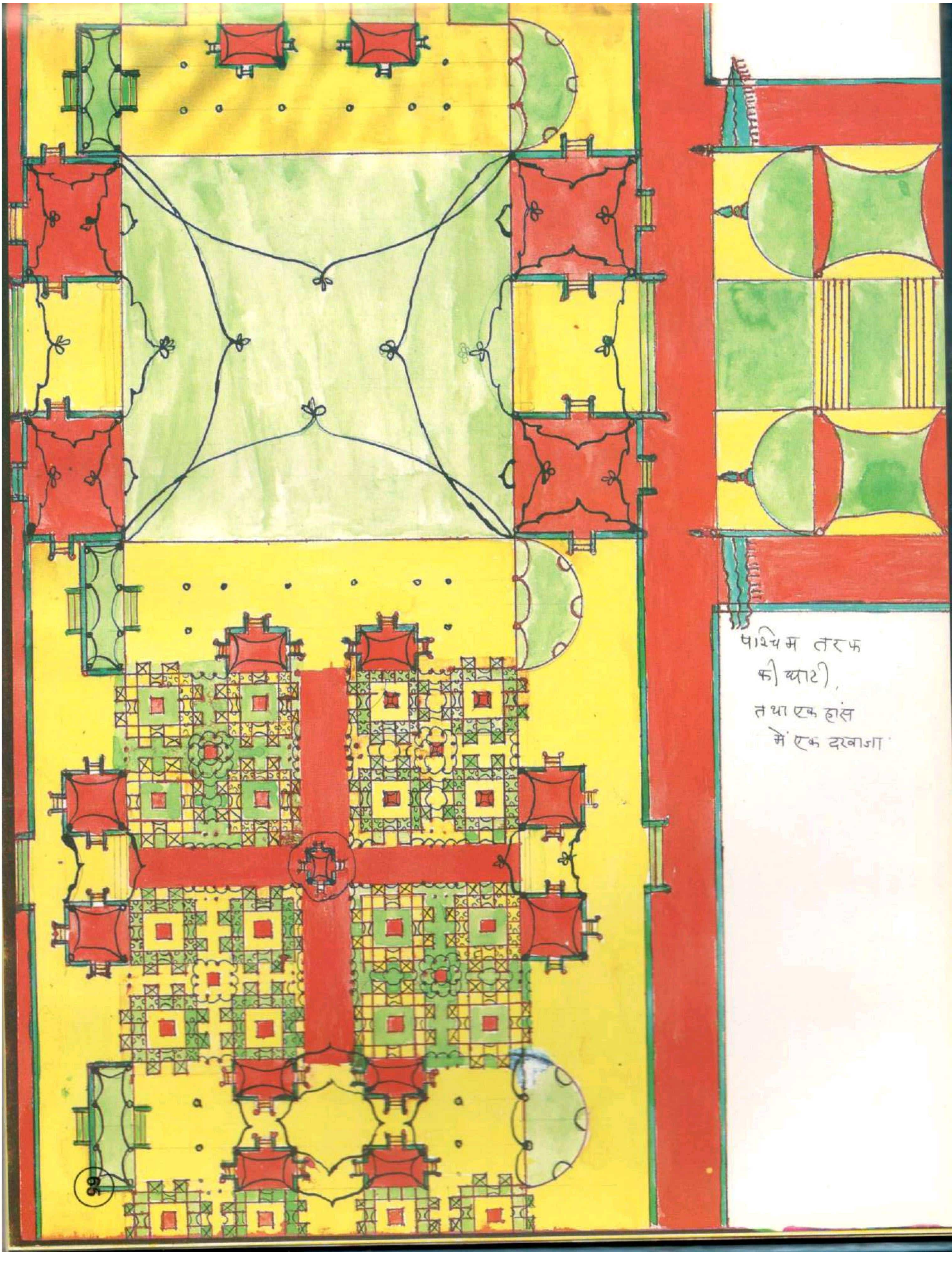

पाश्चिम तरफ
की घाटी,
तथा एक हौस
में एक दरवाजा

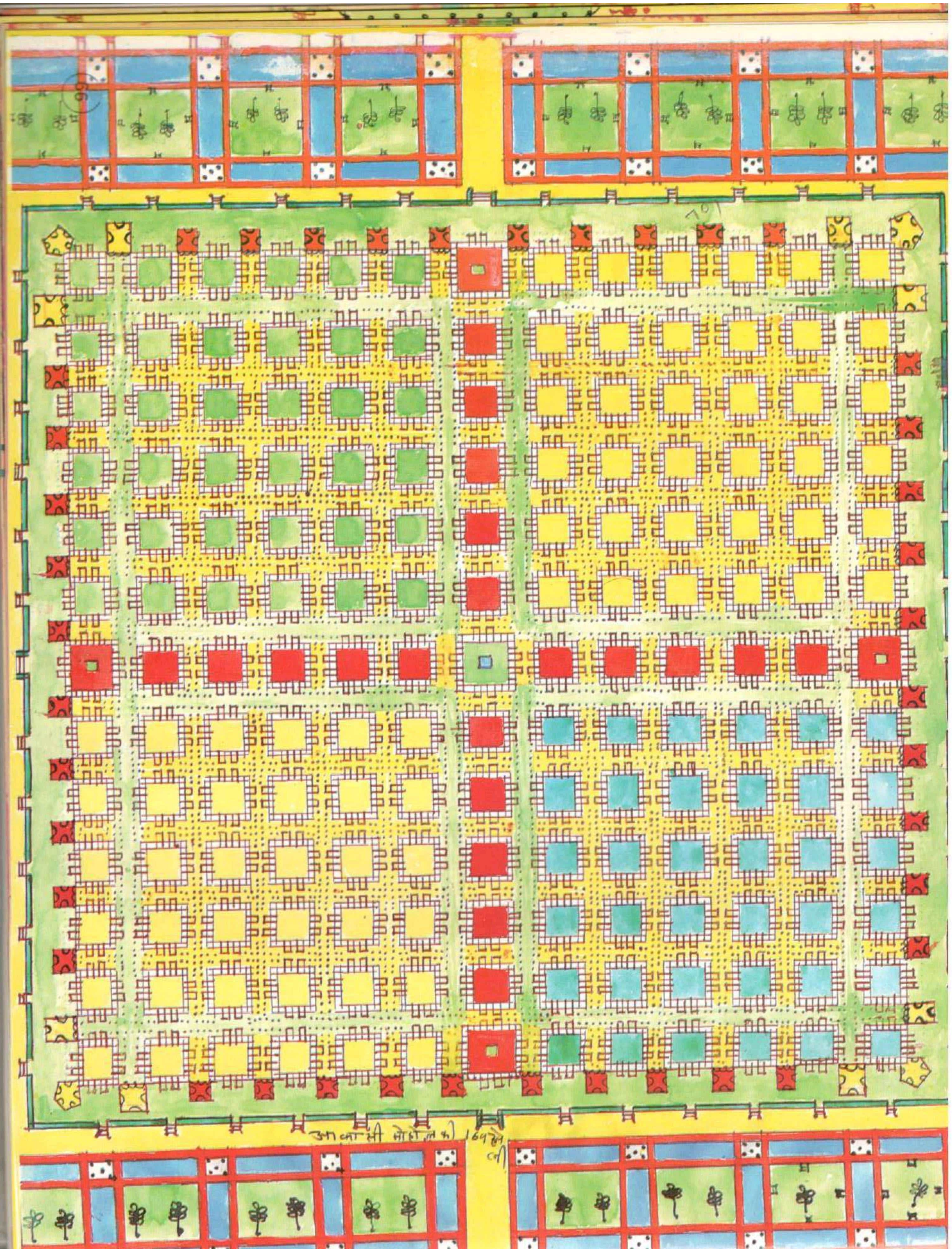

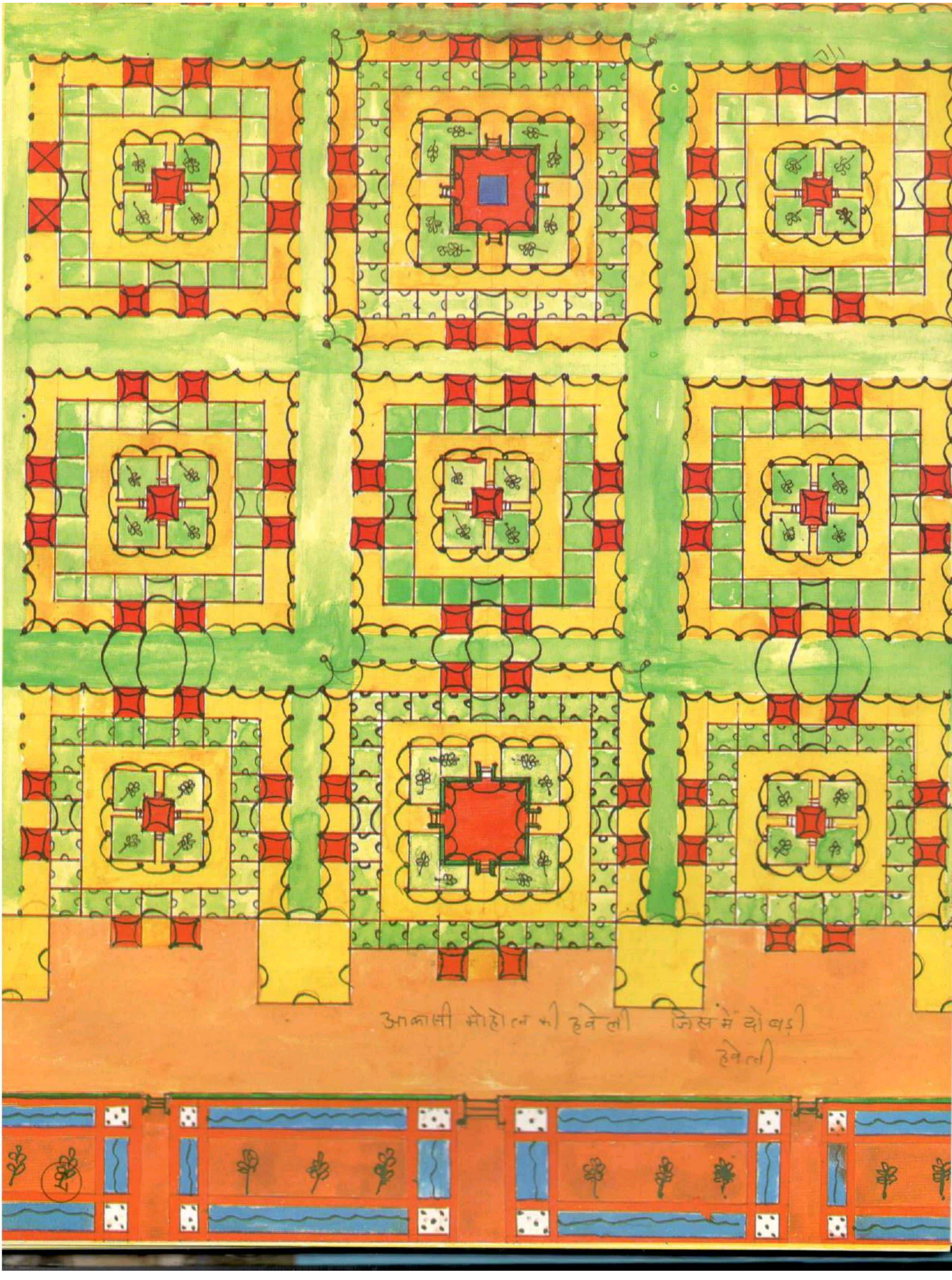
आकासी मोहोलन की हवेली जिस में दो बड़ी
हवेली

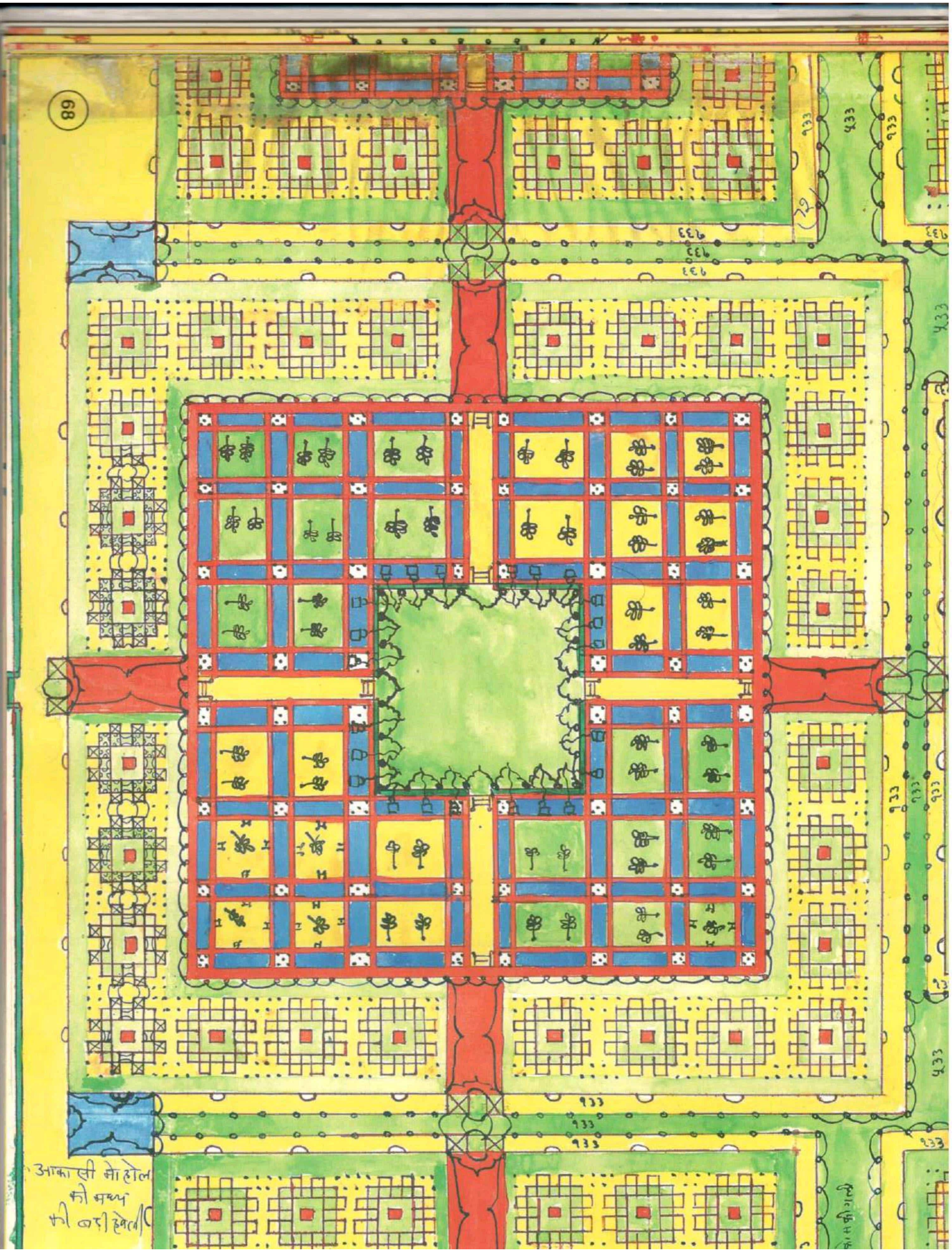
आका ली मो होल
को मध्य
की बड़ी हवेली

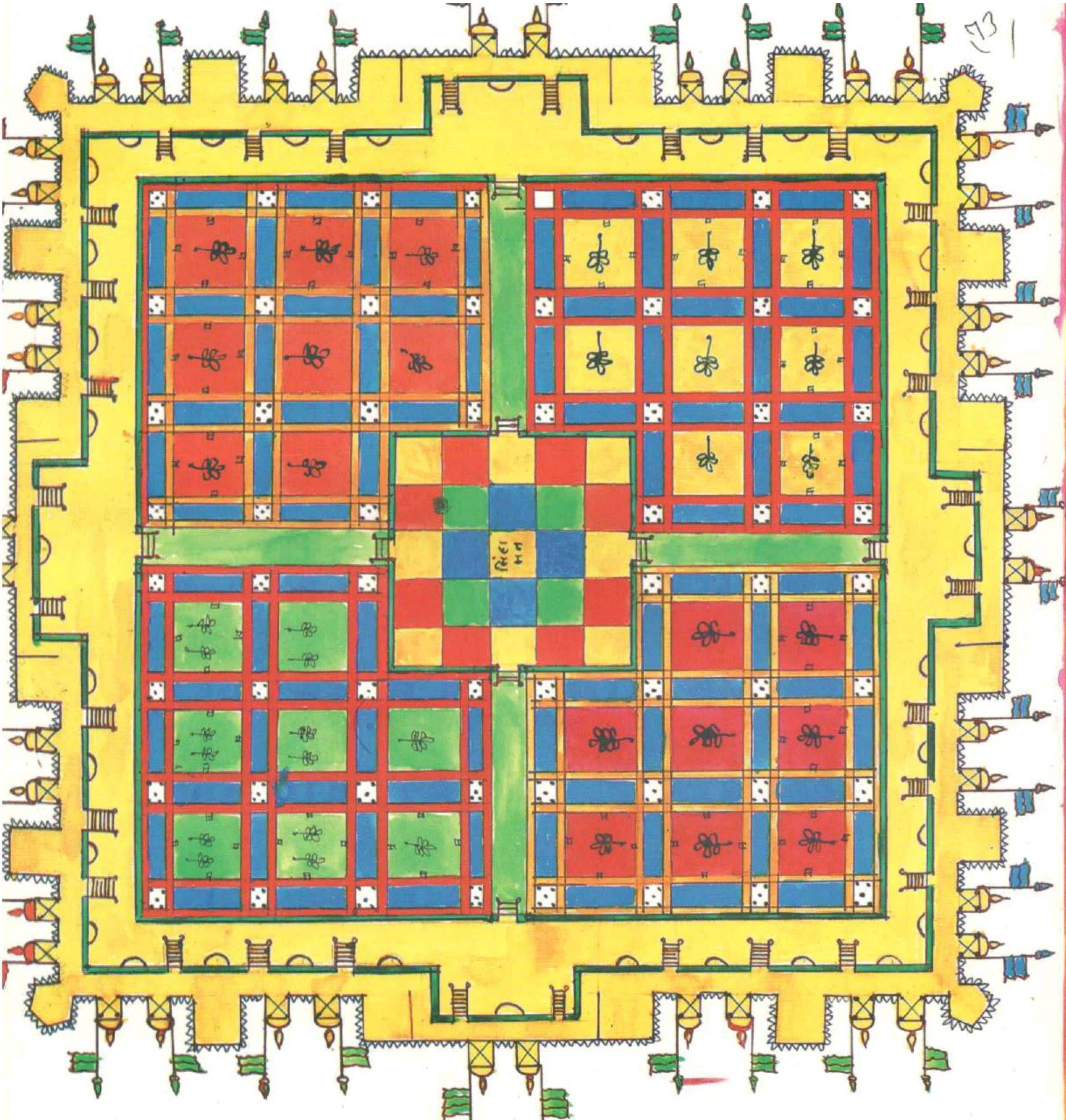

आकासी मोहोल की चांदनी

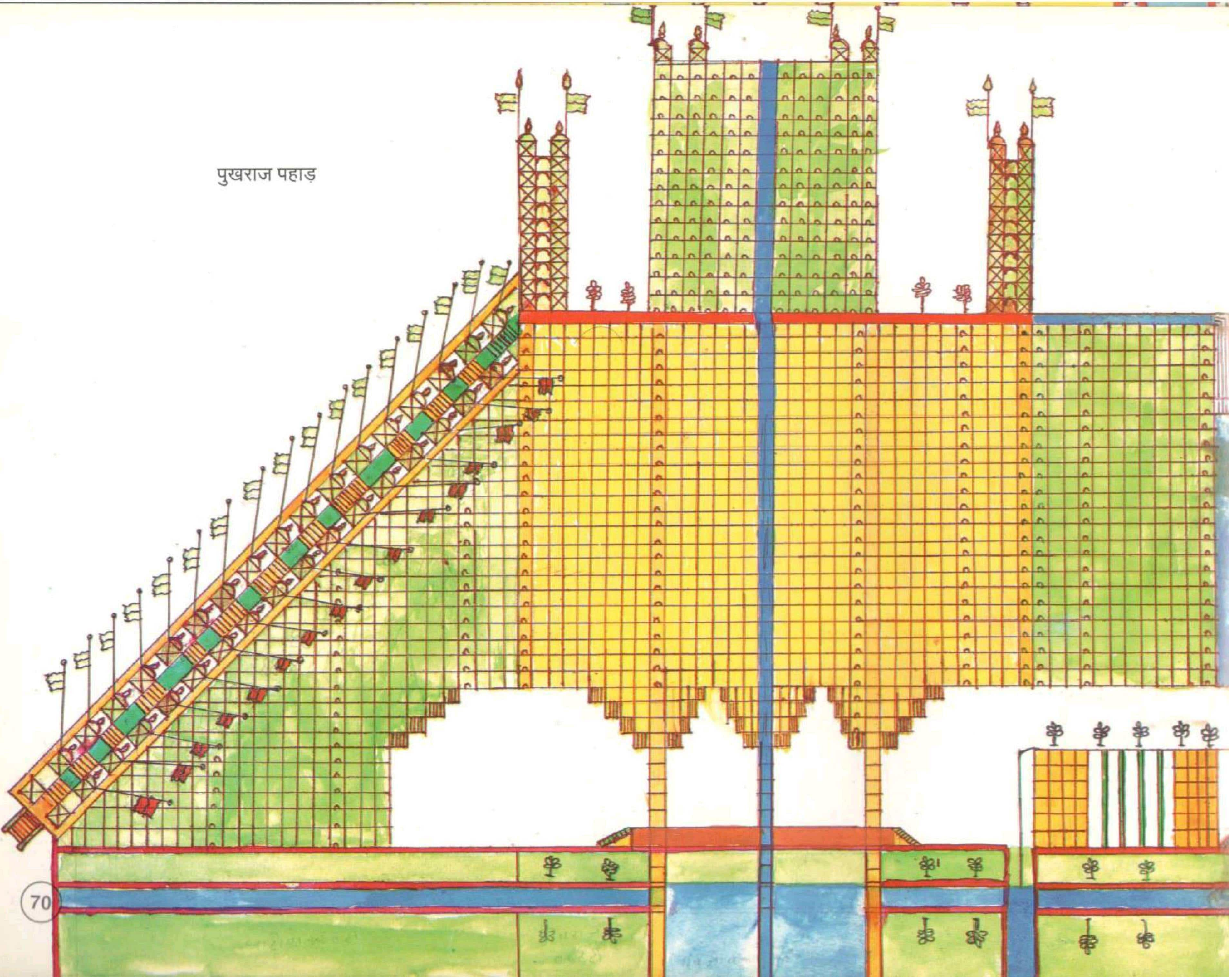
पुखराज पहाड़

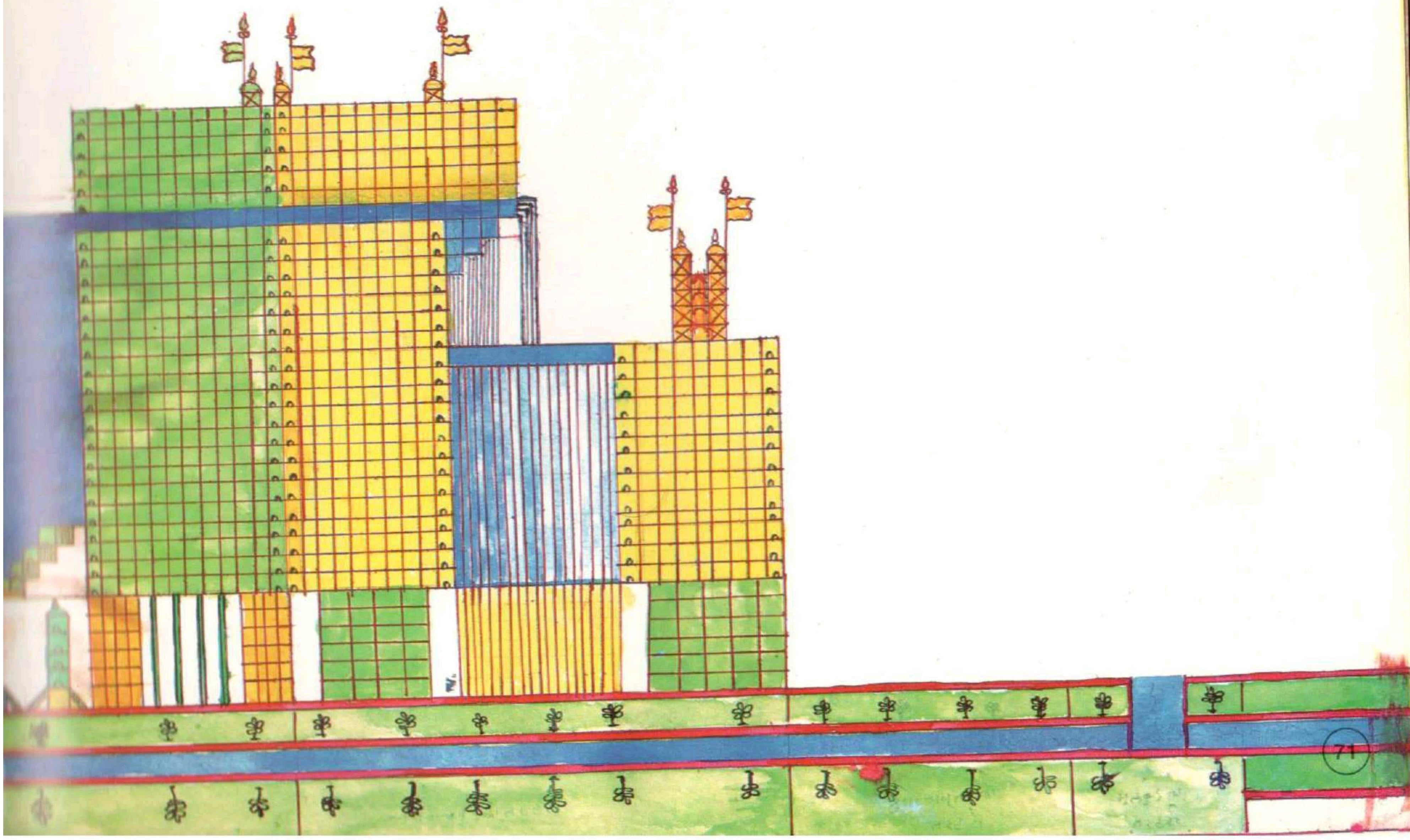

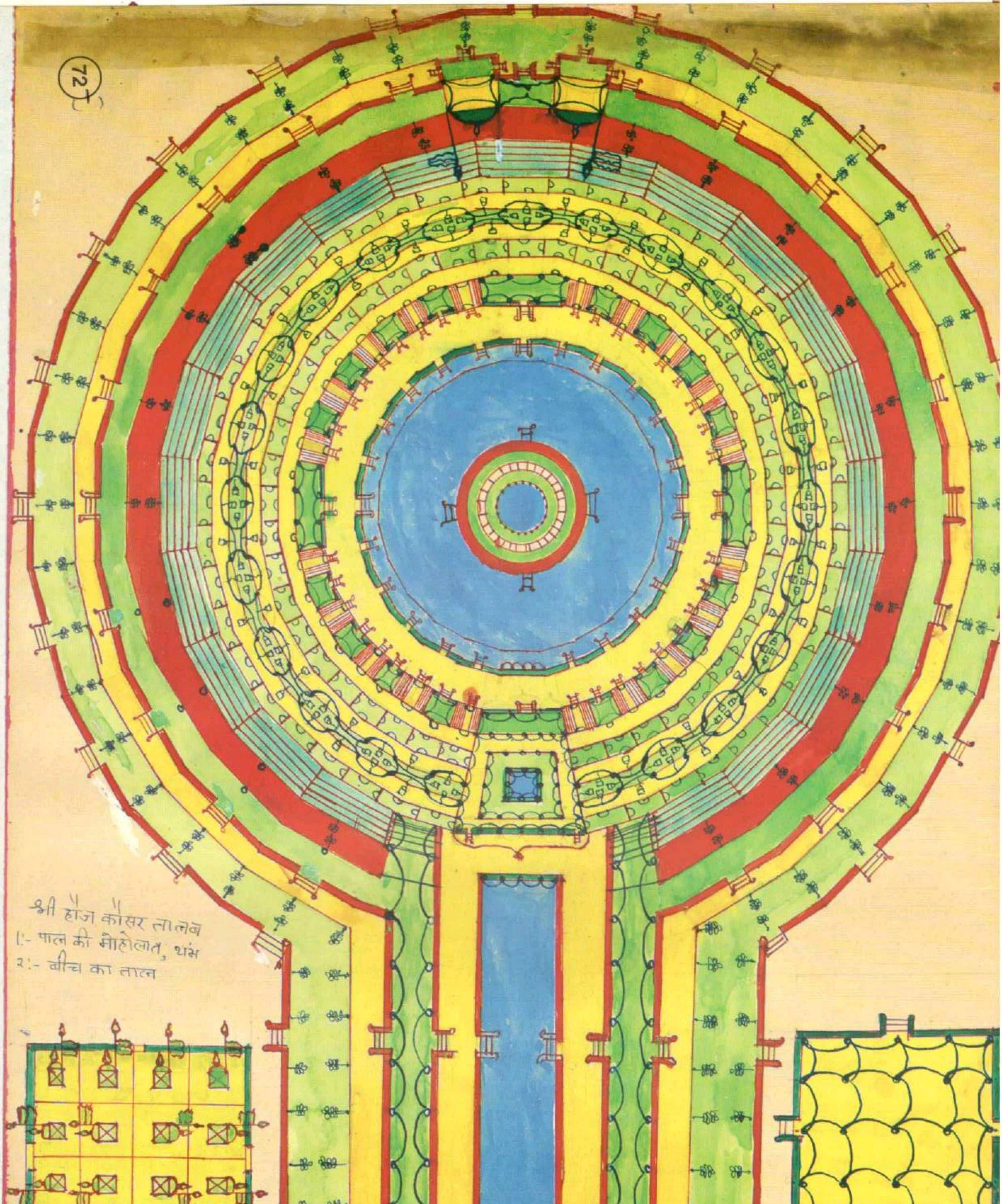
72
श्री हौज कौसर तालाब
1:- पाल की मोहोलात, थंभ
2:- बीच का ताल

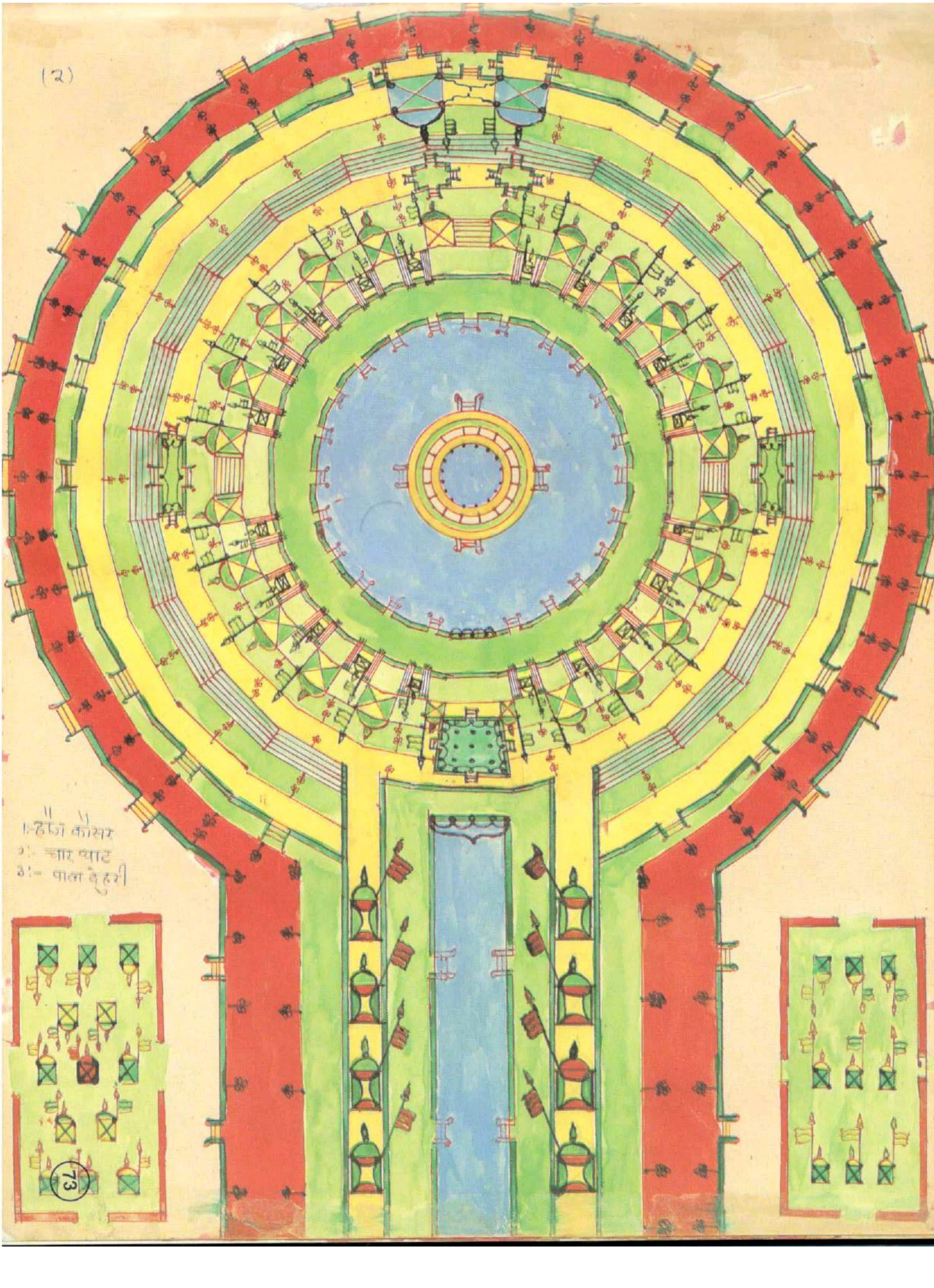
(2)
1:- हौज कौसर
2:- चार घाट
3:- पाल कुहरी
73

(3)
होज कासर ताल
टापू
74

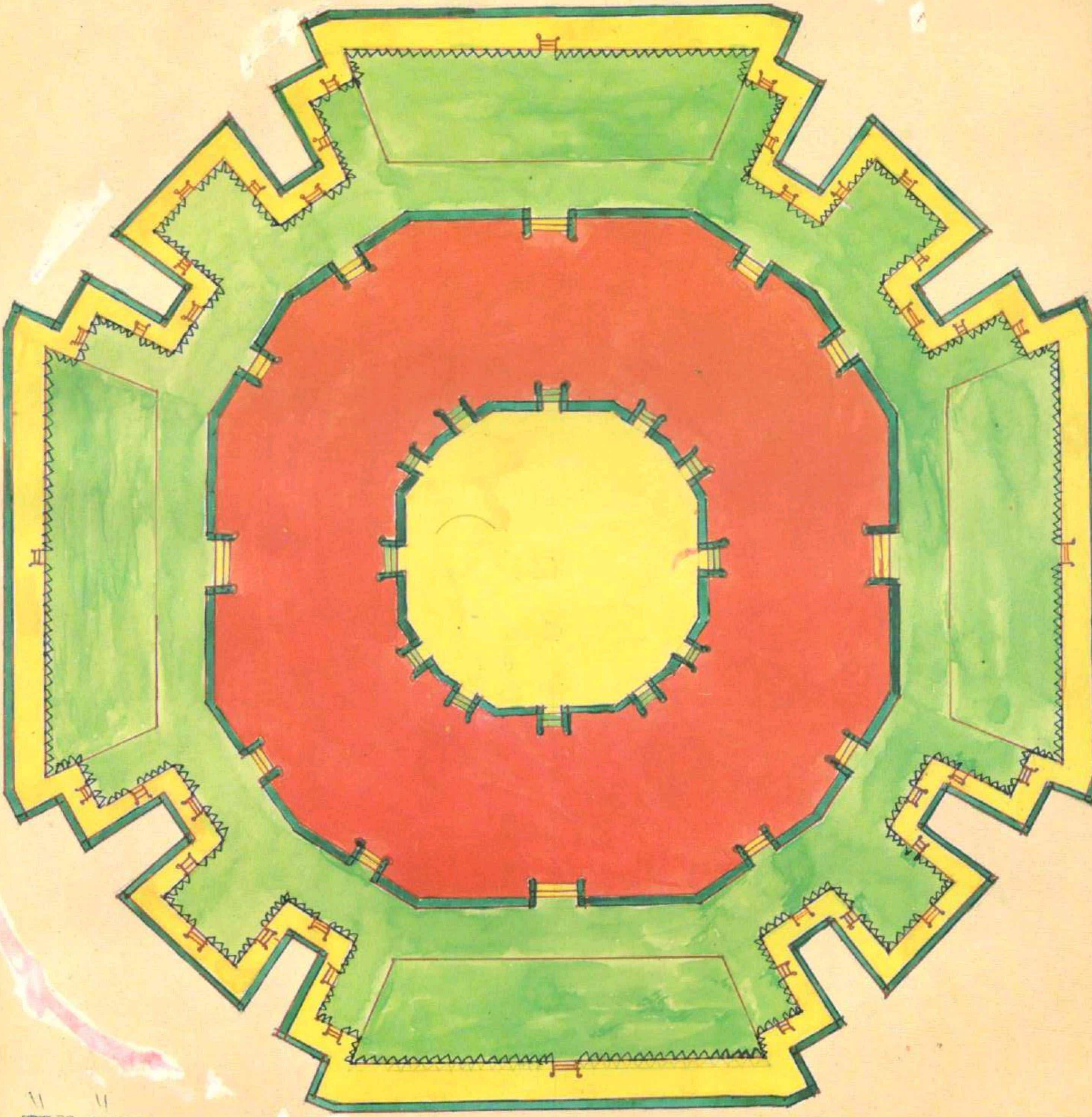

〃 〃
हाज कासर — टापू मोहोल की चान्दनी

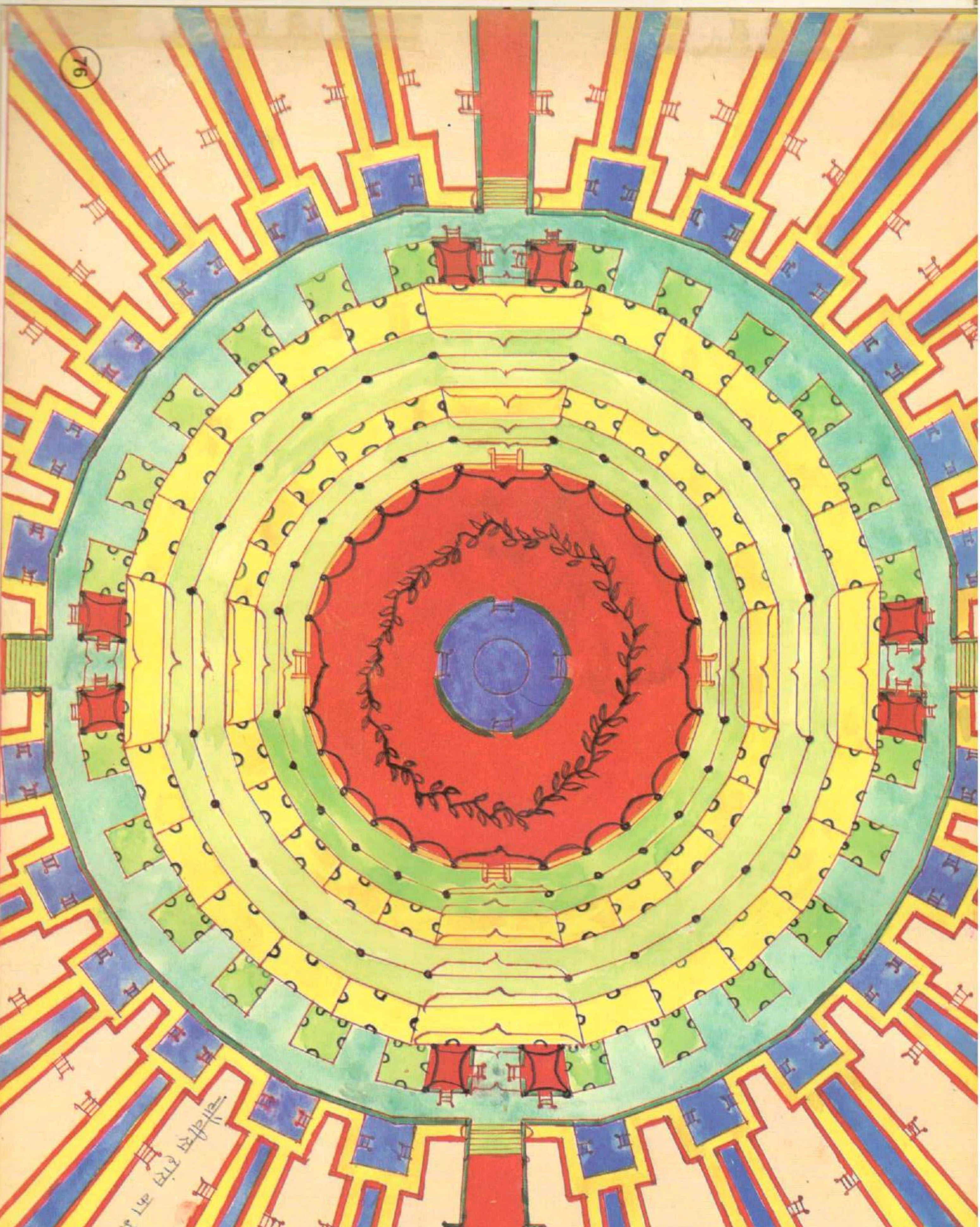

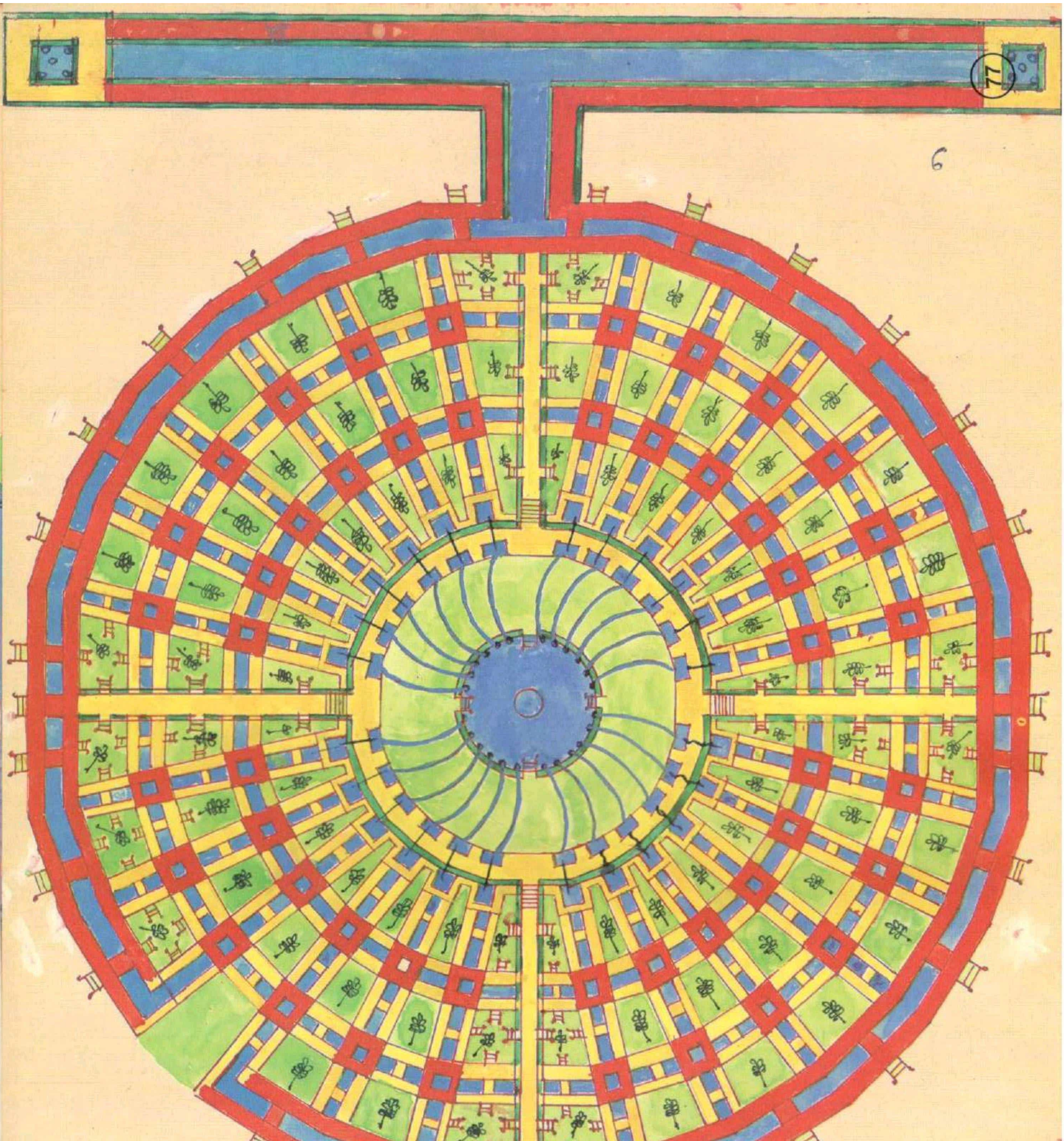

१:- चौबीस हांस की चान्दनी
२:- बाहर के मोहाल ताल

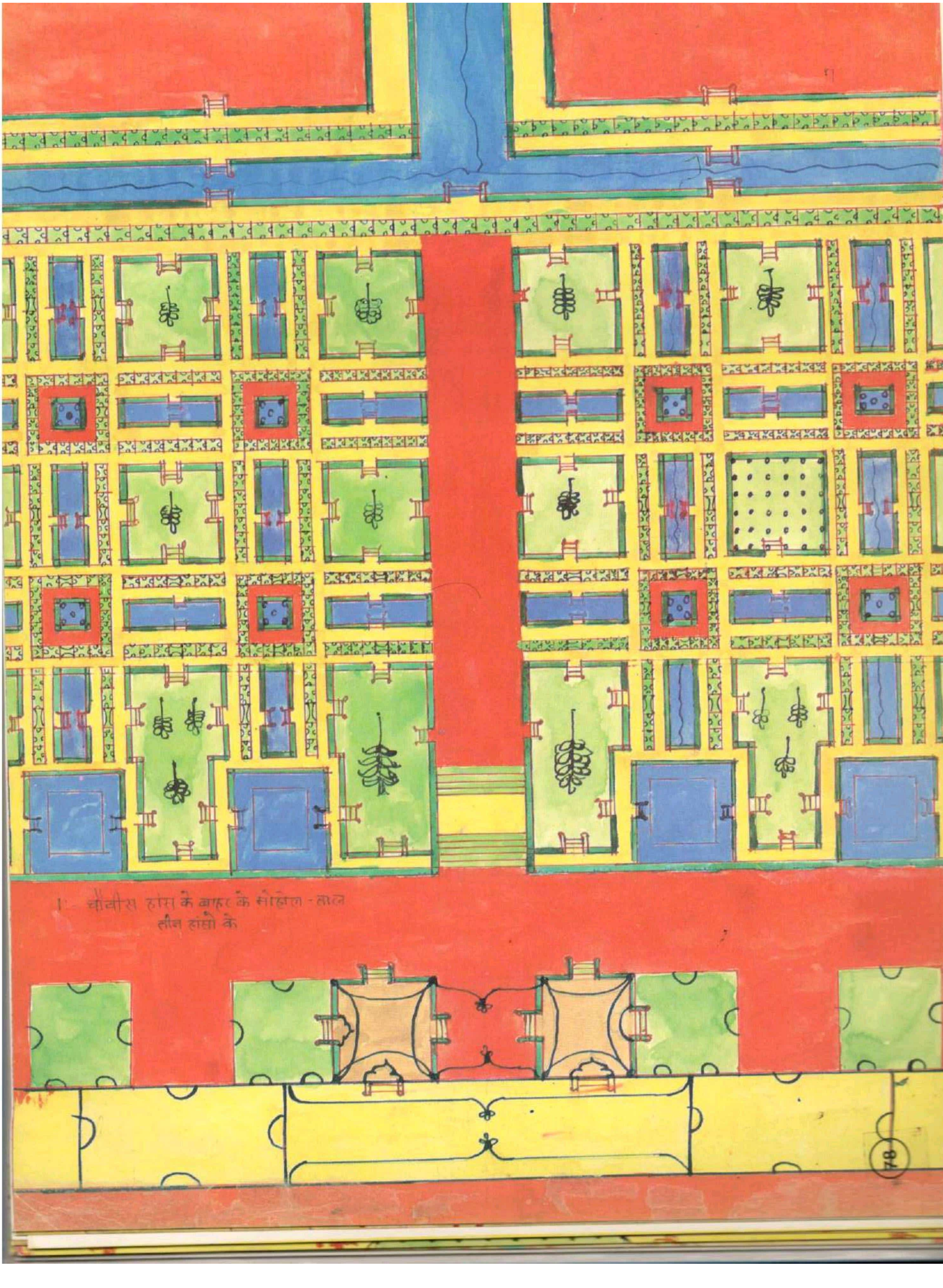
1 - चौबीस हास के बाहर के सोहिल - वाले
तीन हासों के

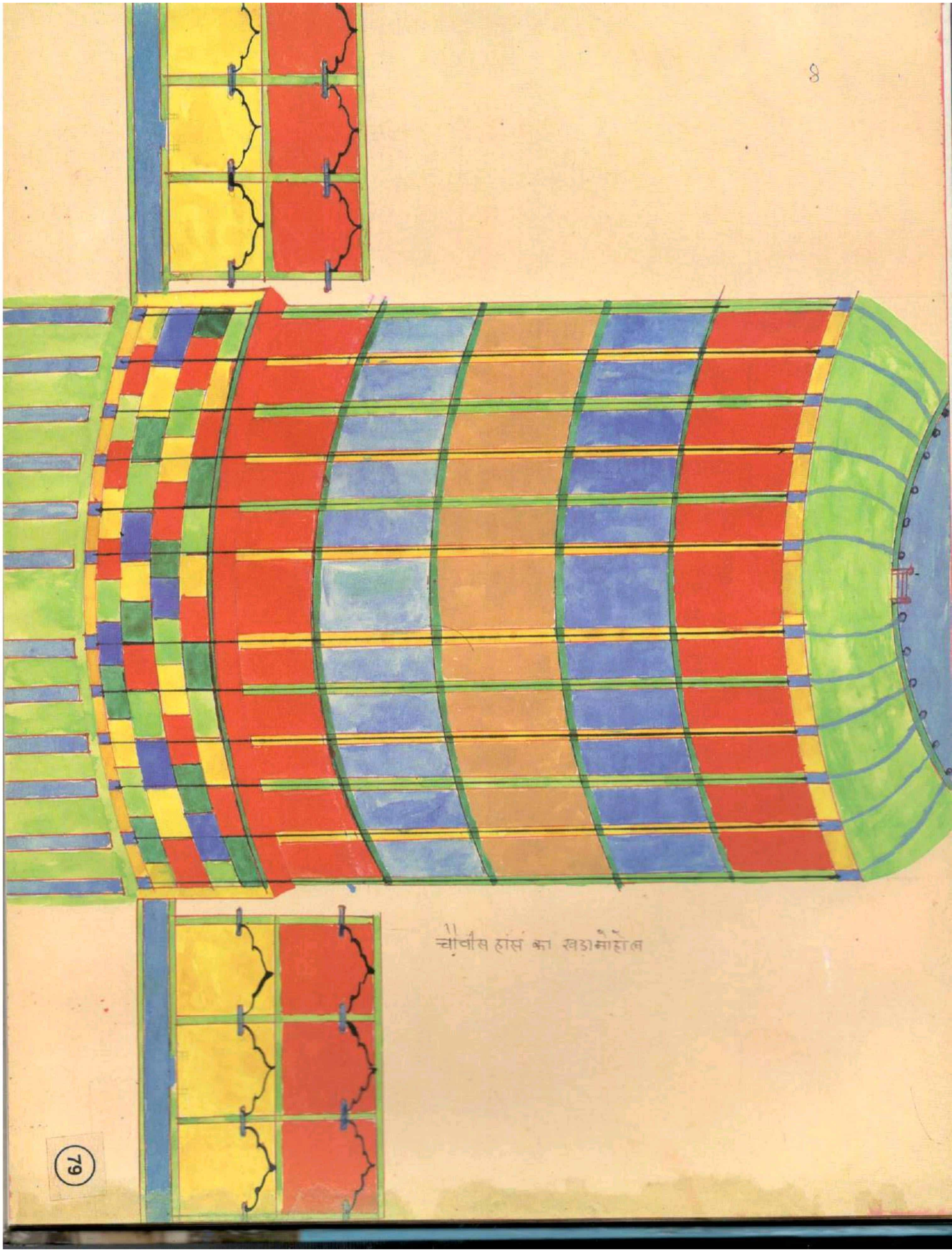

चौबीस हांस का खडामोहोल

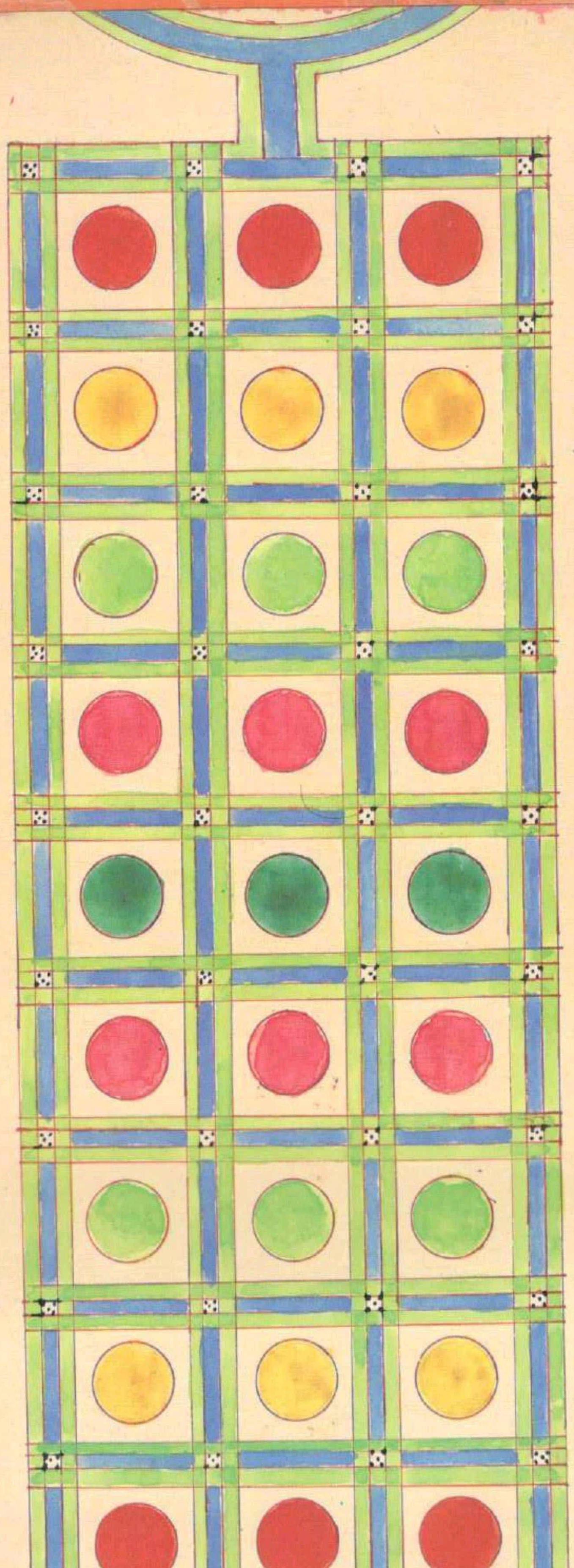

अवेरों की लहरें नव फिराव

(14)
जवेरों की नहरों का एक मोहोल

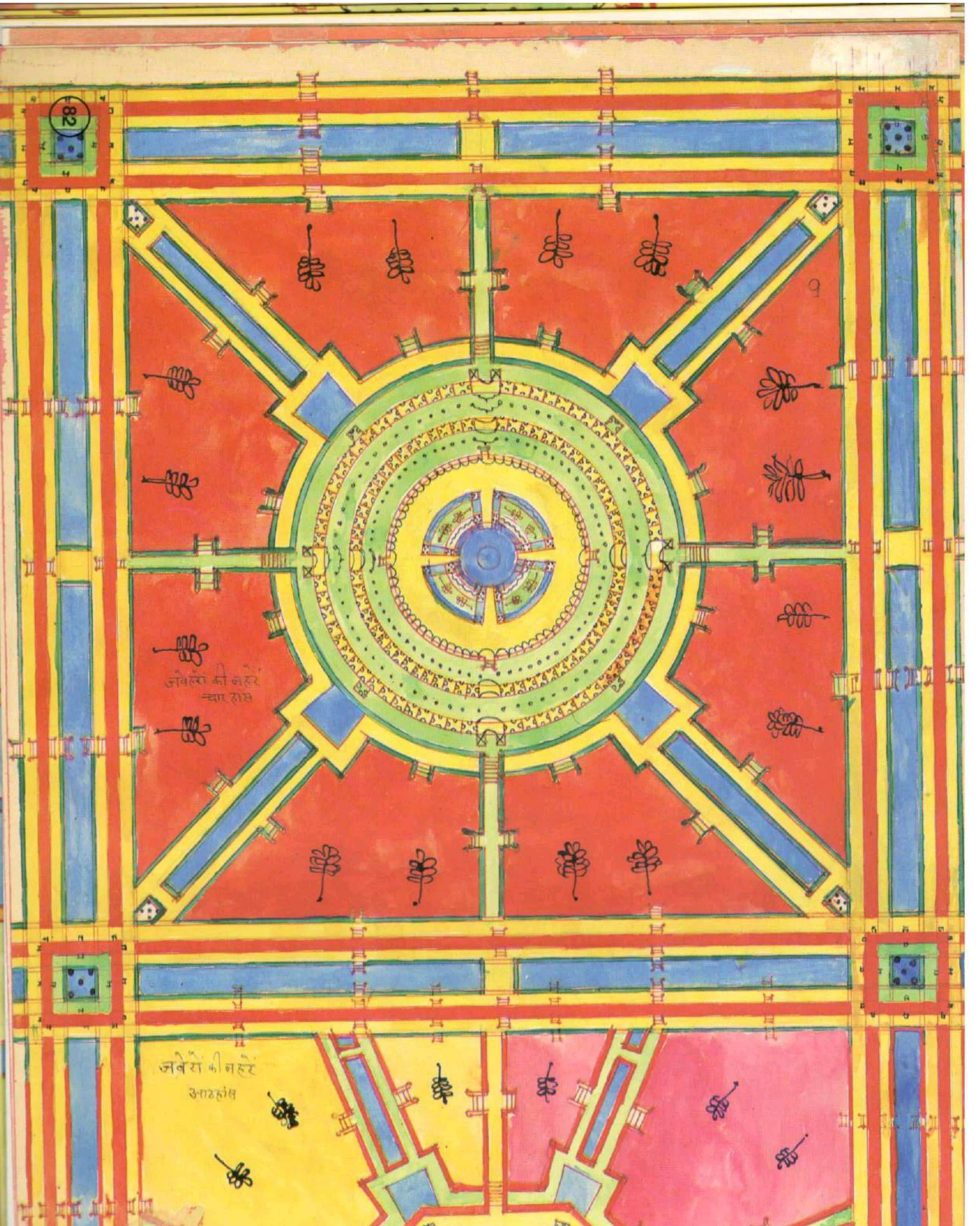
82
जवेरों की नहरें
चार हौज
जवेरों की नहरें
आठ हौज

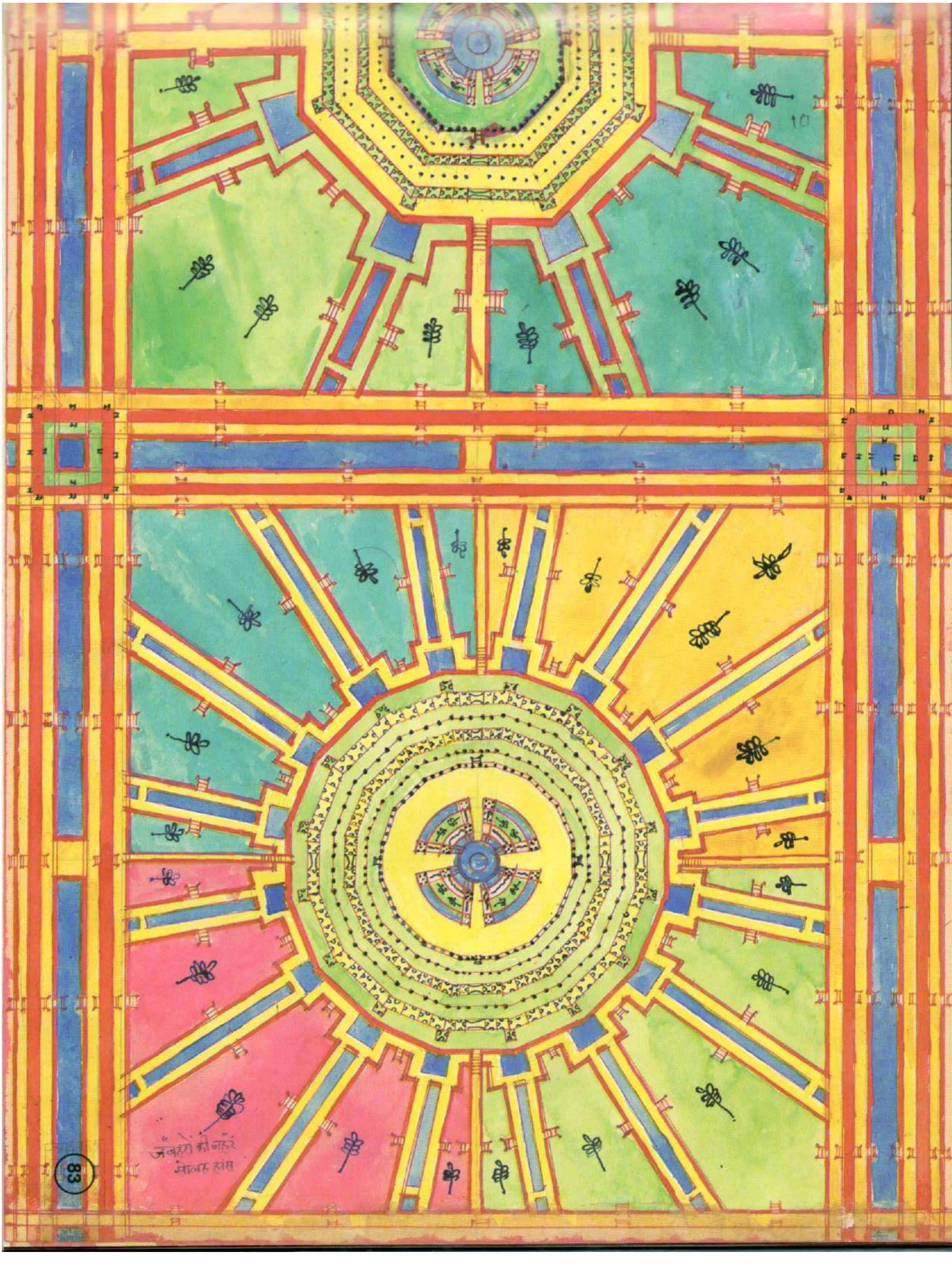

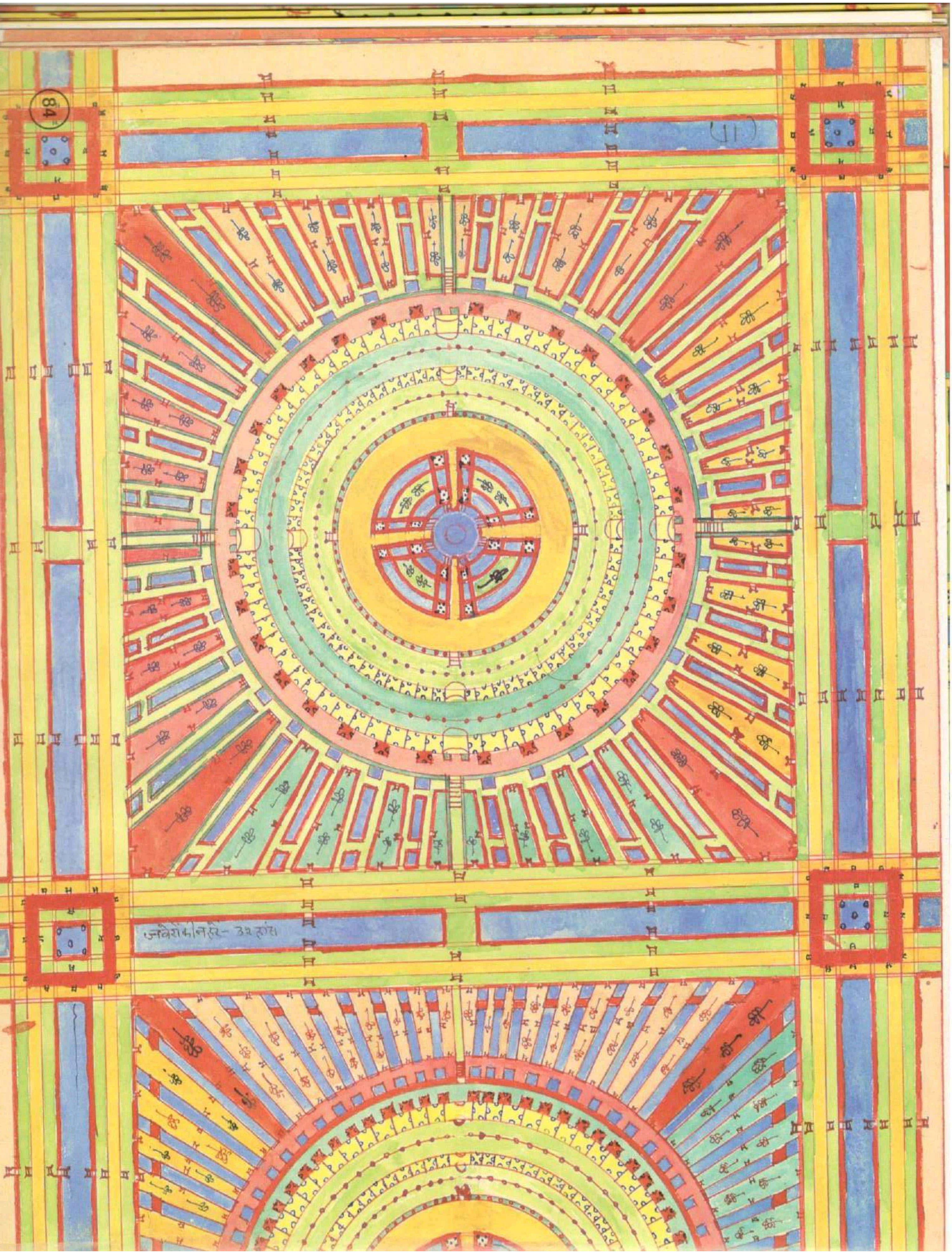
84

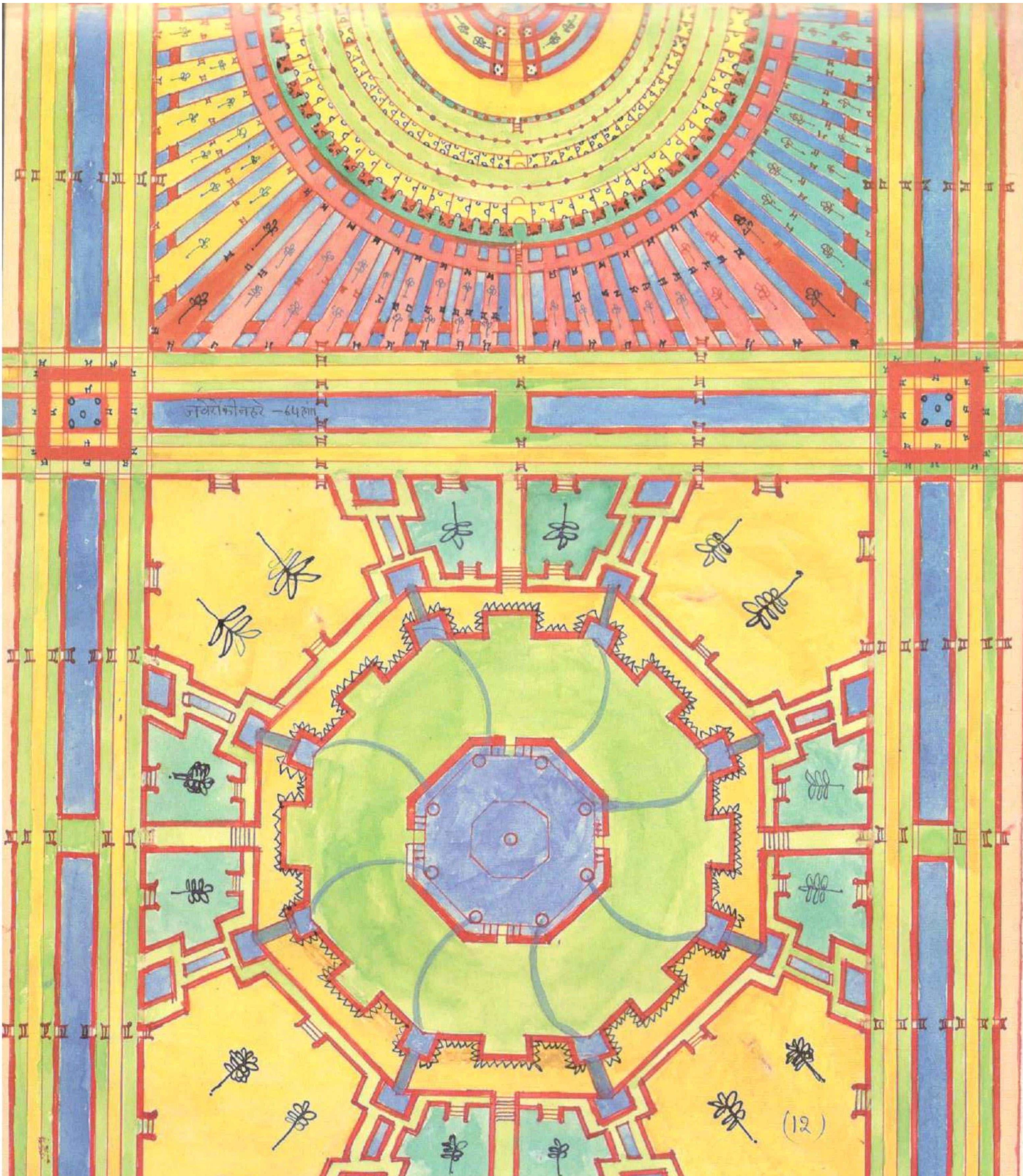
(12)

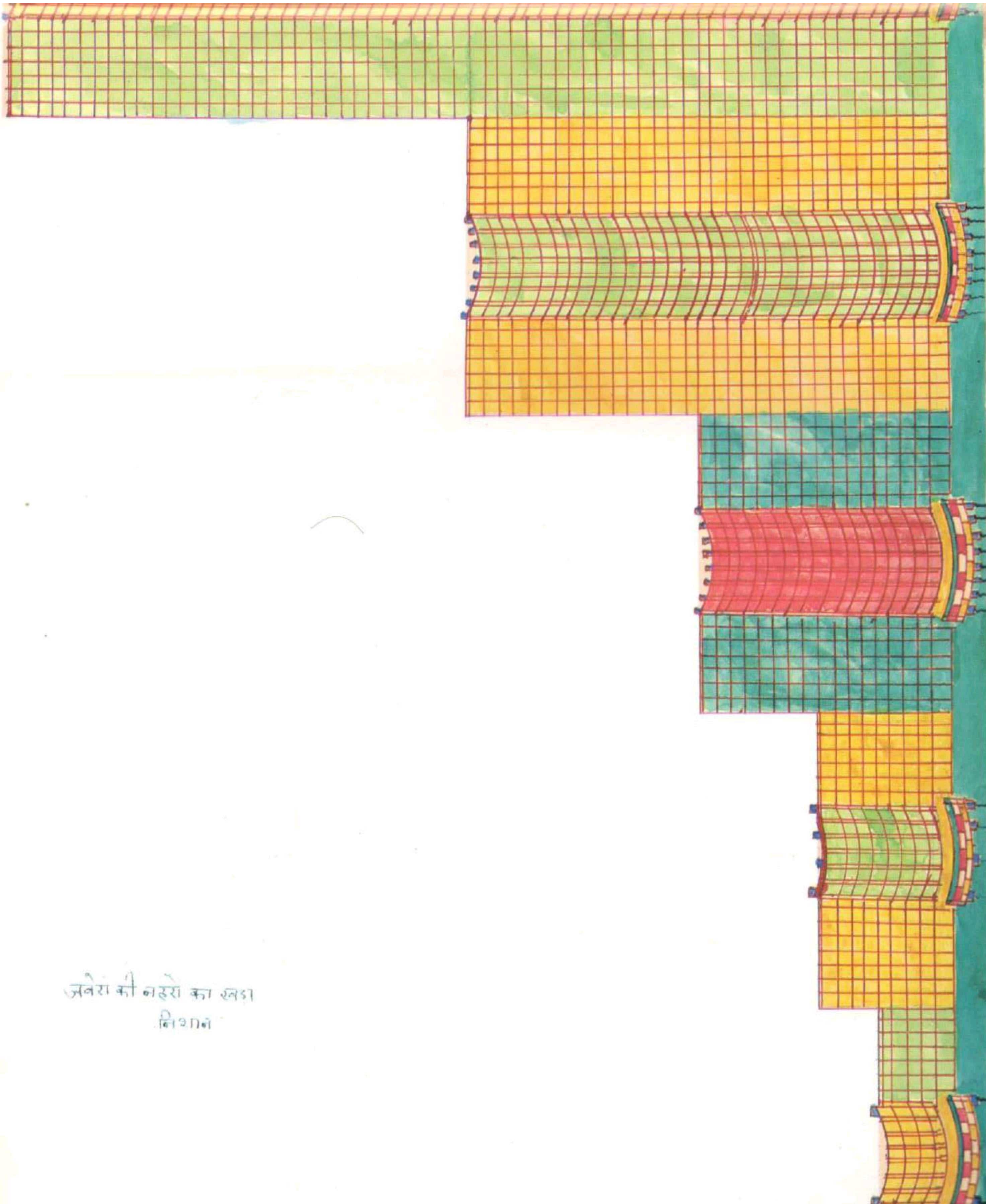

जनेरा की लहरों का खड़ा
निशान

जानवरों की नहरों का खड़ा निशान

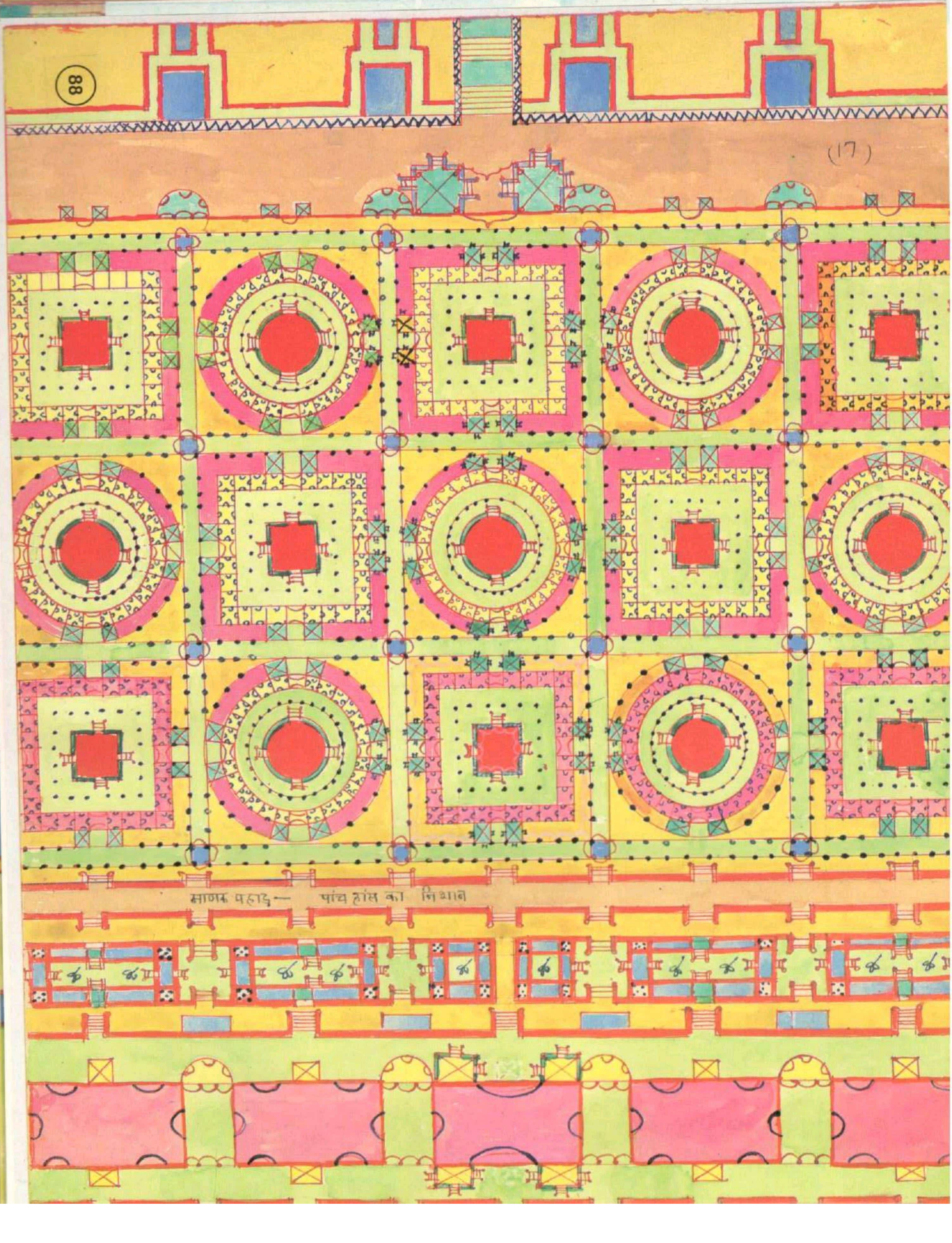
88
(17)
मानक पहाड़ — पांच हौंस का निशान

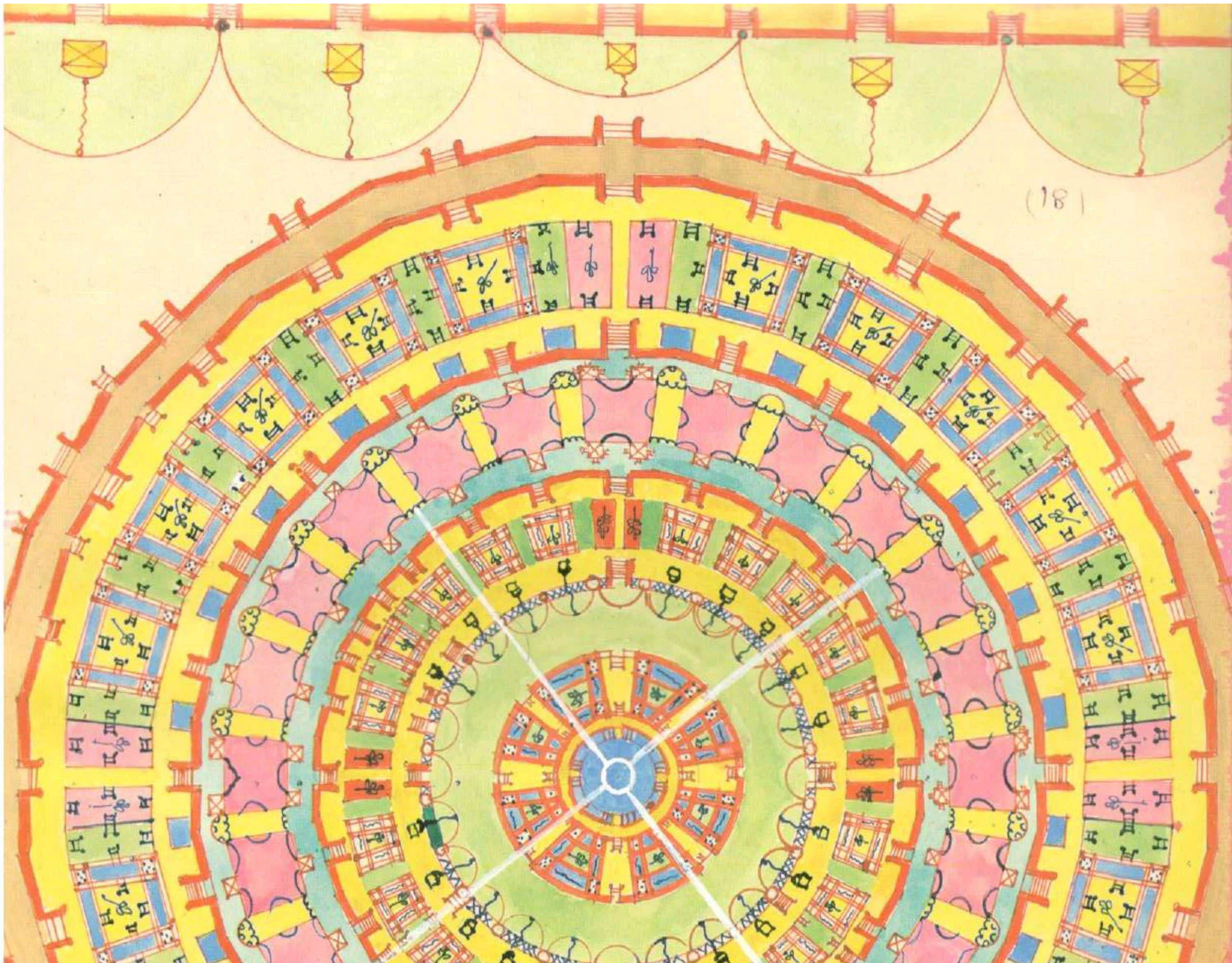

माणक पहाड़ का
माणक मोहोलो
भीतर का निशान

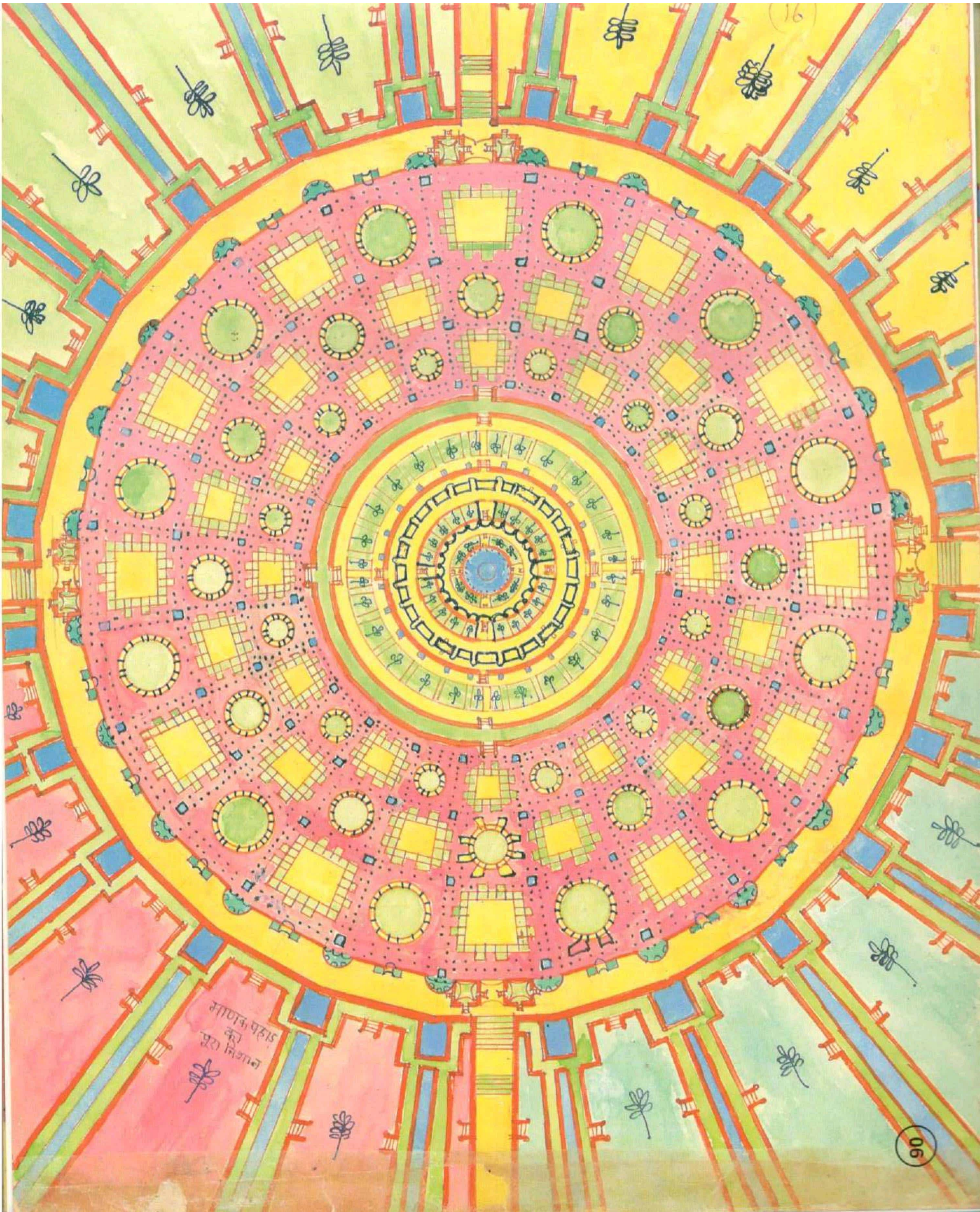
माणक पहाड़
का
पूरा निशान

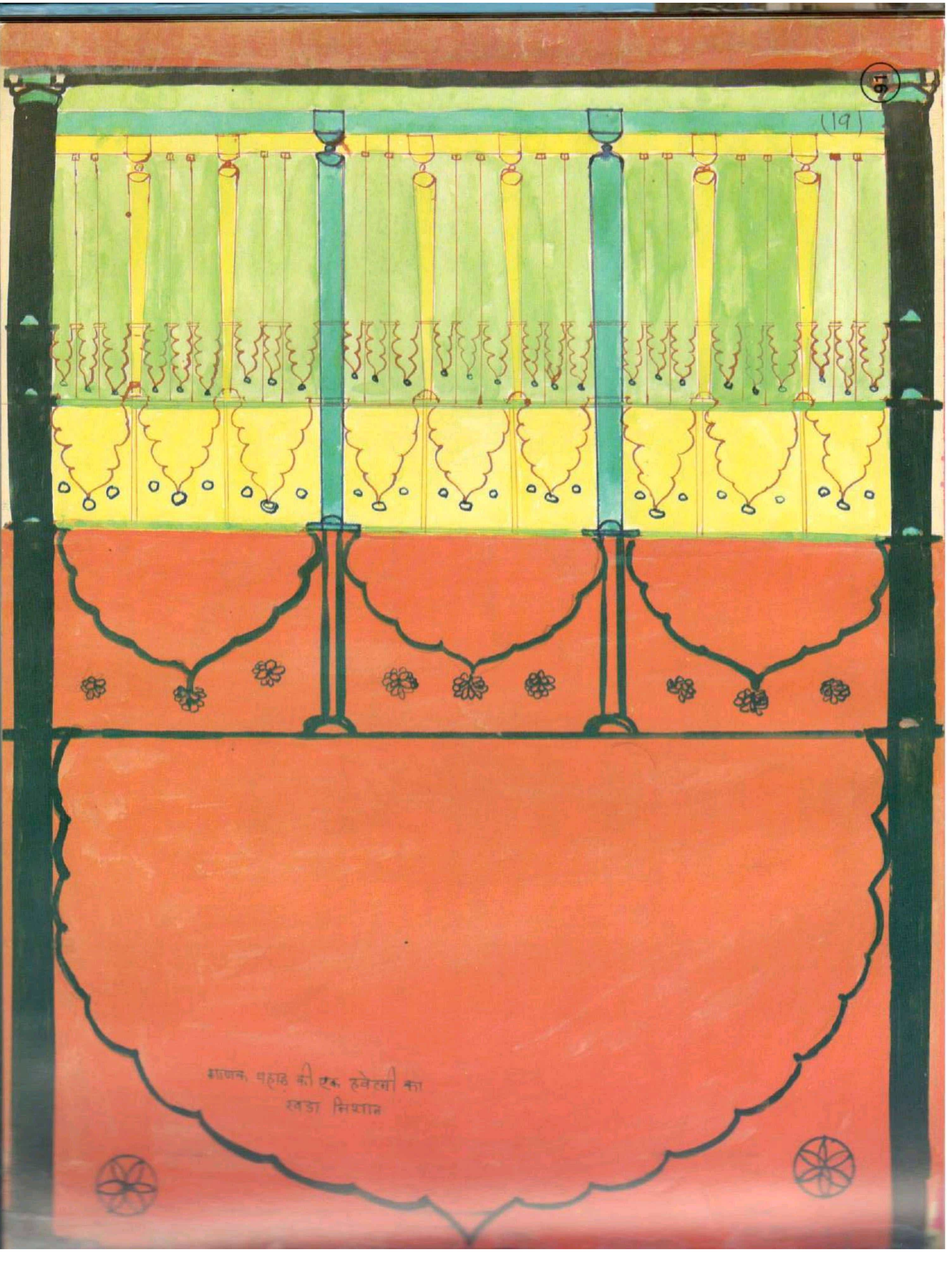
(19)
झाजन, पहाड़ की एक हवेली का
खडा विन्यास

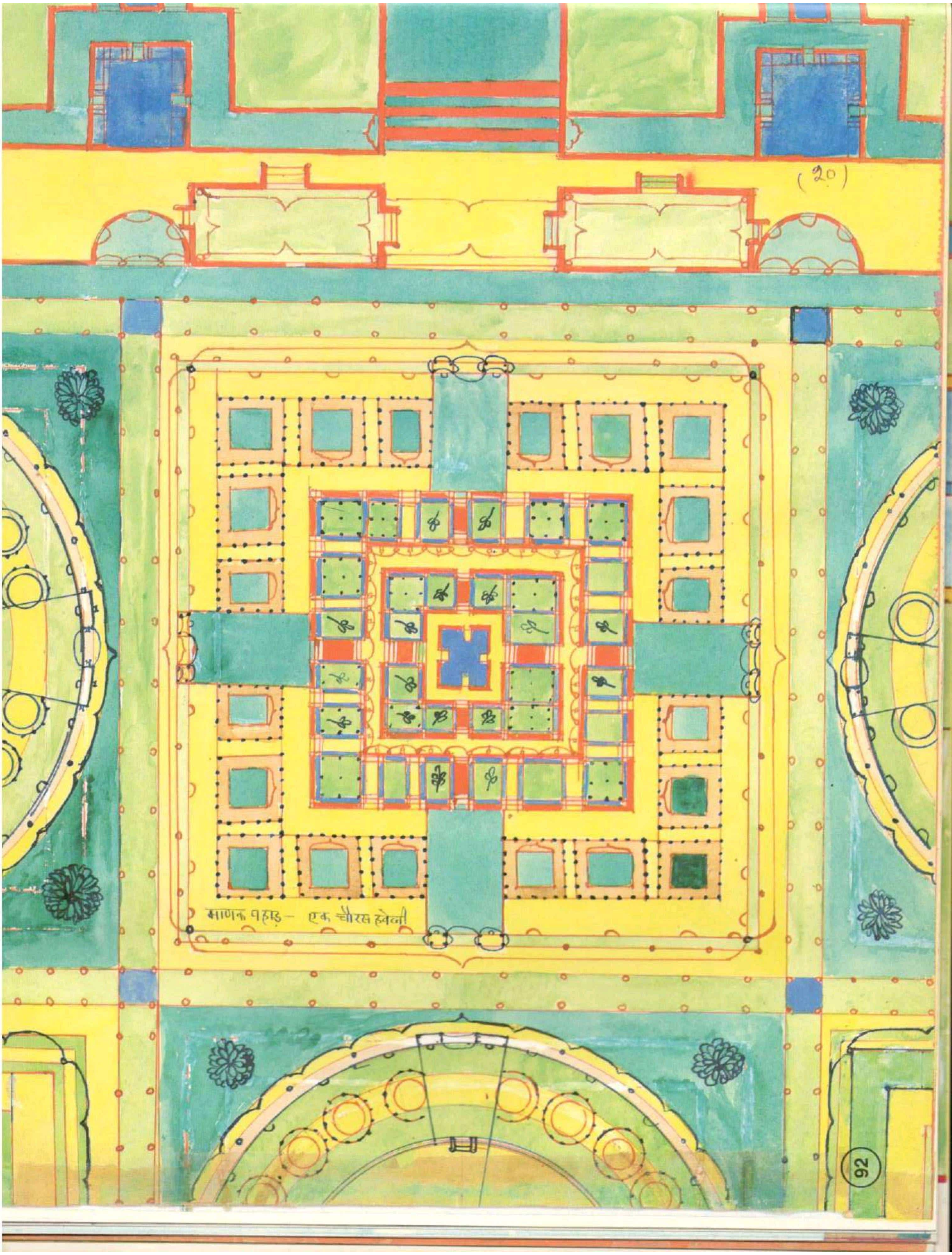
(20)
माणक पहाड़ – एक चौरस हवेली

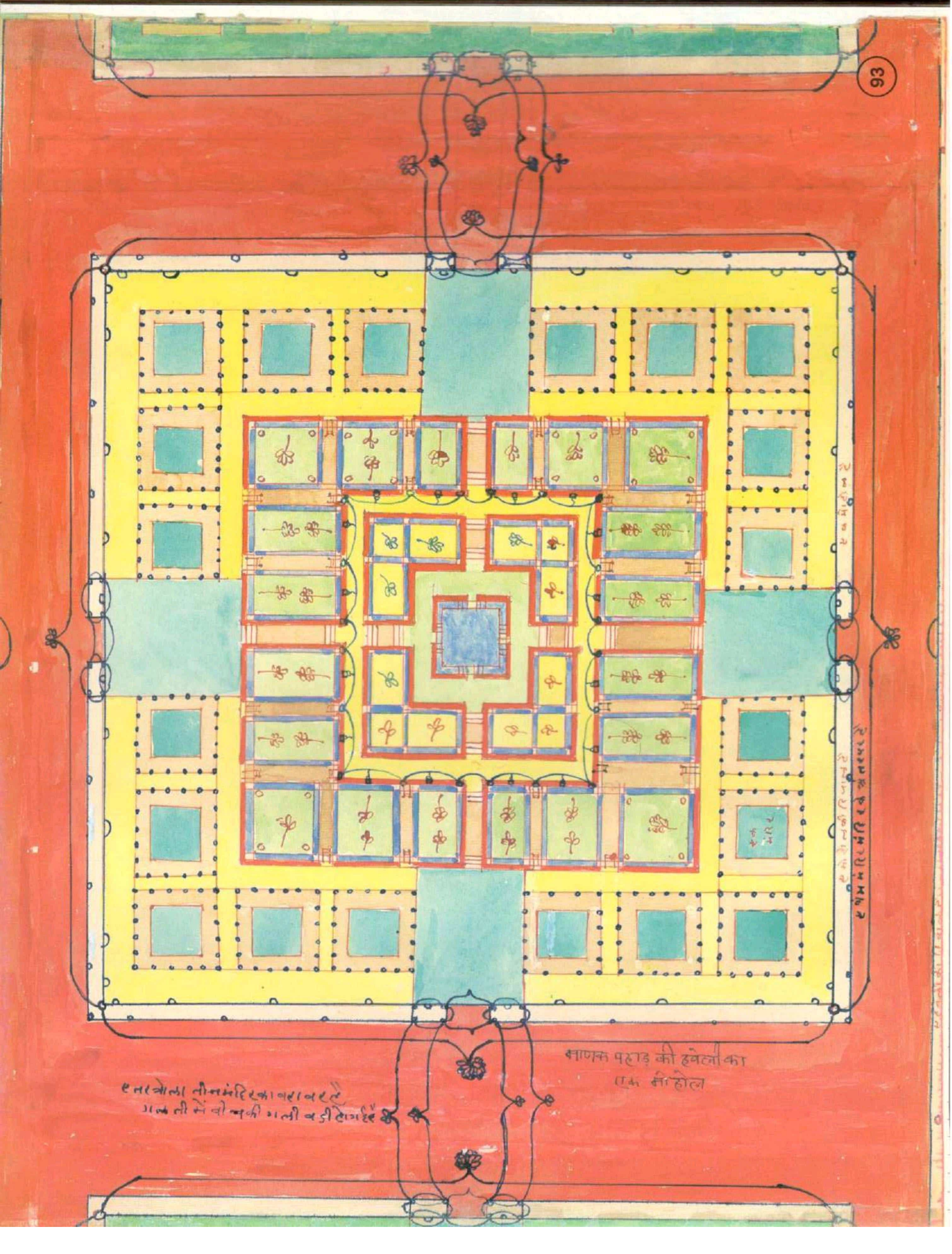
माणक पहाड़ की हवेली का
एक मोहोल
ए लरओला तीनमंदिरका बराबर है
गलती में बीचकी गली बड़ी होगई है

(22)

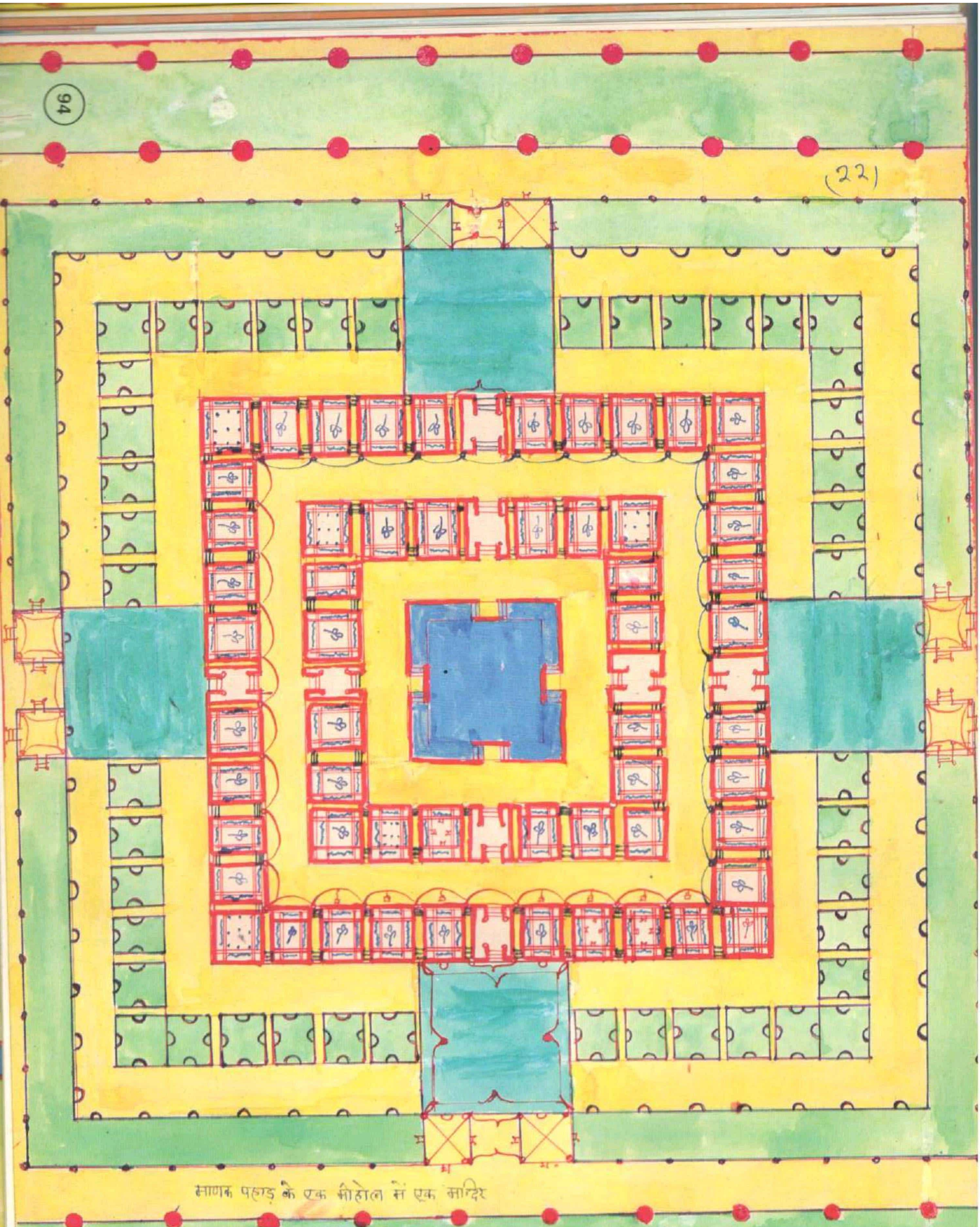

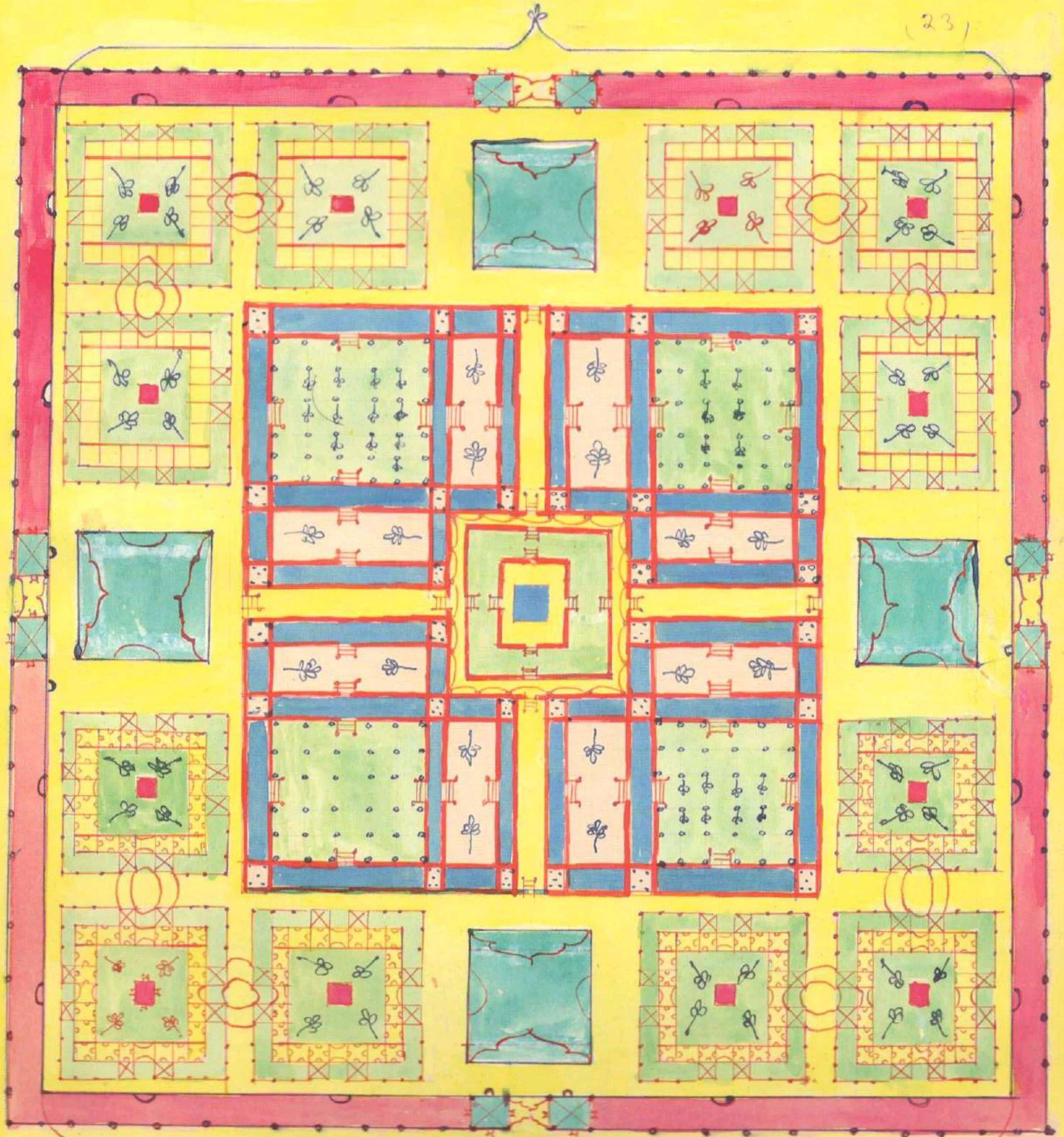

माणक पहाड़ :- एक हवेली में एक मोहोल

(24)

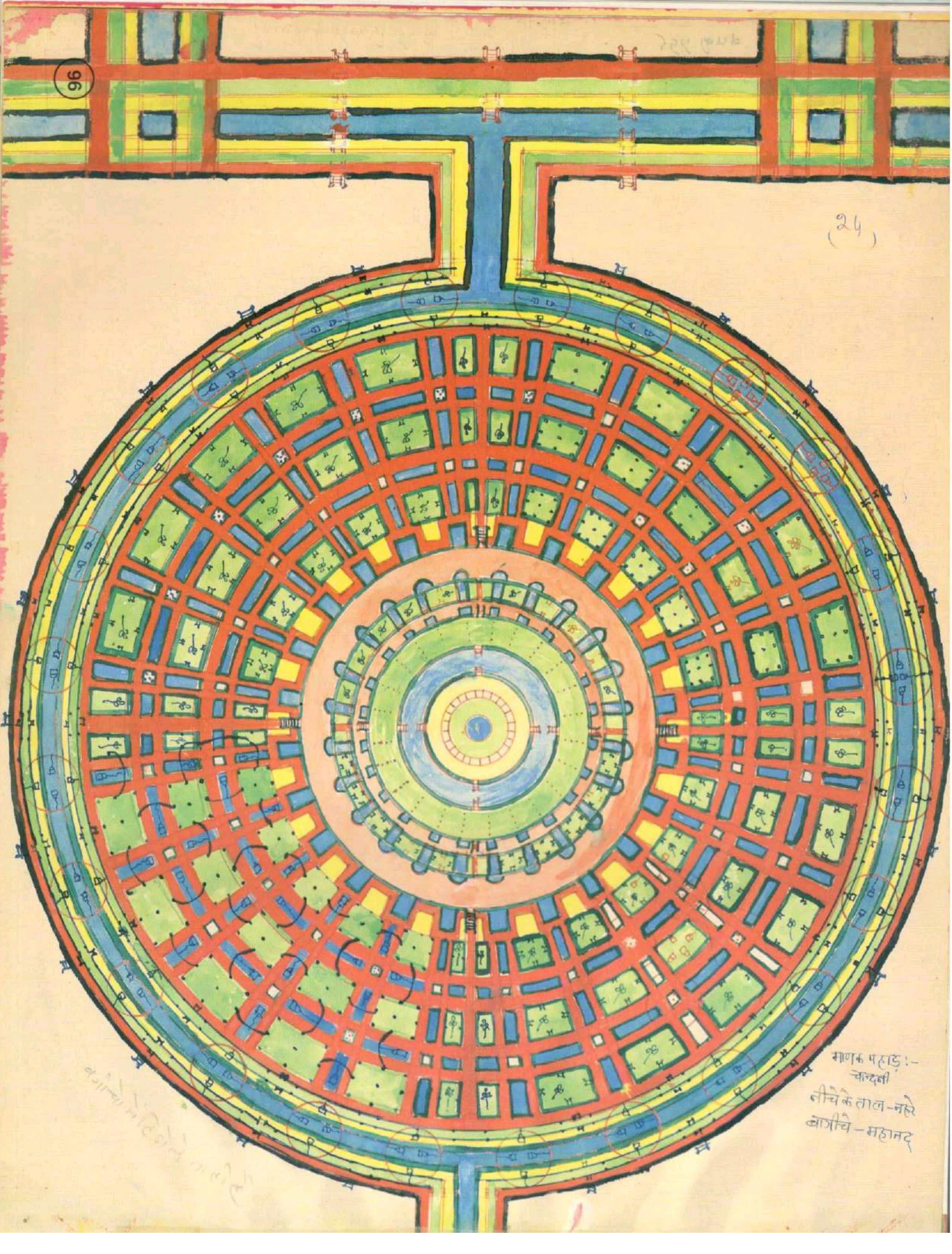

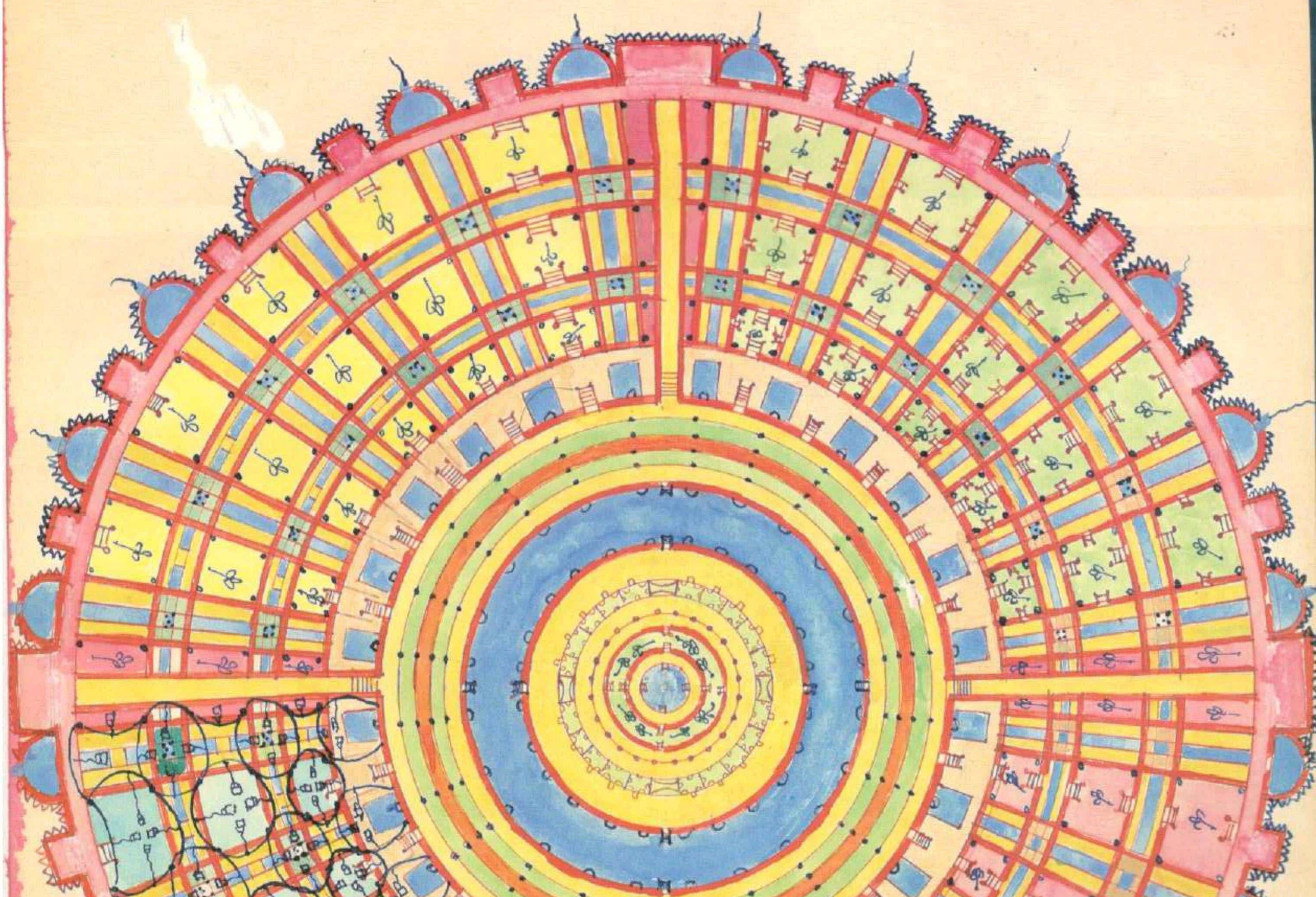
माणक पहाड की
चांदनी
की
एक नहर
97

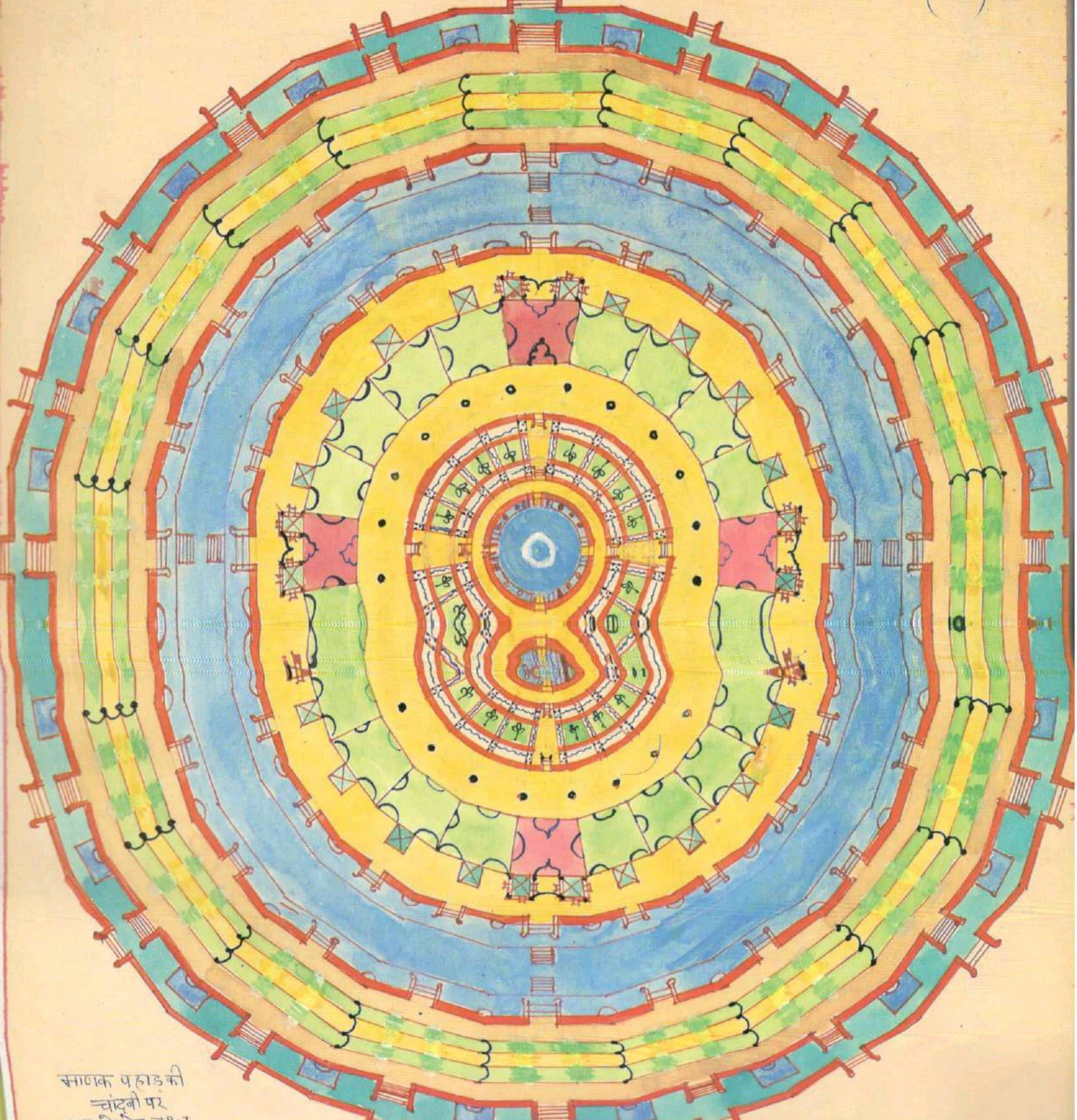

माणक पहाड की
चांदनी पर
टापू मोहोल तथा
दहलानें

(27)
माणक पहाड़ - टापू मोहोल की चांदनी
66

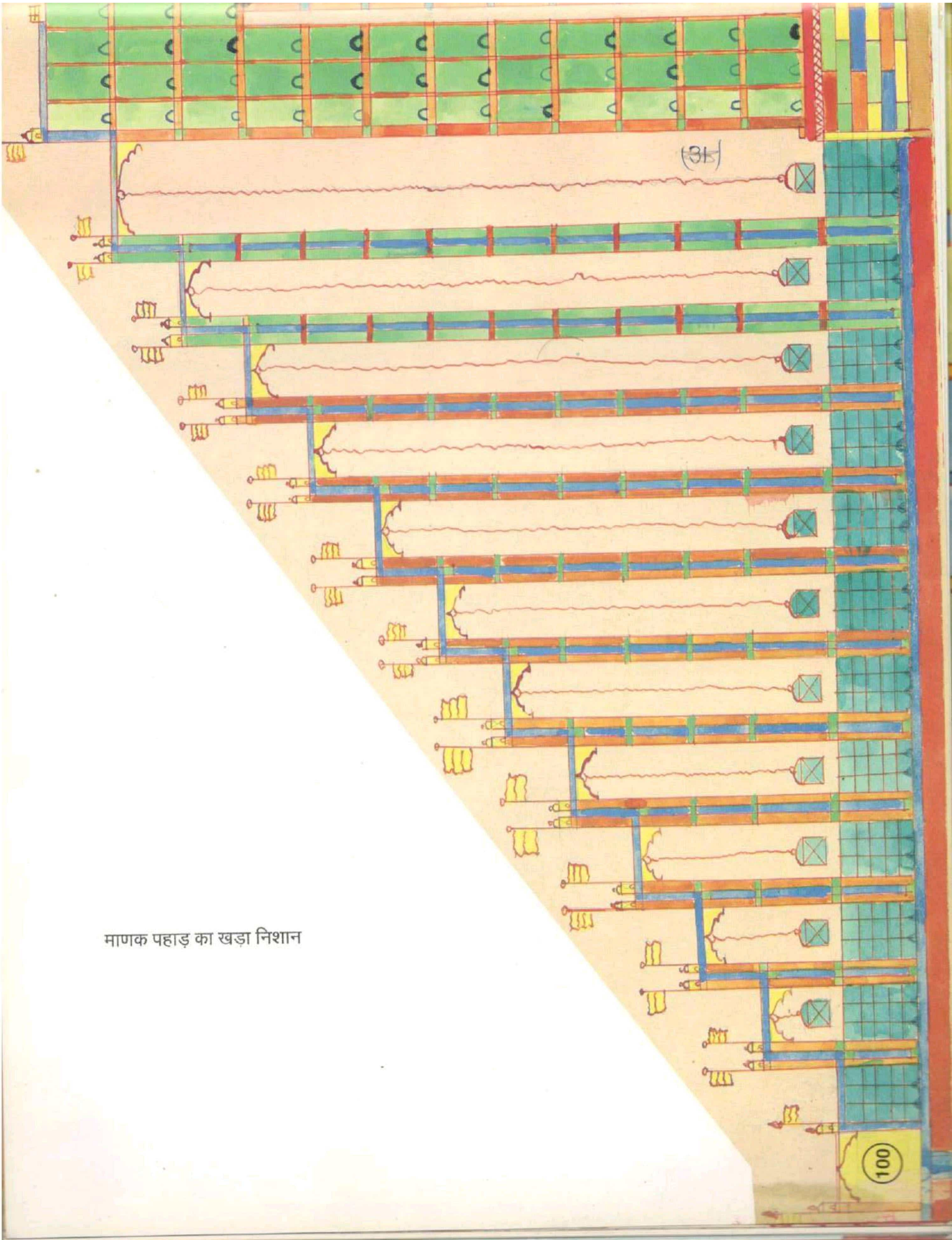

माणक पहाड़ का खड़ा निशान

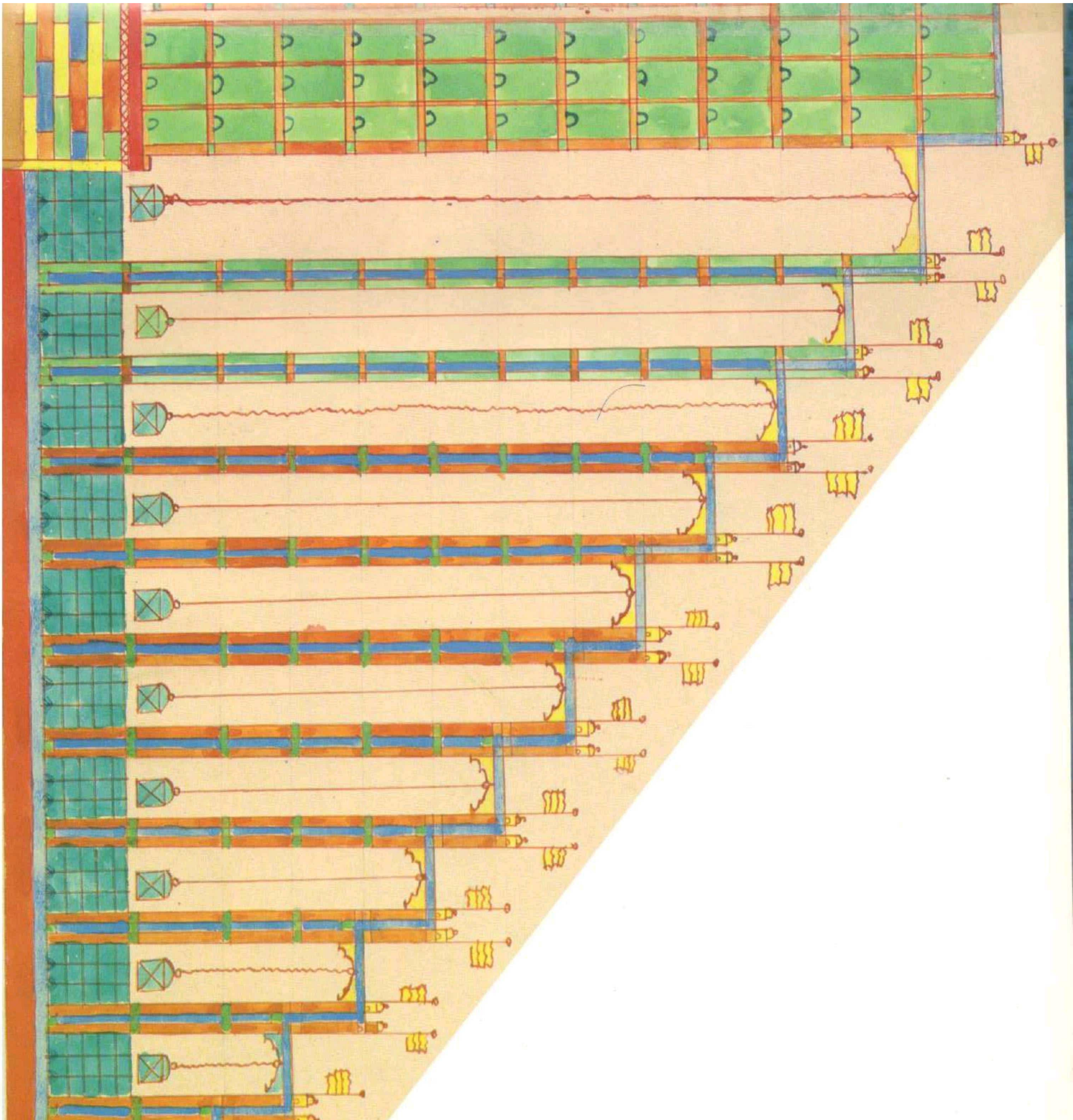

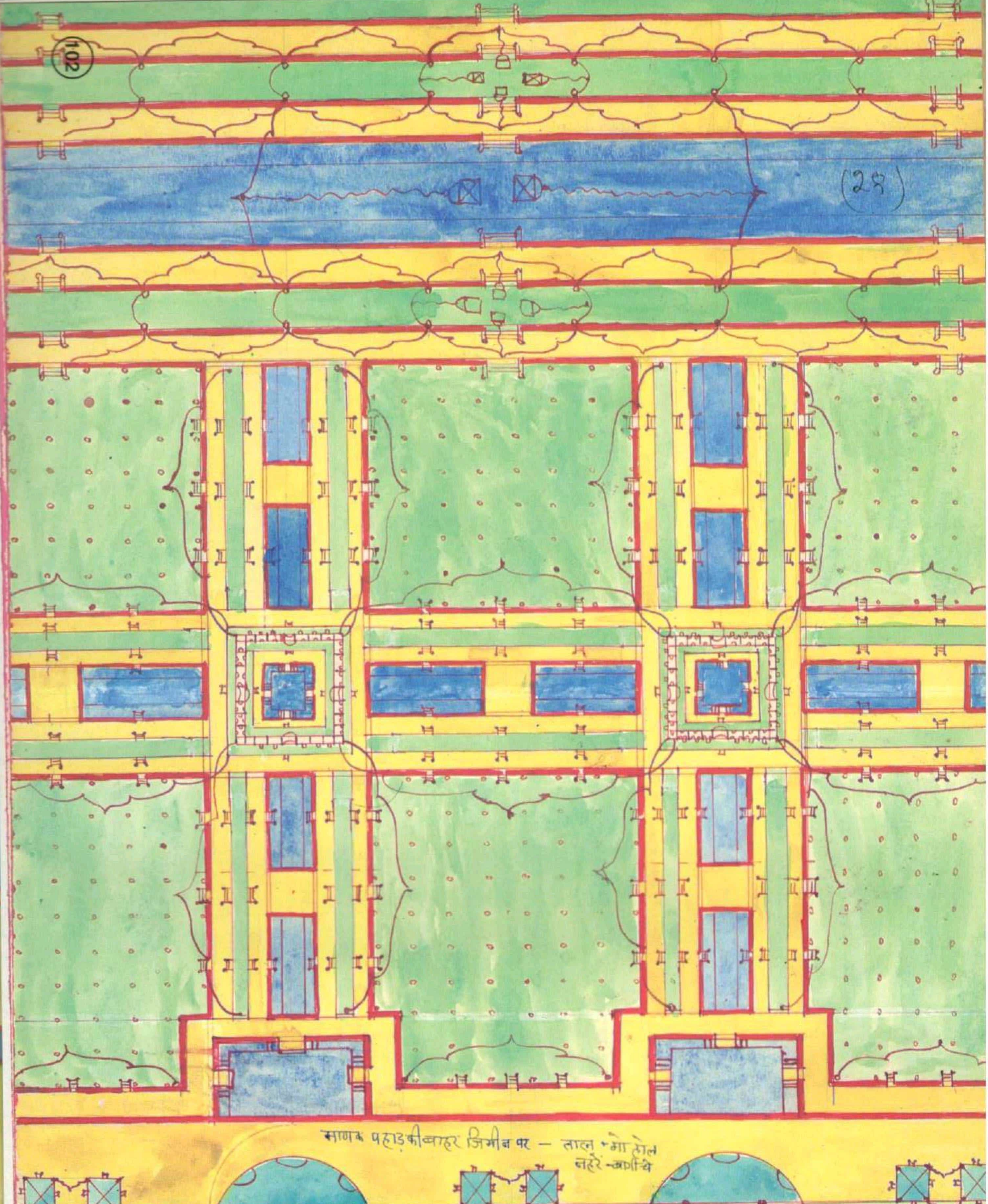

102
(28)
माणक पहाड़ की बाहर जिमीन पर — ताल

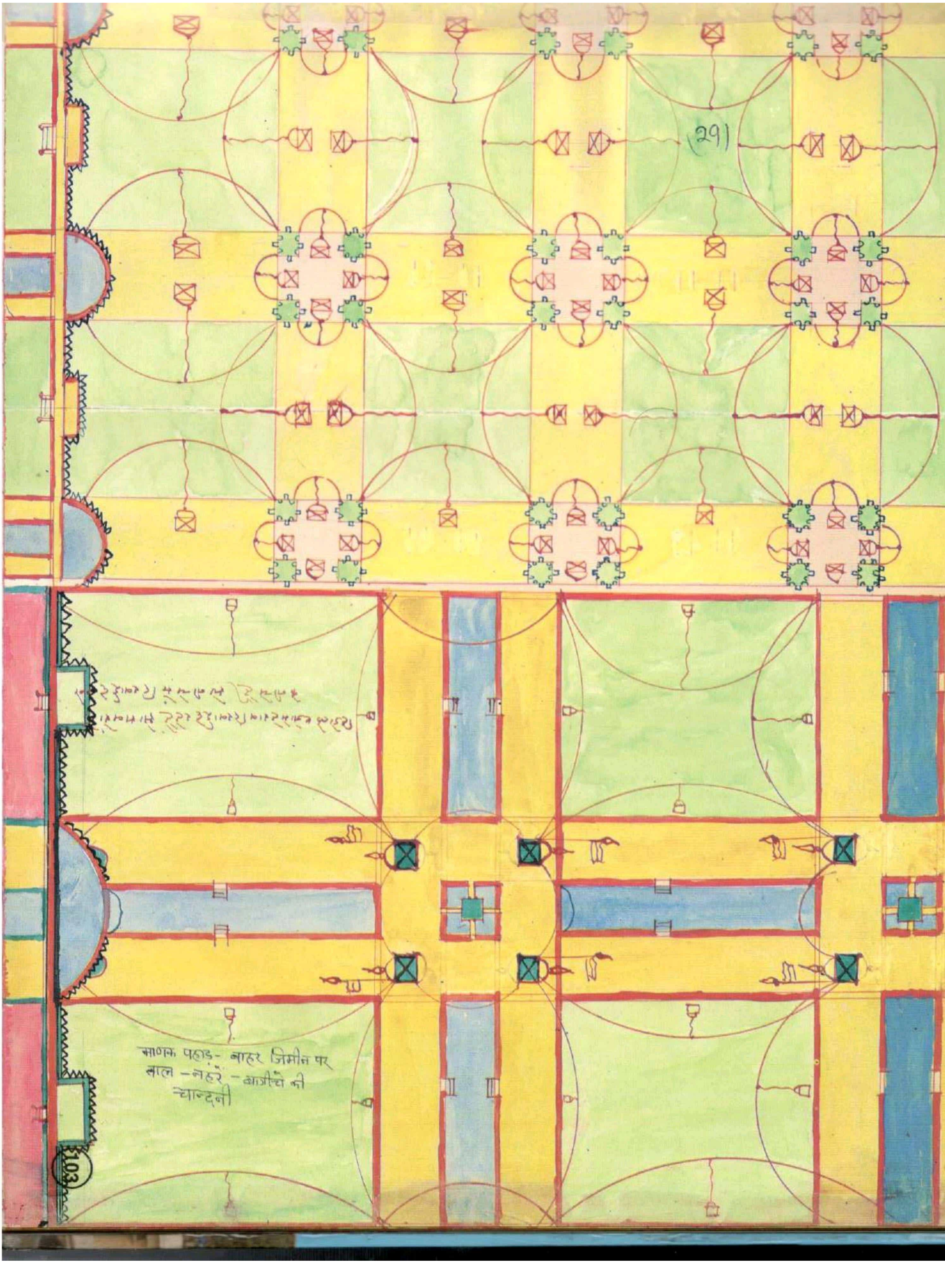
(29)
माणक पहाड़ - बाहर जिमीन पर
लाल - नहरें - बागीचे की
चान्दनी
103

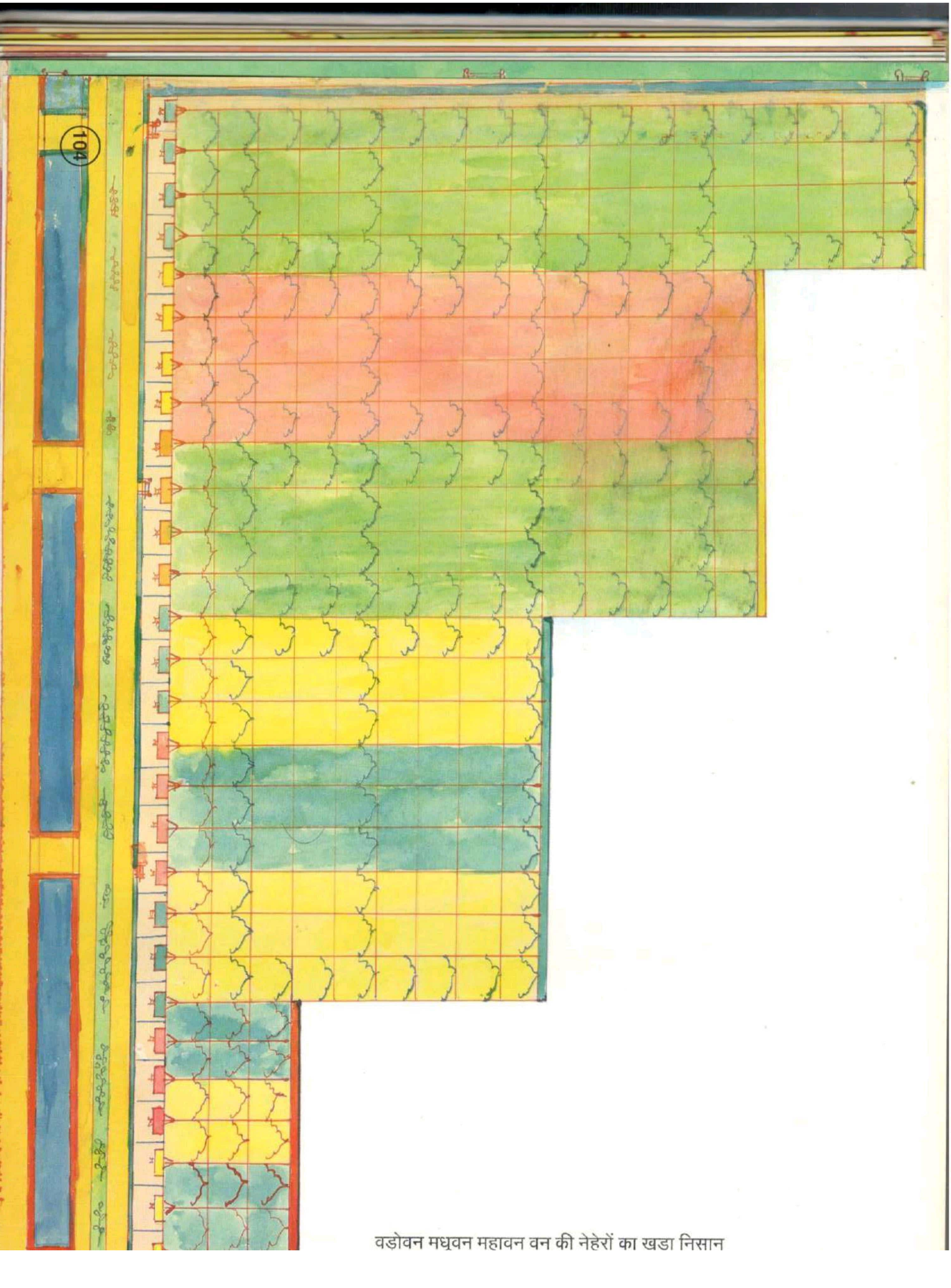

वड़ोवन मधुवन महावन वन की नेहेरों का खडा निसान

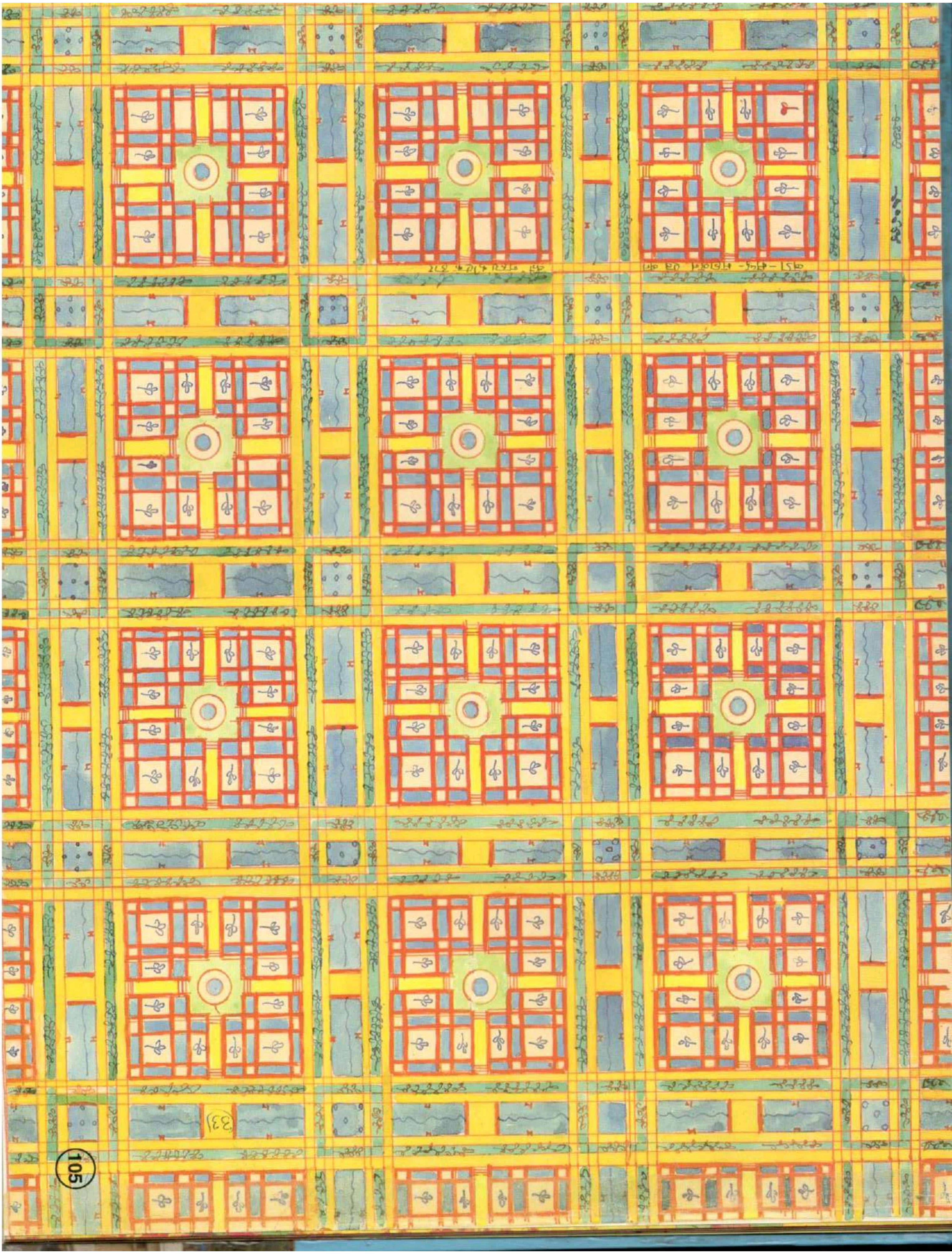

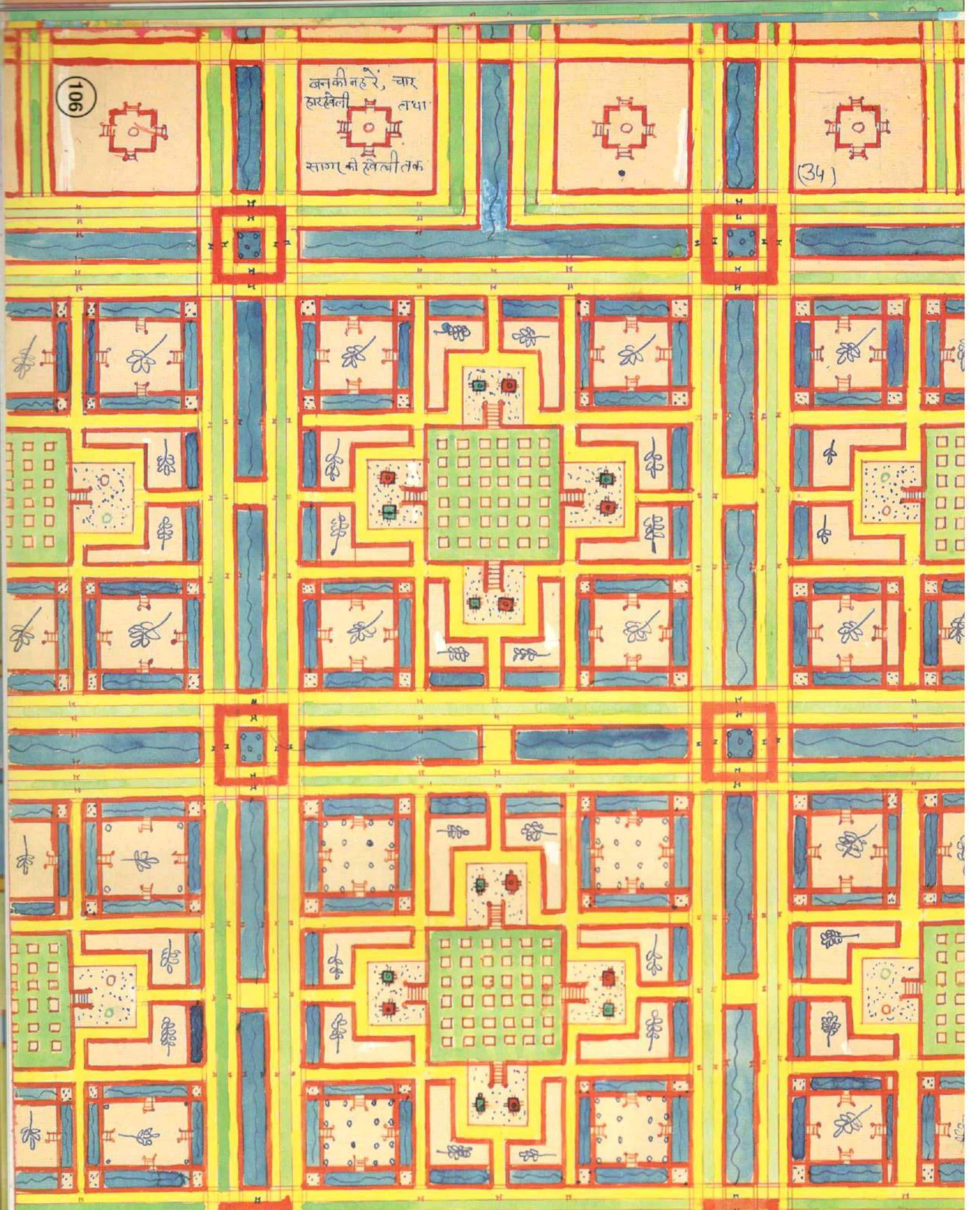
106
बनकी नहरें, चार
हारहवेली तथा
सागर की हवेली तक
(34)

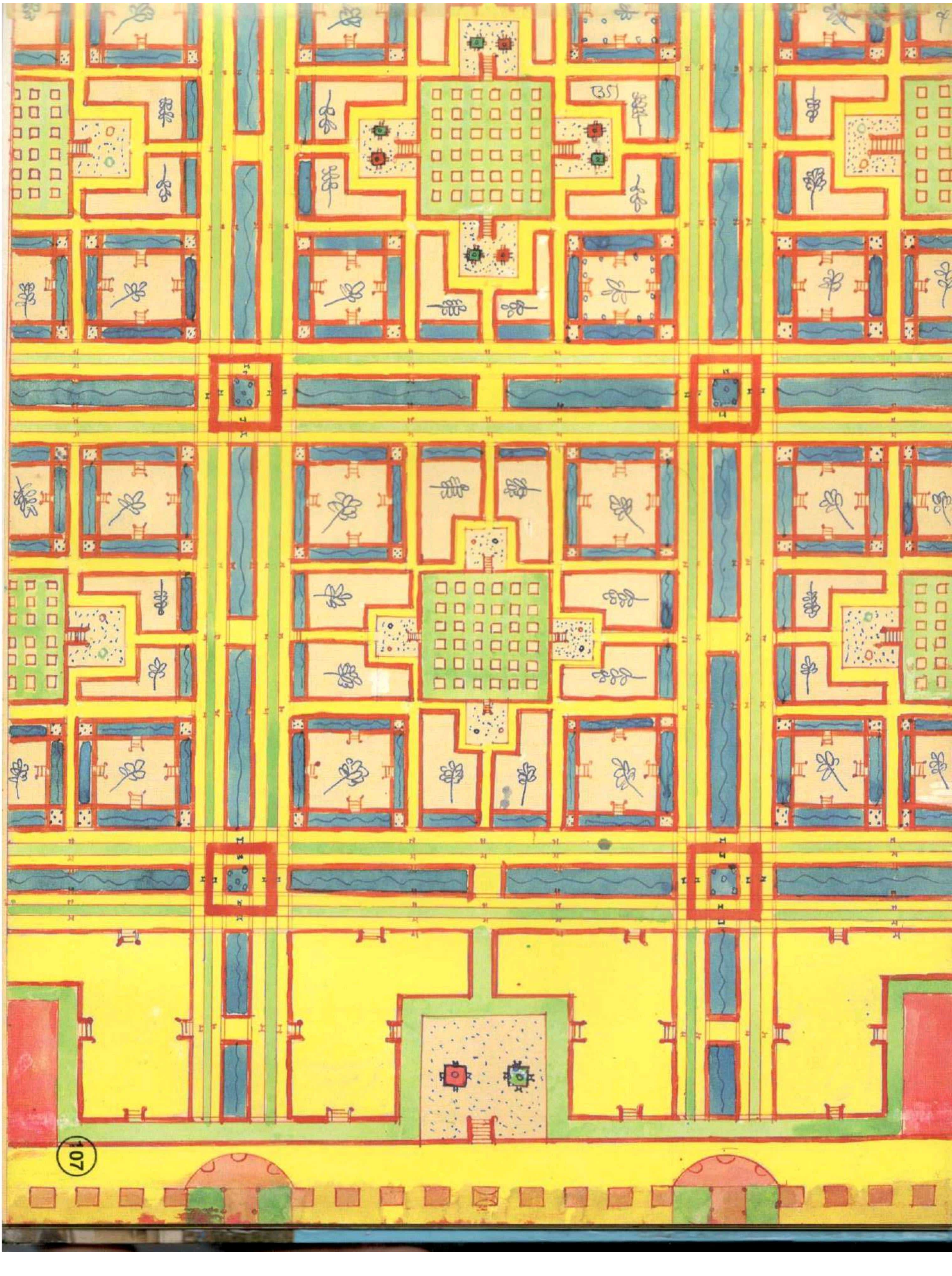
107

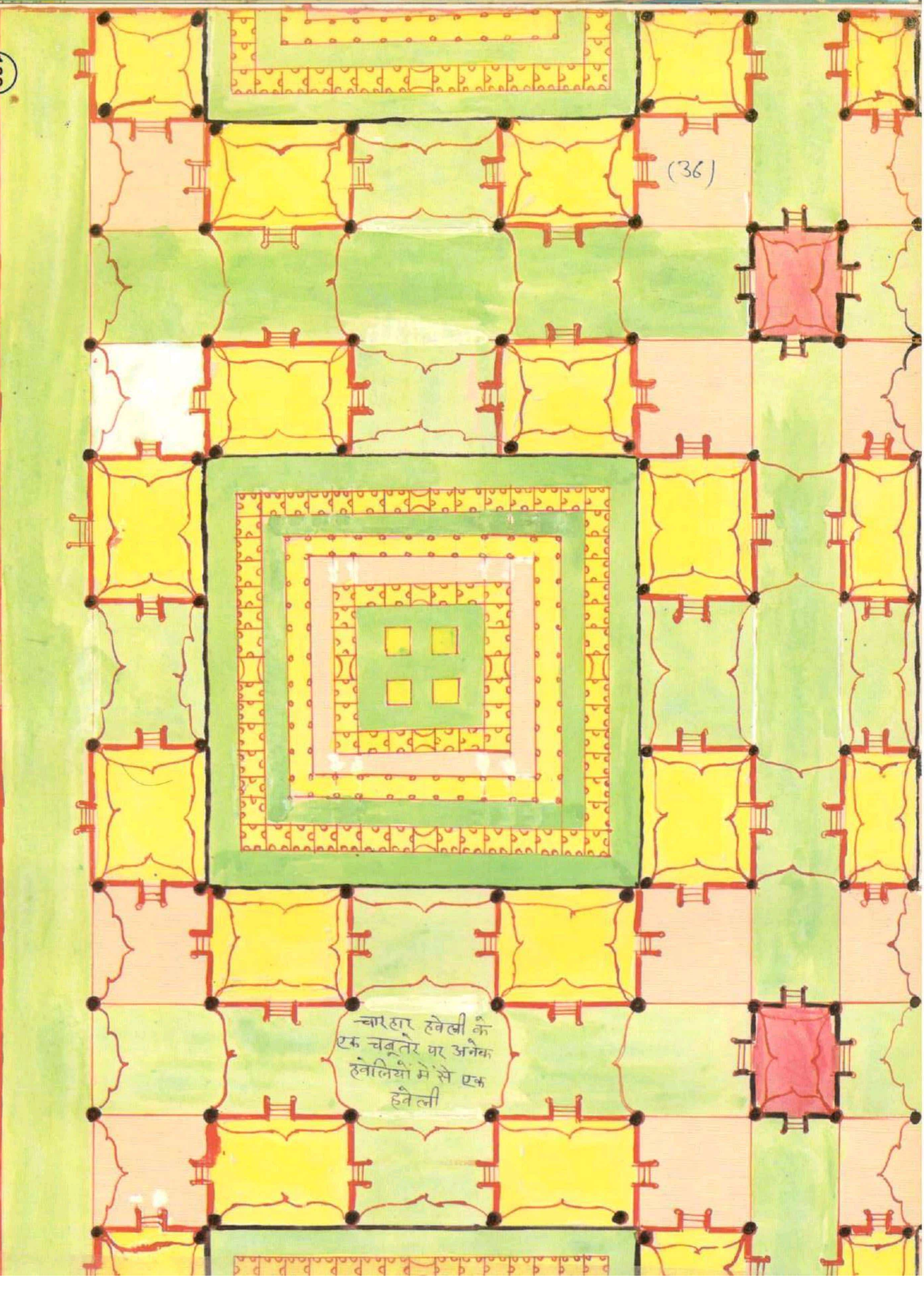

चारहार हवेली के एक चबूतरे पर अनेक हवेलियों में से एक हवेली

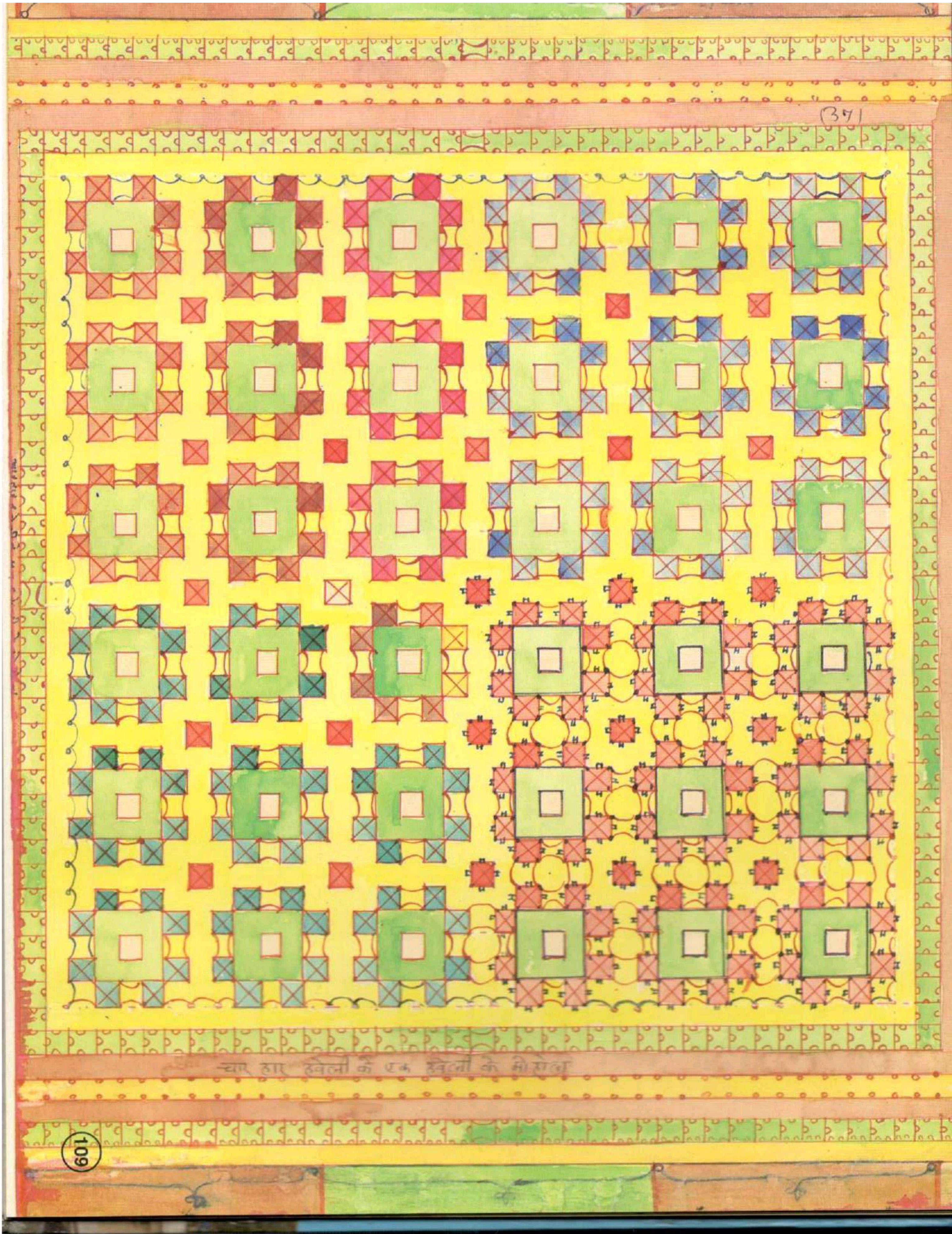
(371)
चार हार हवेली के एक हवेली के मोहल्ला

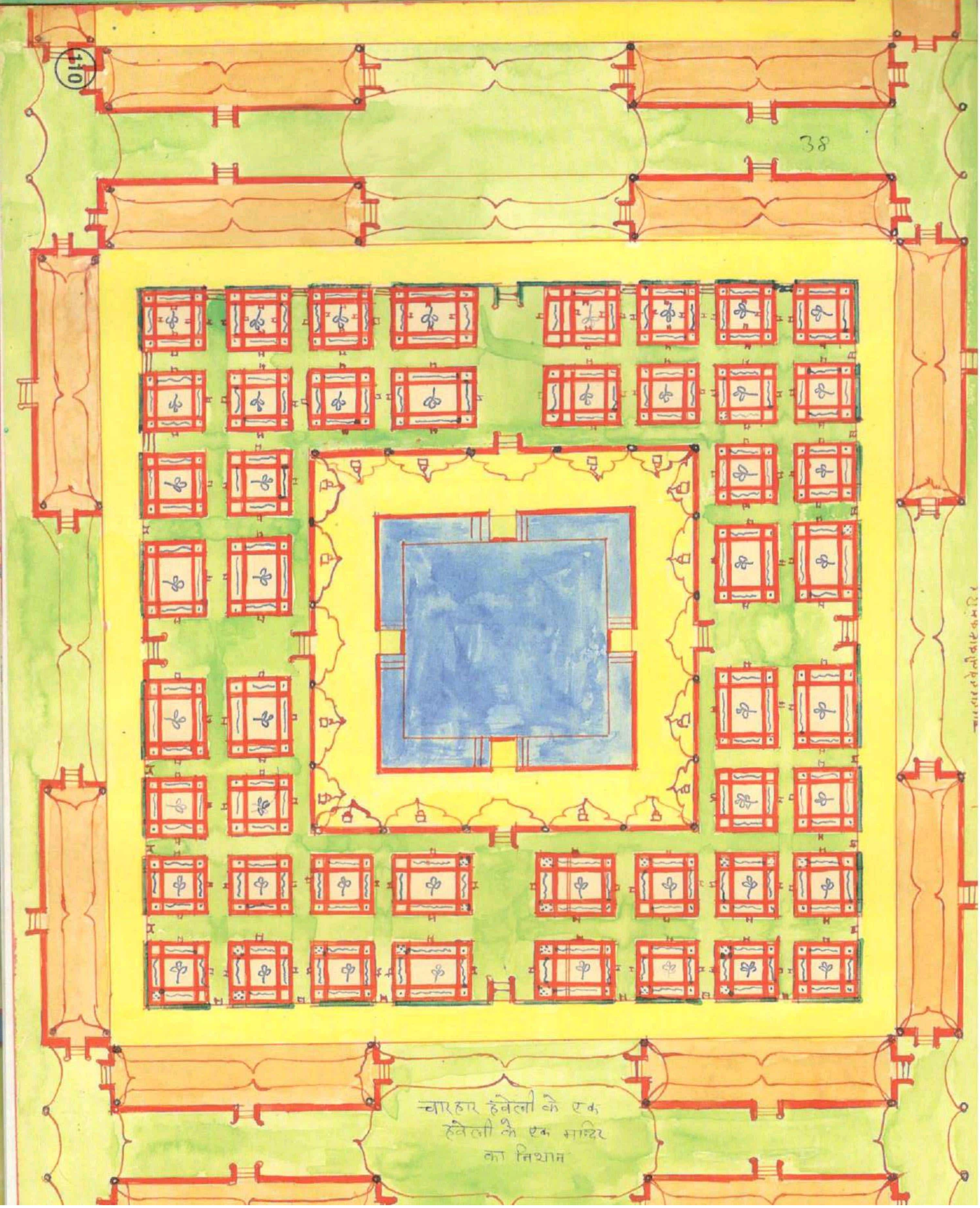
110
38
चारहार हवेली के एक
हवेली के एक मन्दिर
का निशान

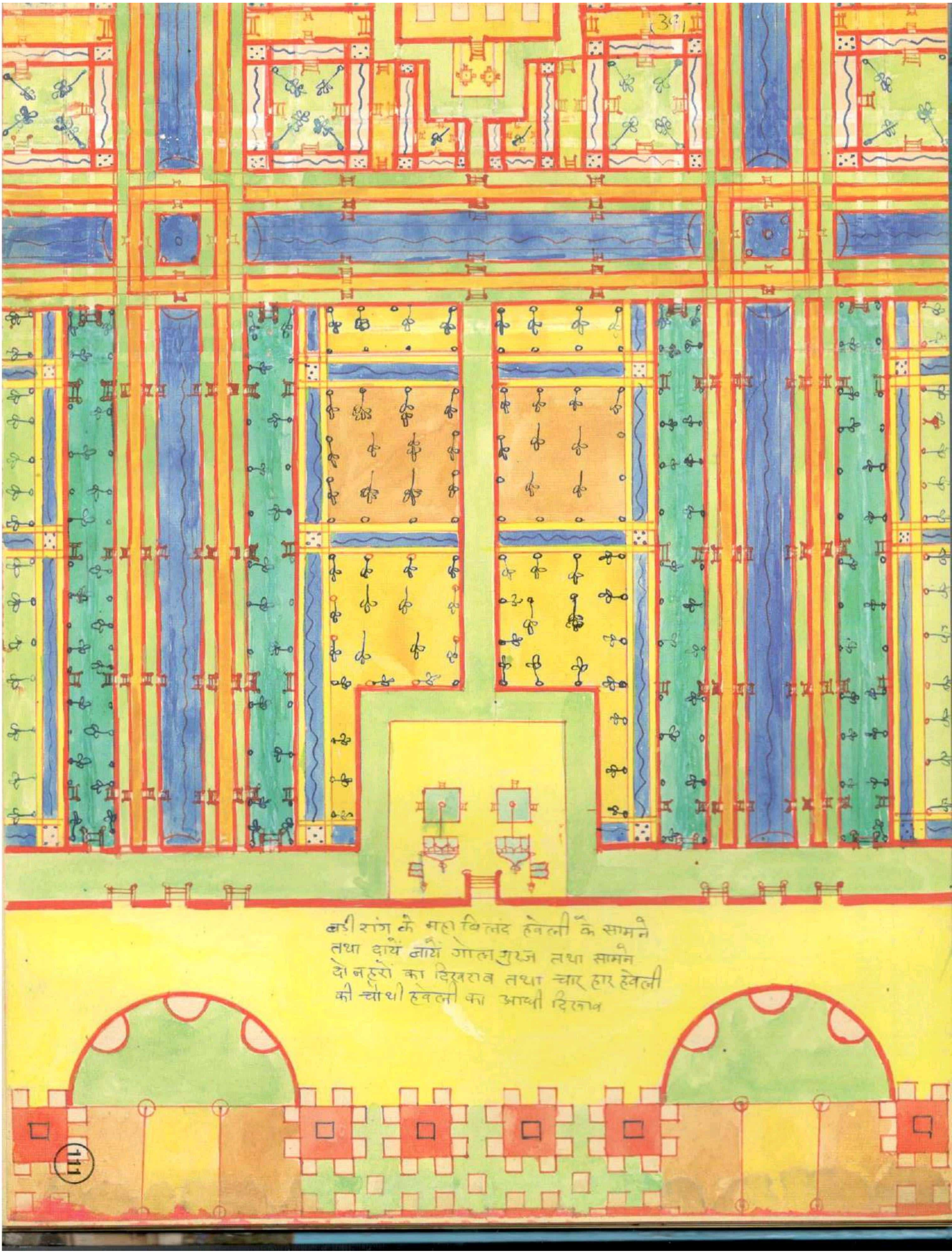
38
बड़ी रांग के महा विलंद हेवली के सामने
तथा दायें बायें गोल गुरज तथा सामने
दो नहरों का दिखराव तथा चार हार हेवली
की चौथी हेवली का आधी दिखाव

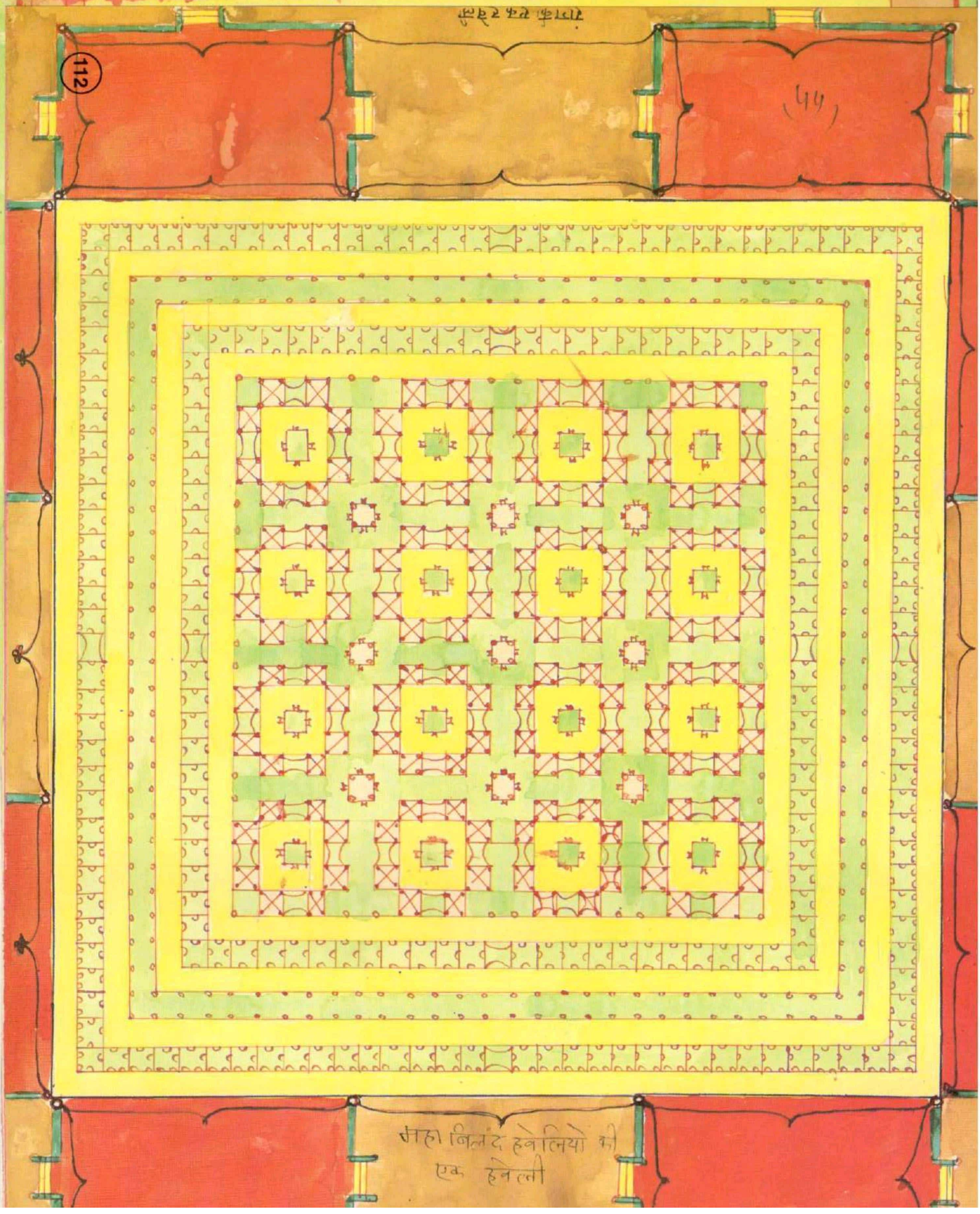
(५५)
महा बिलंद हवेलियो की
एक हवेली

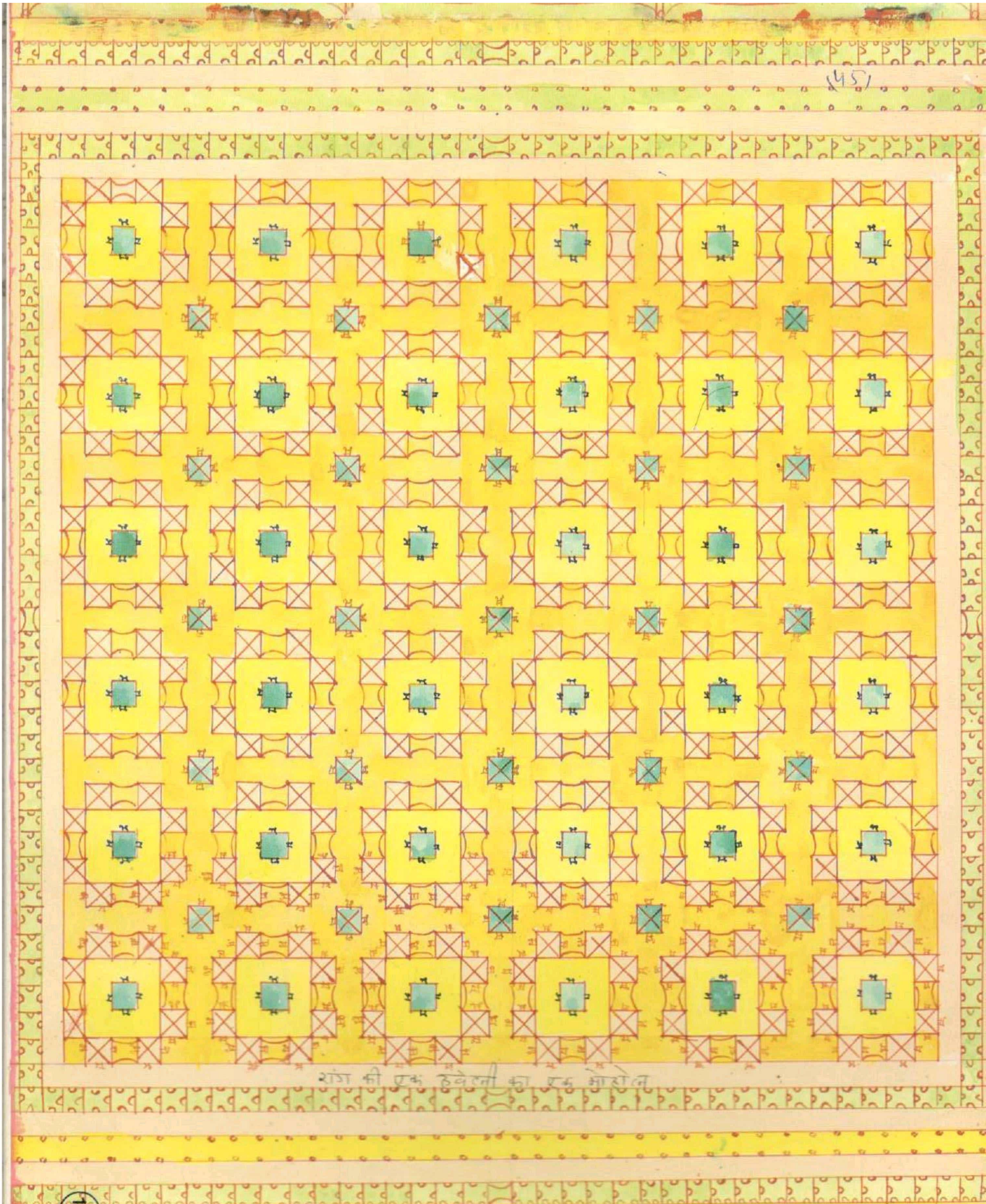
रंग की एक हवेली का एक मोहोल

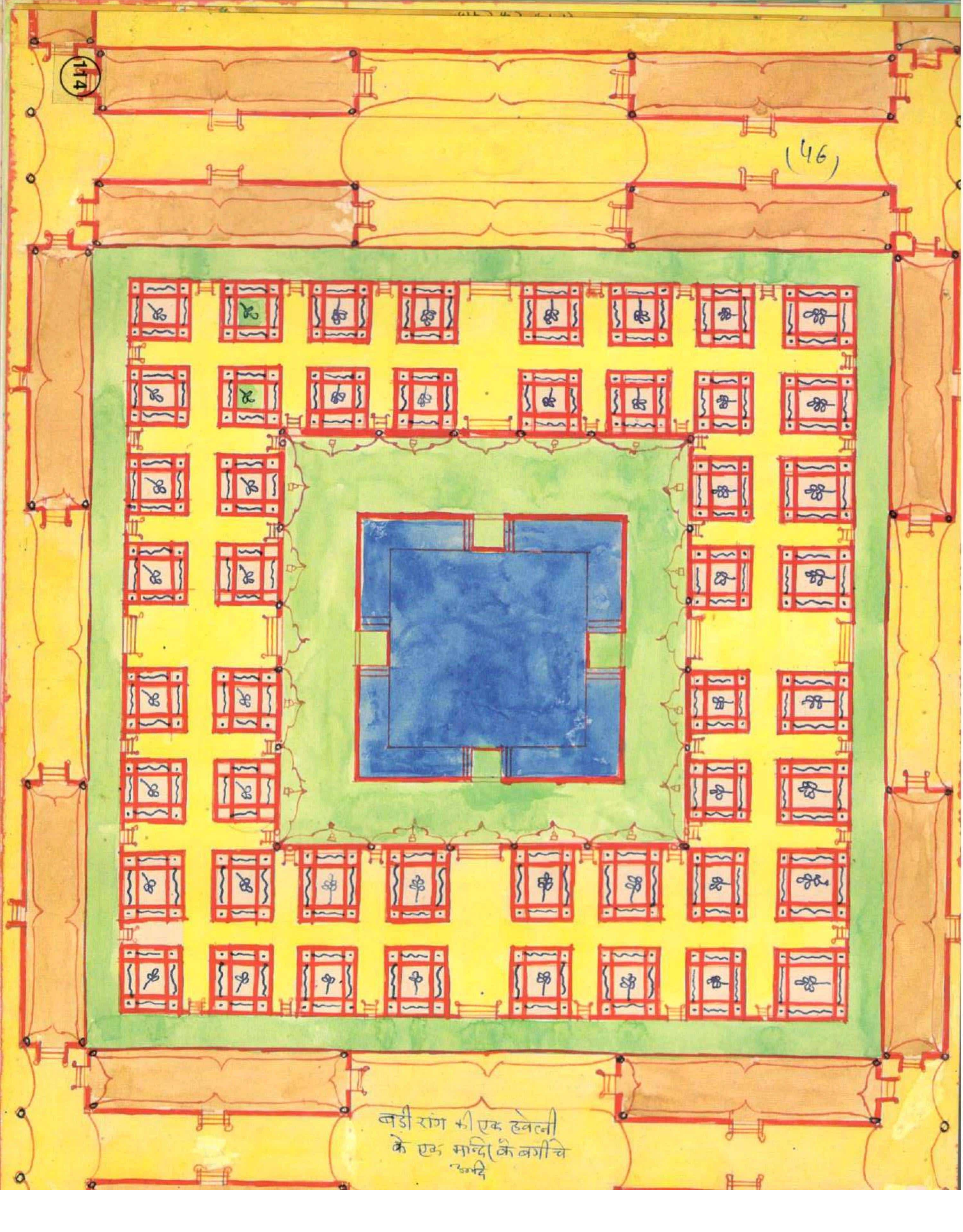
114
(46)
बडी रांग की एक हवेली
के एक मन्दिर के बगीचे
आदि

(57)

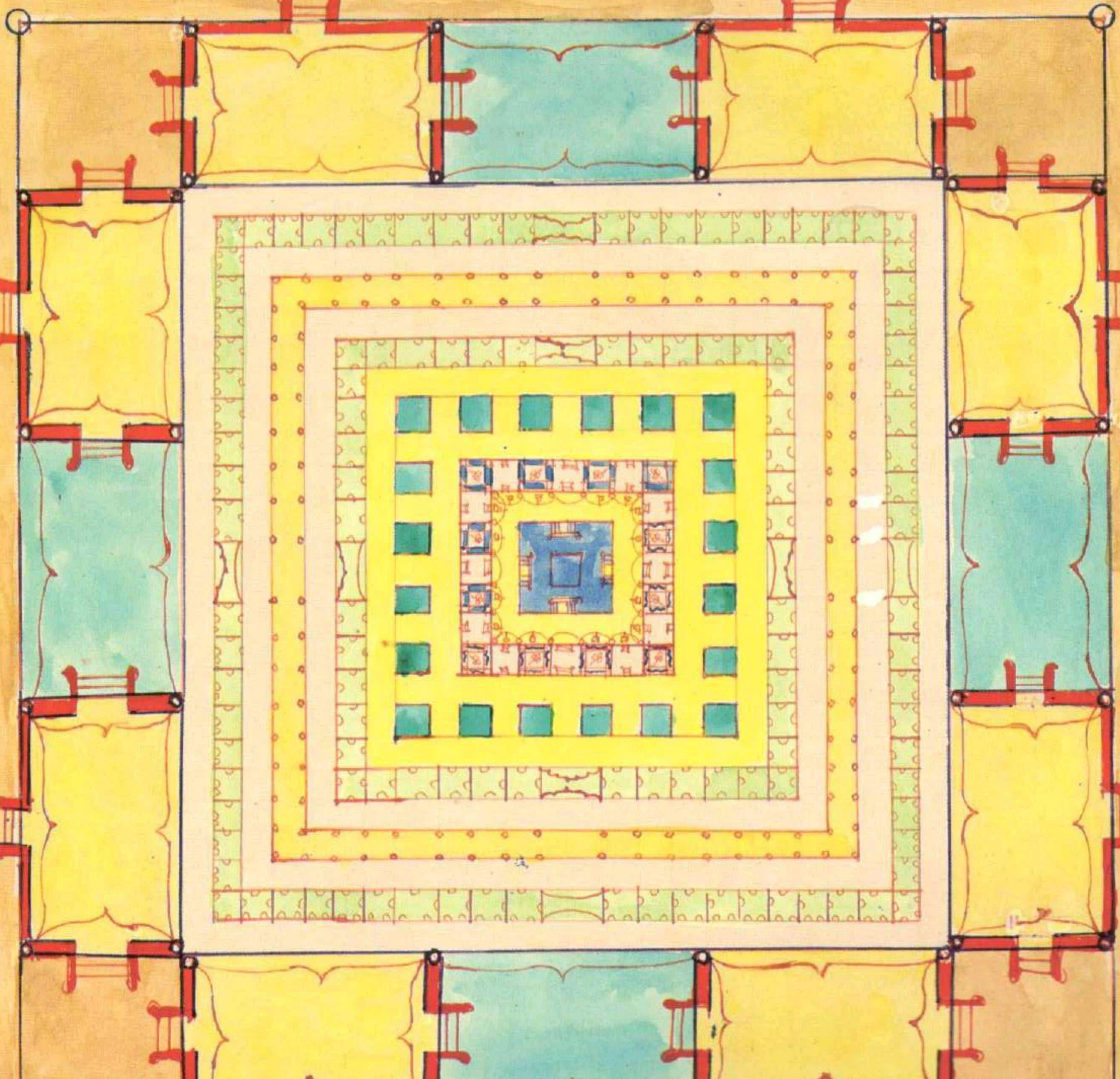

बड़ी राग की महा विदानन्द हेलीको
के त्रिपोलिया के मध्य एक
हवेली

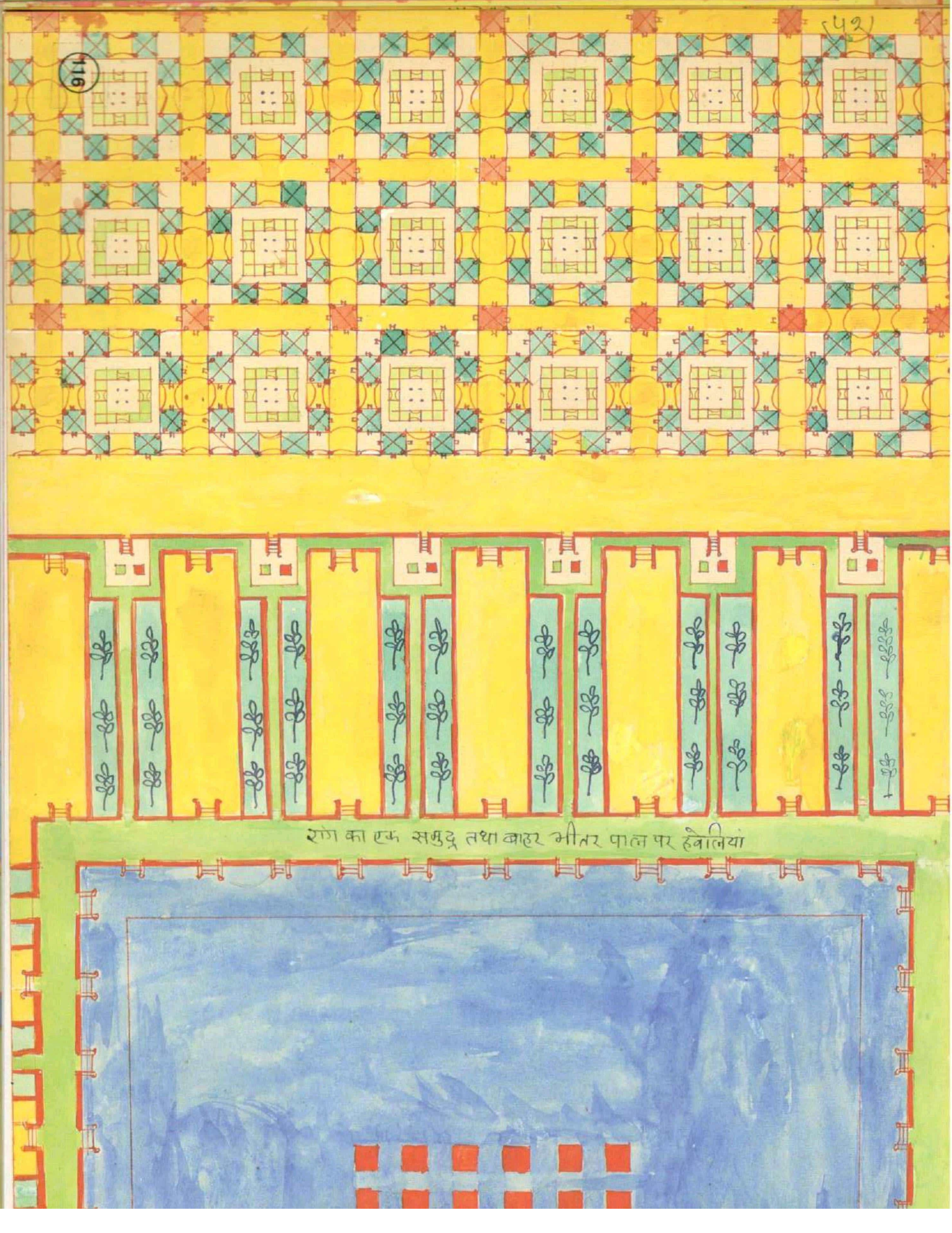
(५२)
116
रांग का एक समुद्र तथा बाहर भीतर पाल पर हवेलियां

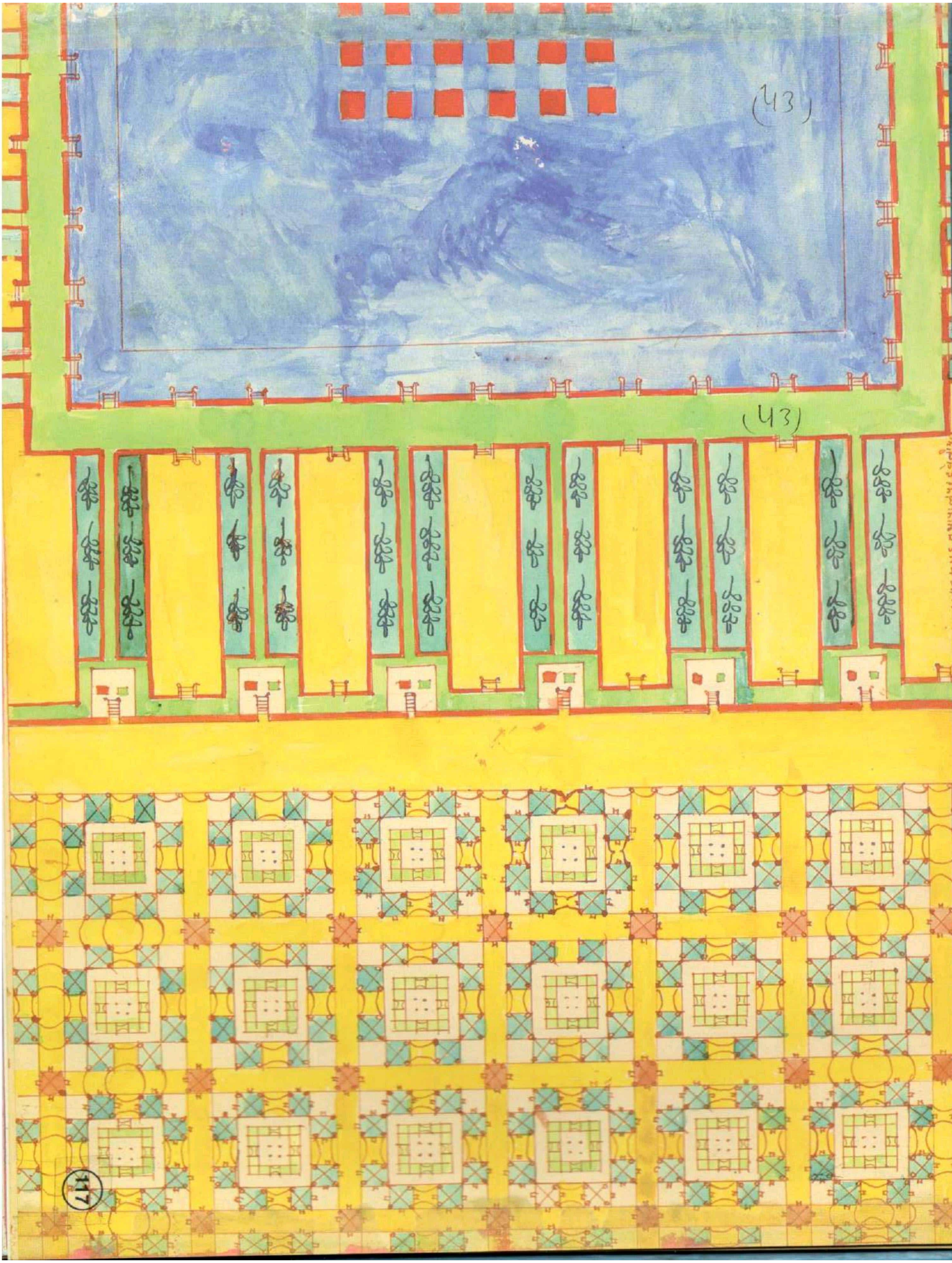
(43)
(43)

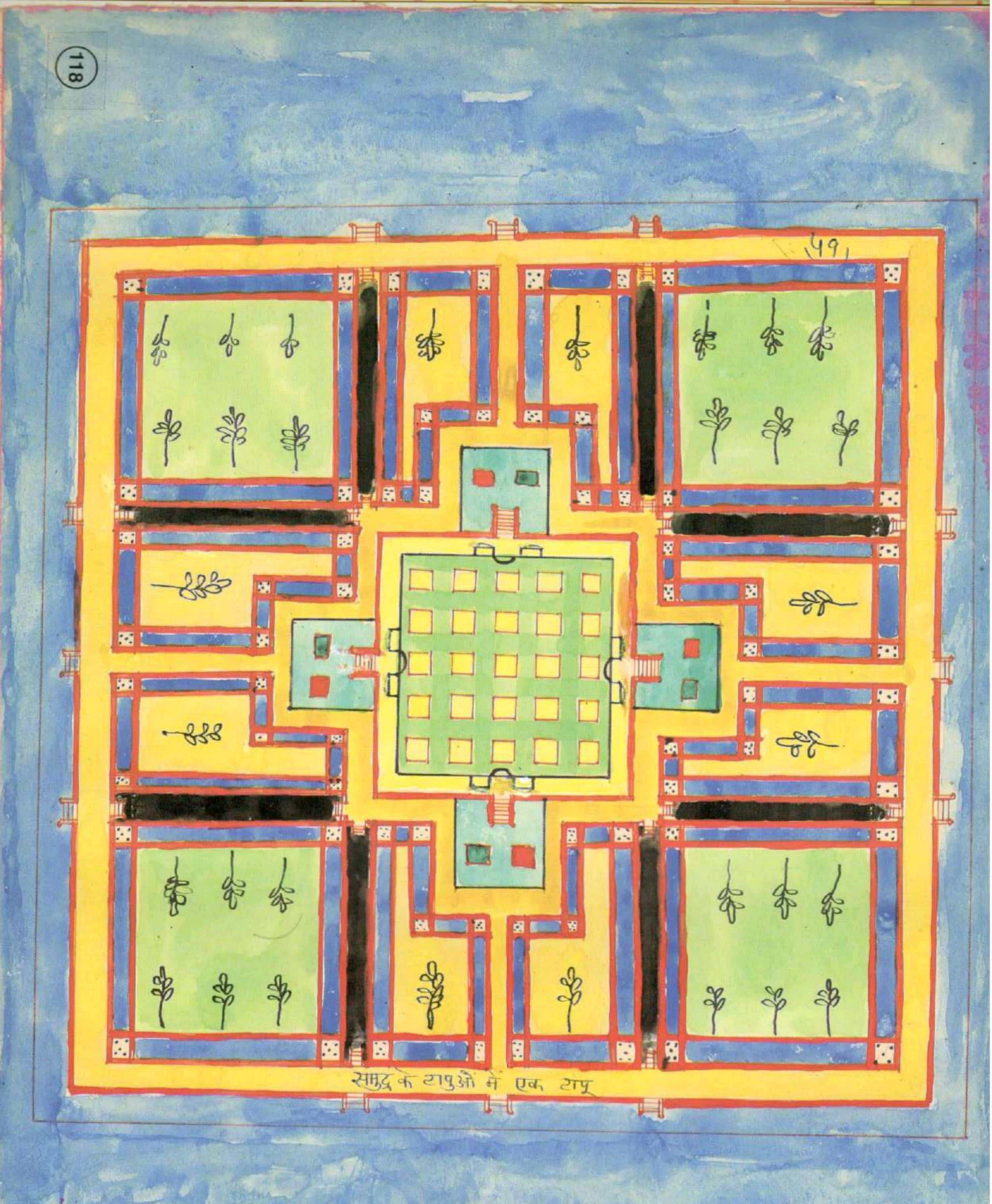

(49)
समुद्र के टापुओं में एक टापू

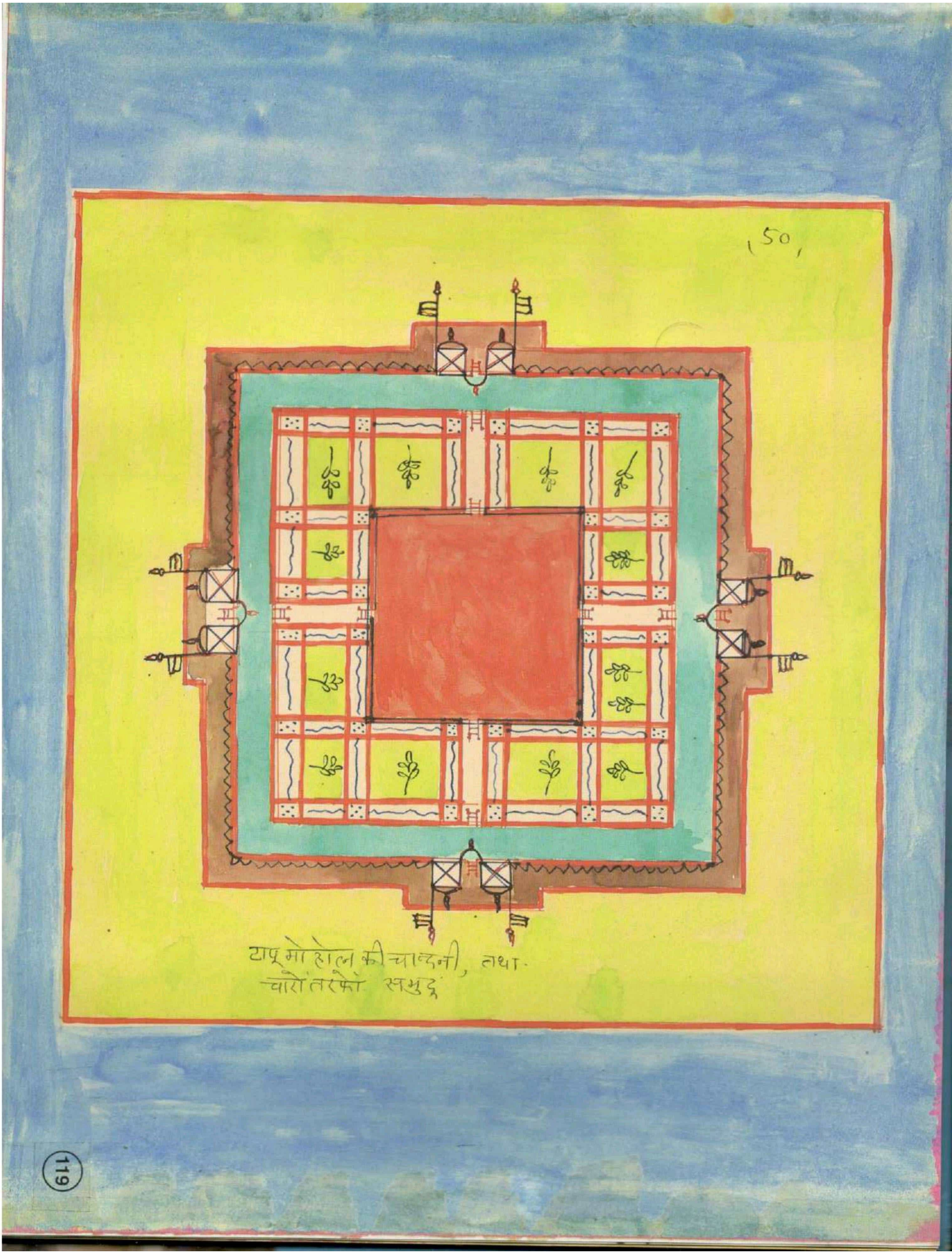
(50)
टापू मो होटल की चान्दनी, तथा
चारों तरफों समुद्र

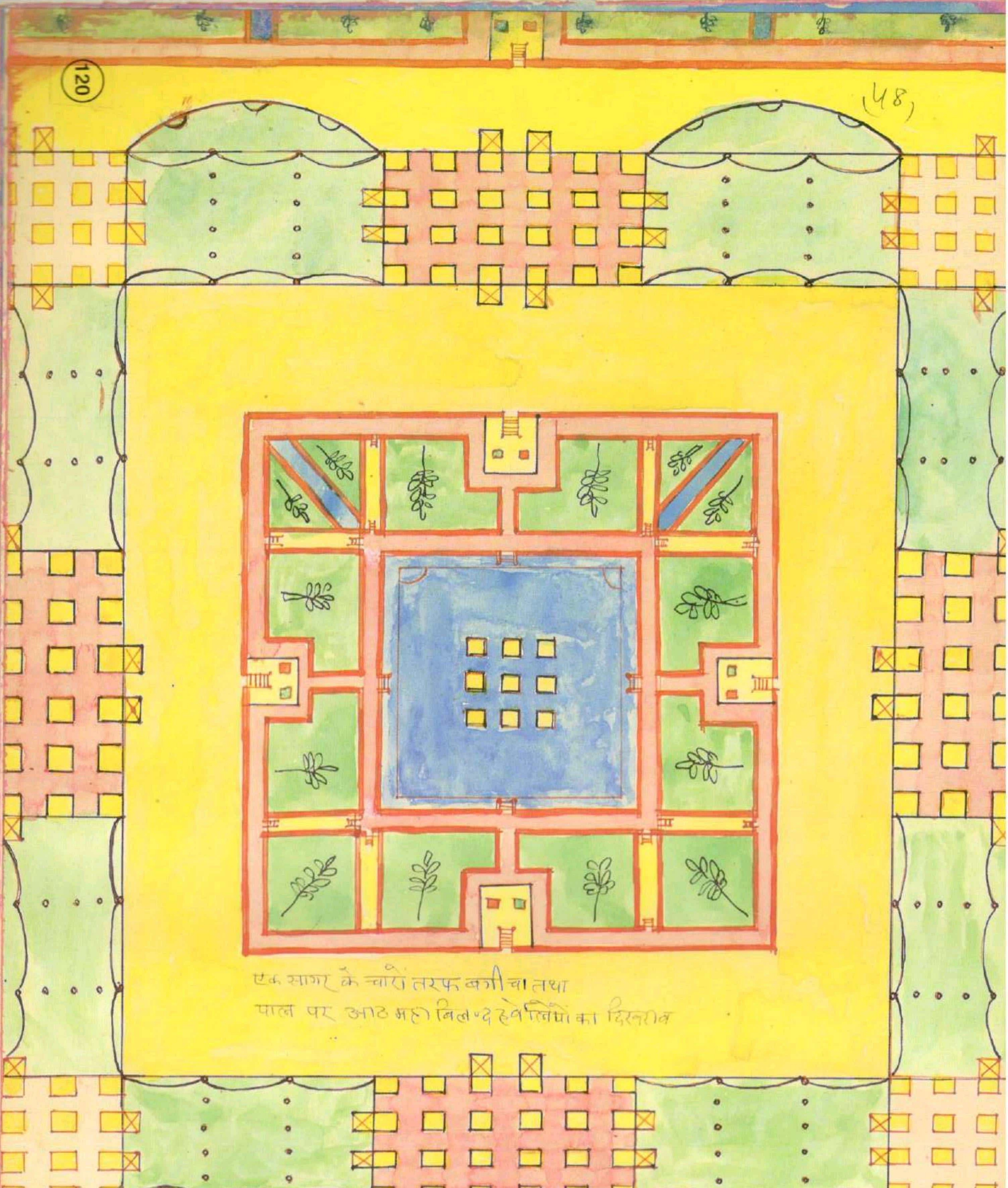
एक सागर के चारों तरफ बगीचा तथा
पाल पर आठ महा बिलन्द हवेलियों का दिखलाव

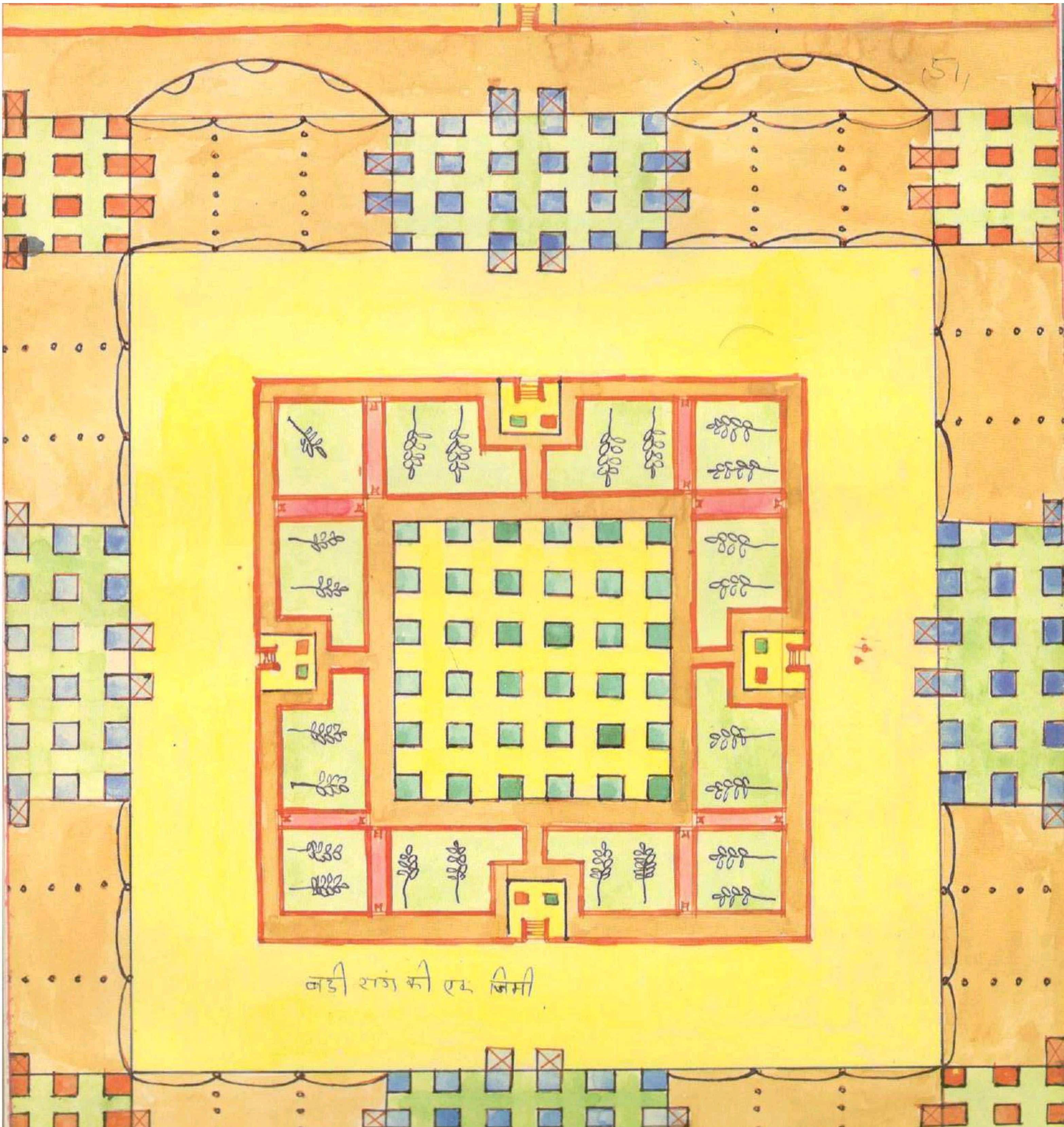
(51)
बड़ी रांग की एक जिमी

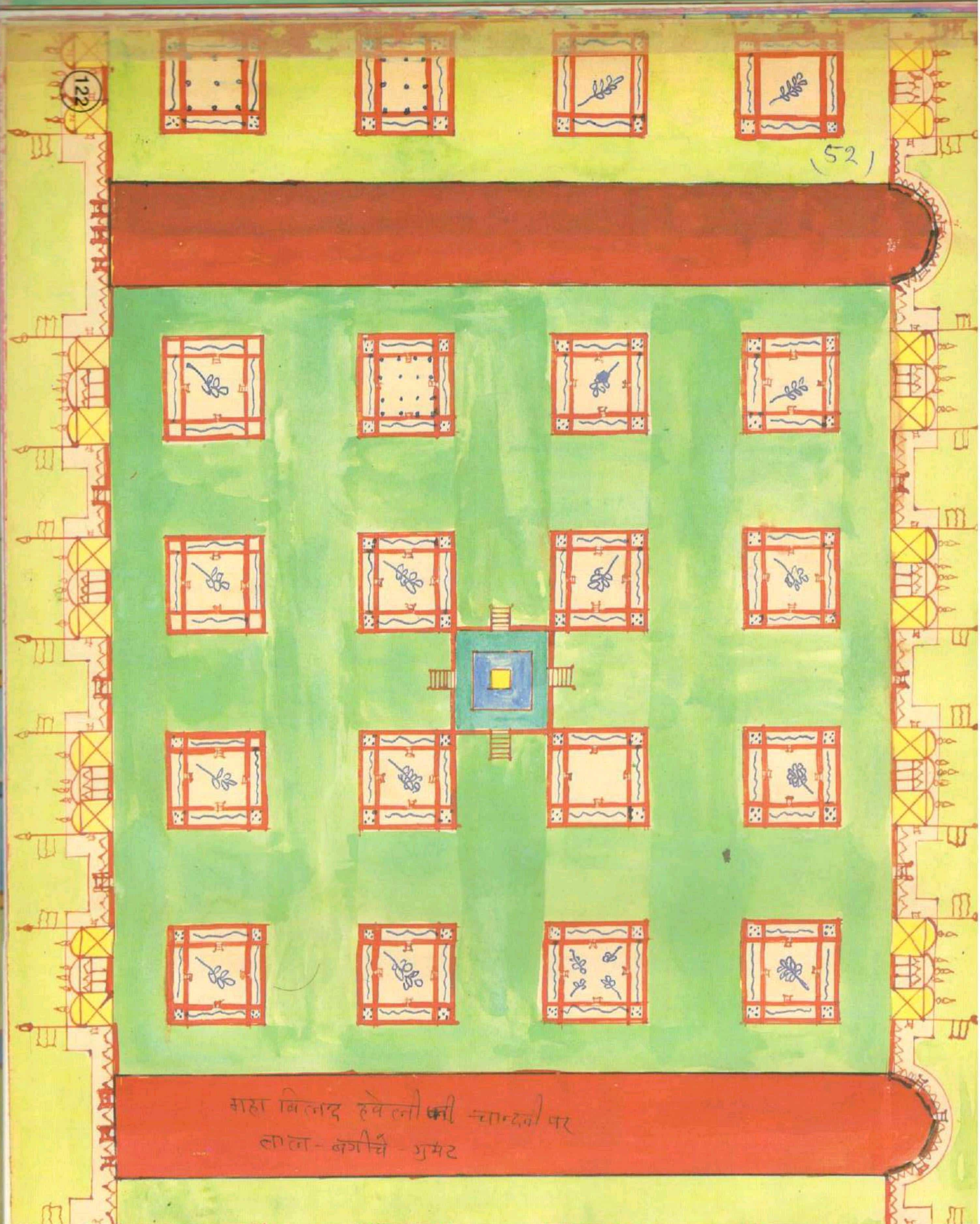
122
(52)
महा बिलन्द हवेली की चान्दनी पर
लाल - बगीचे - गुमट

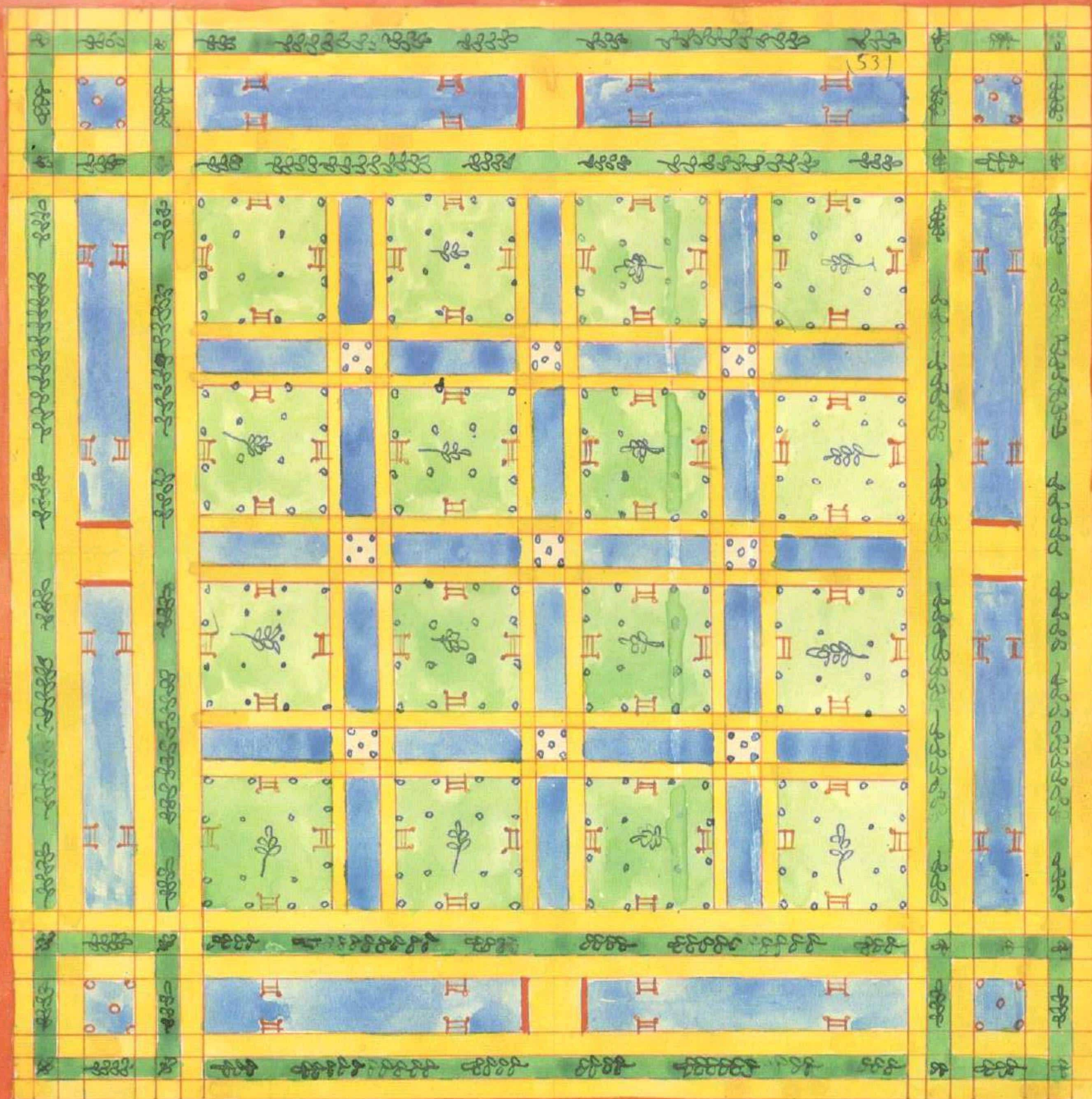

माहा मिलन्द एक हवेली की
चांदनी पर बगीचों मे एक बगीचा

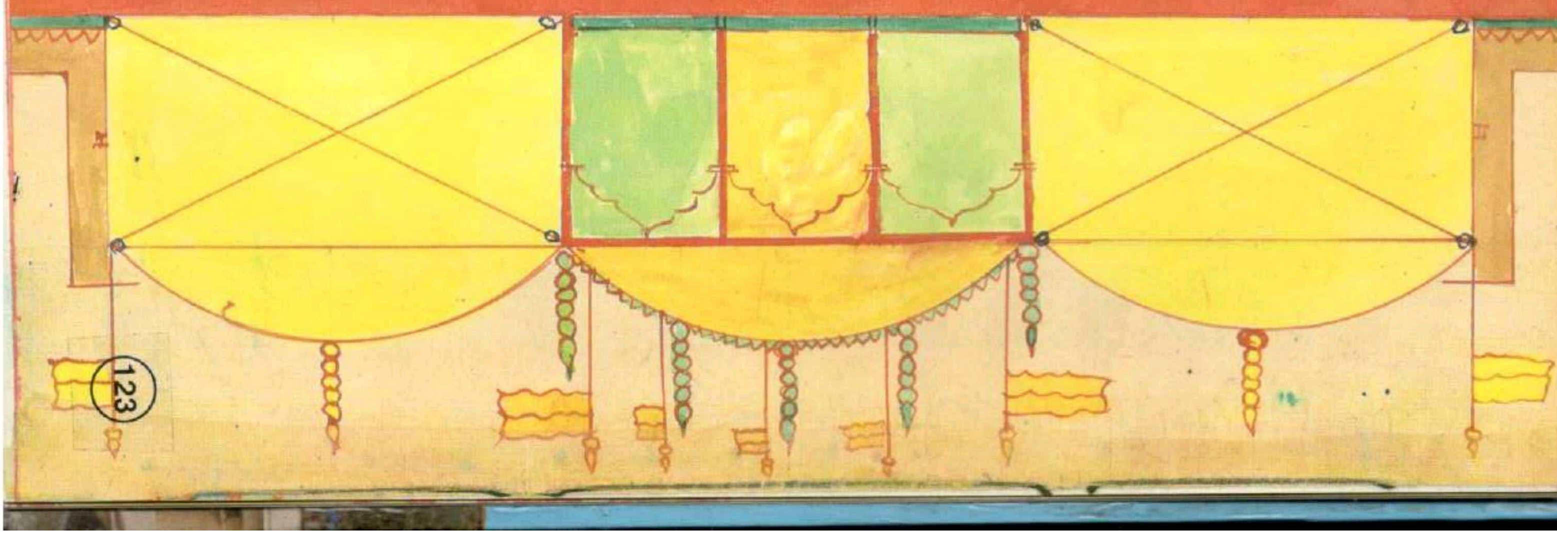

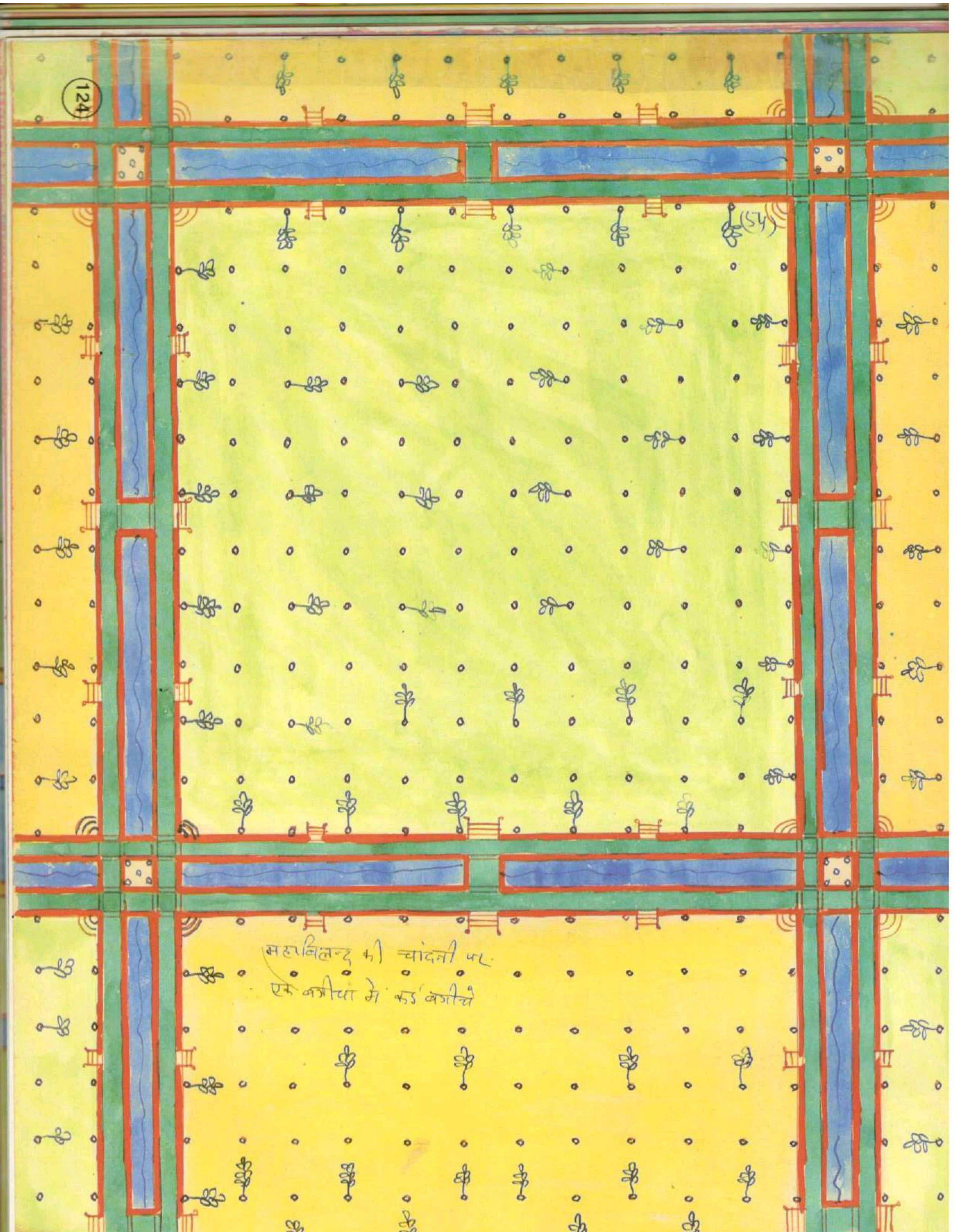
124
(54)
महाबिलन्द की चांदनी पर
एक बगीचा में कई बगीचे

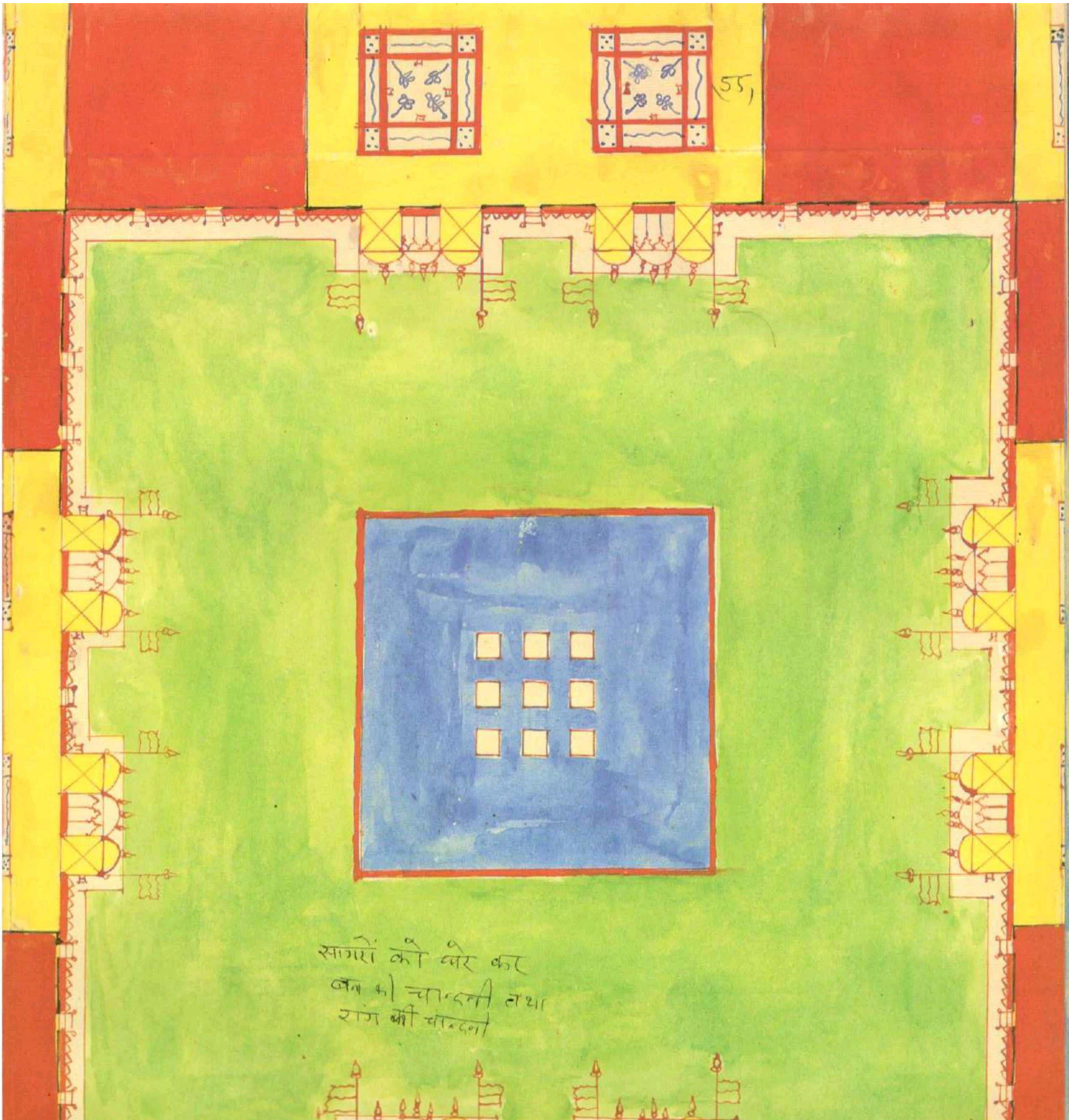
55,
सागरों को छोर कर
बन की चान्दनी तथा
राग की चांदनी

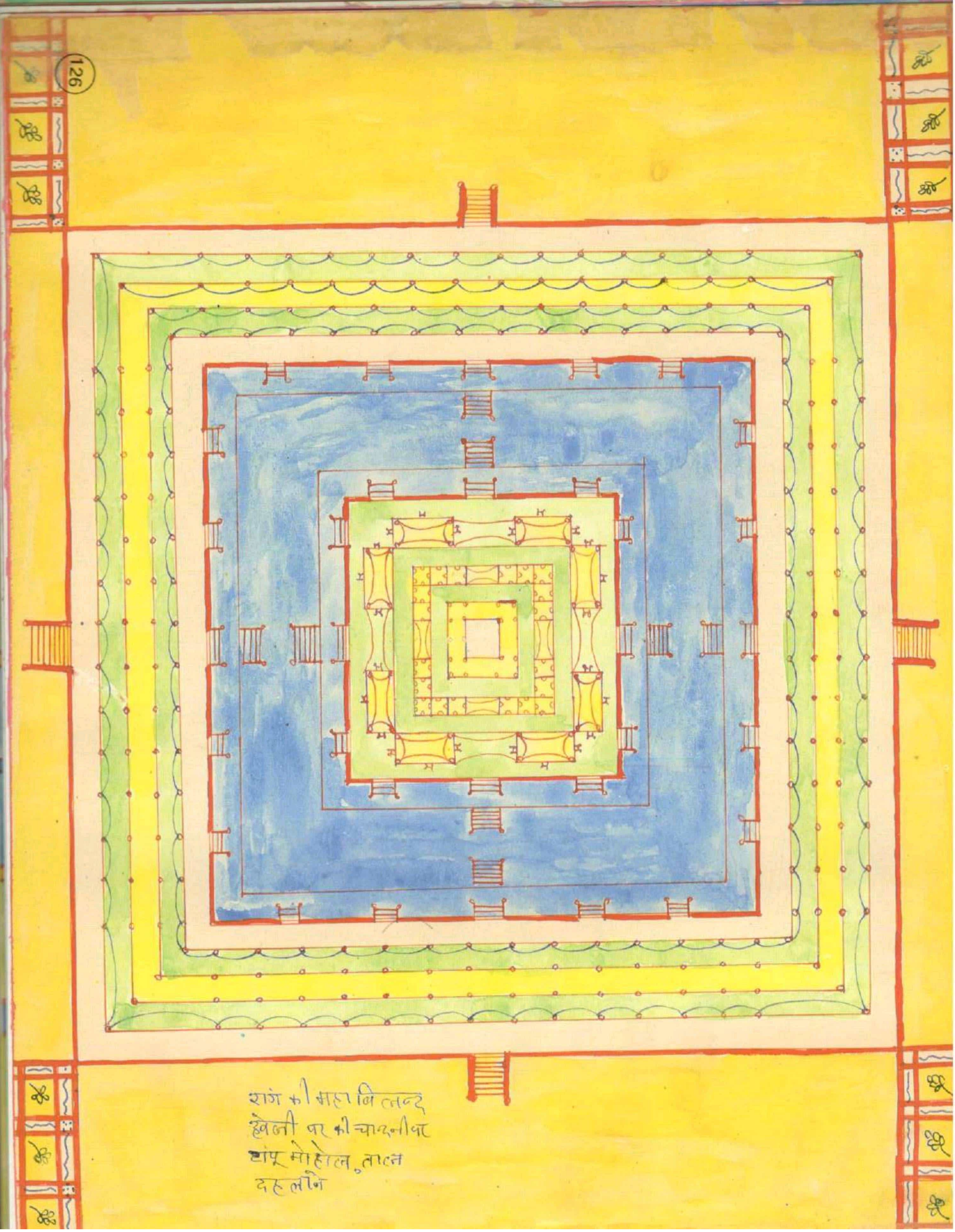
रांग की महा बिलन्द
हेवली पर की चान्दनीपर
थांपू मोहोल, तालन
दहलीने

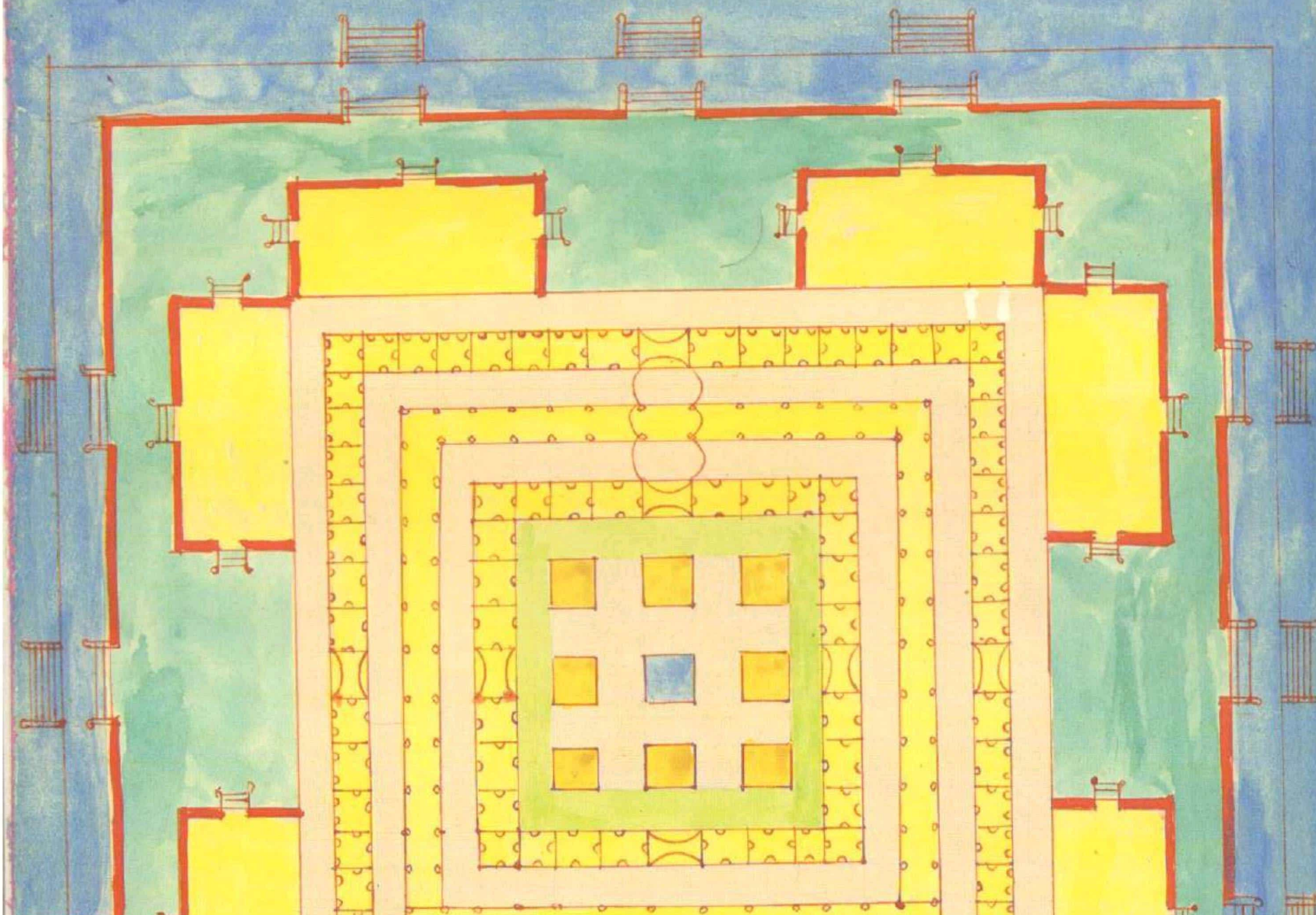
टापू में एक हवेली

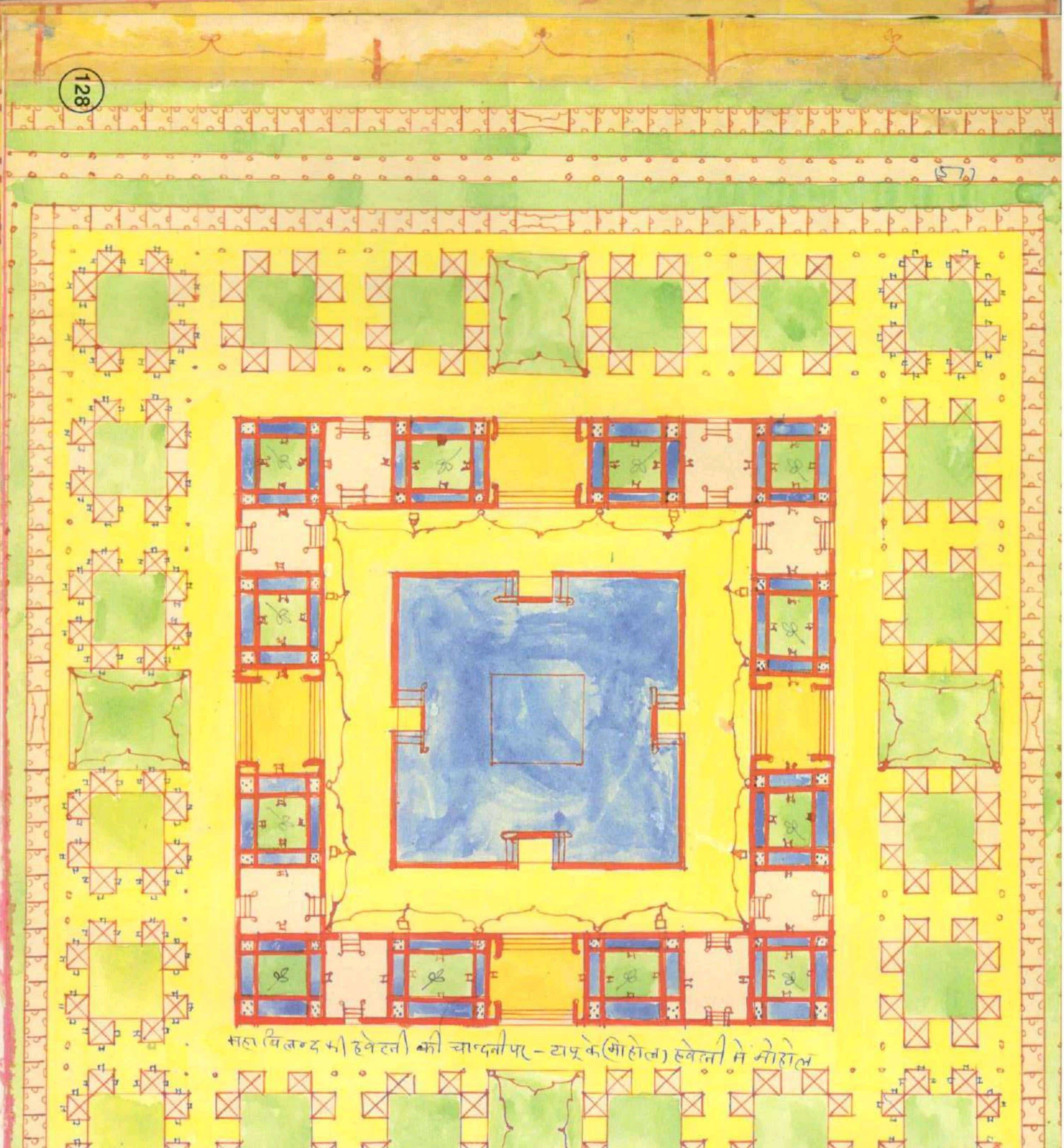
(57)
महा बिलन्द की हवेली की चान्दनी पर - टापू के (मोहोल) हवेली मे मोहोल

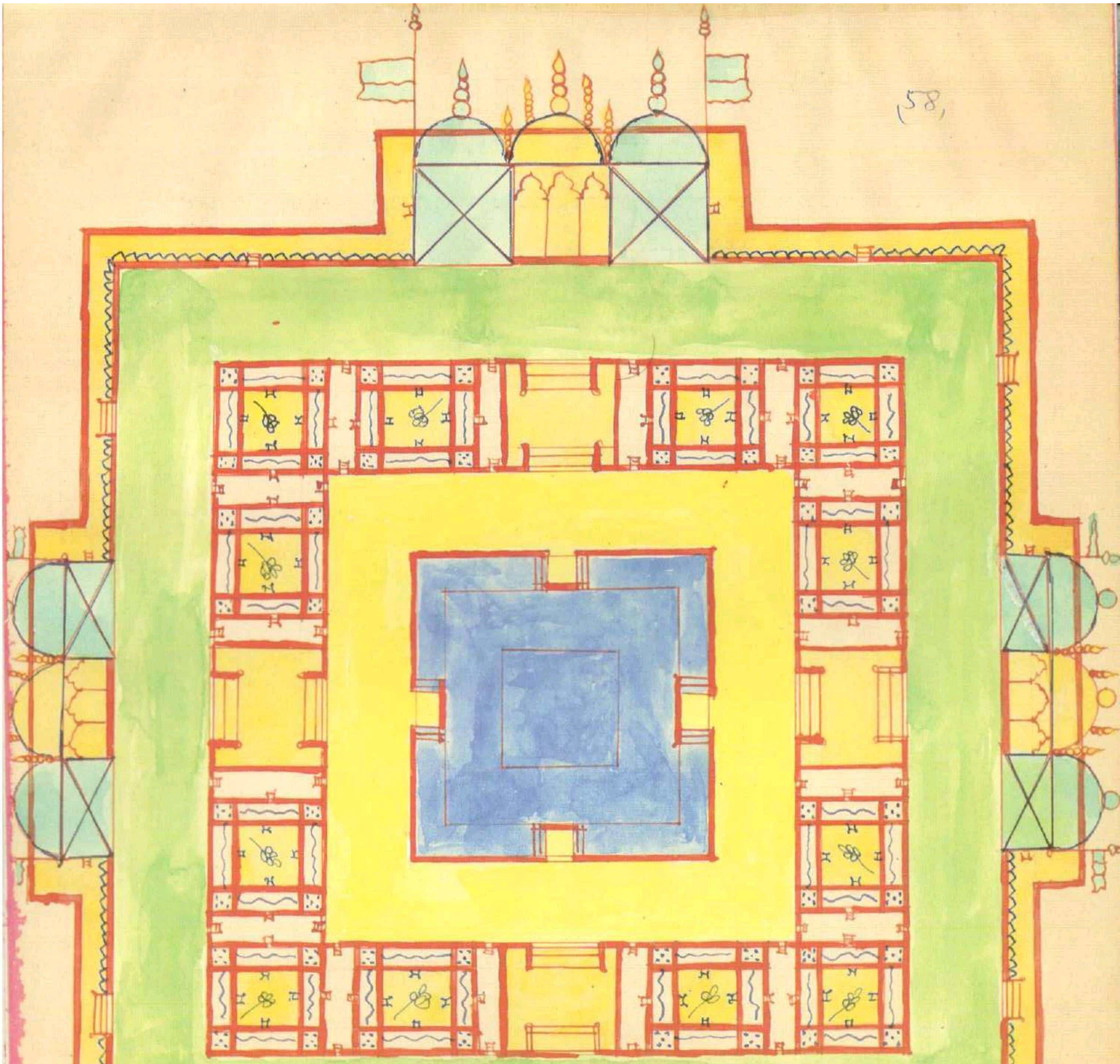
महा बिलन्द की हवेली
टापू मो होल की चान्दनी

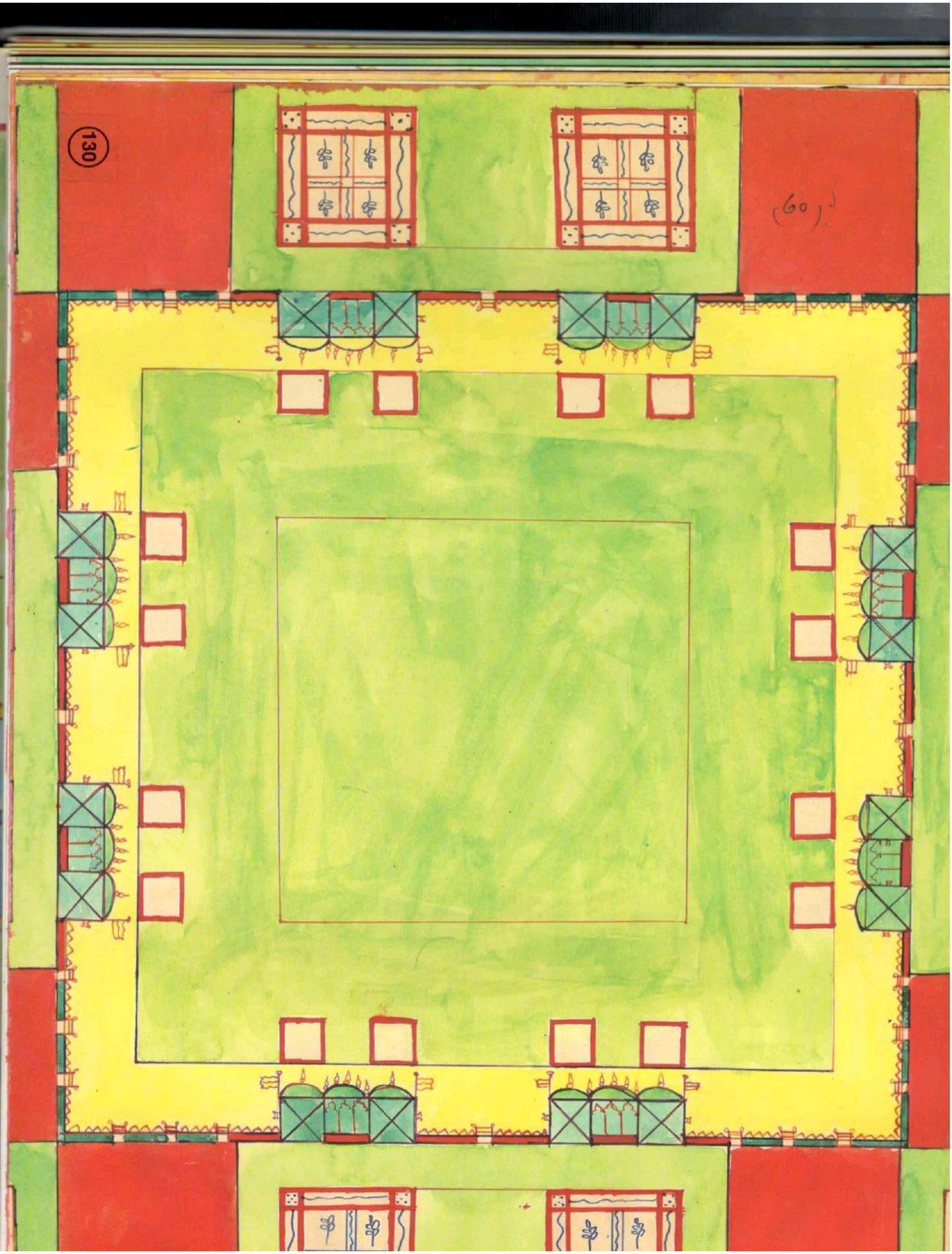
130
(60)

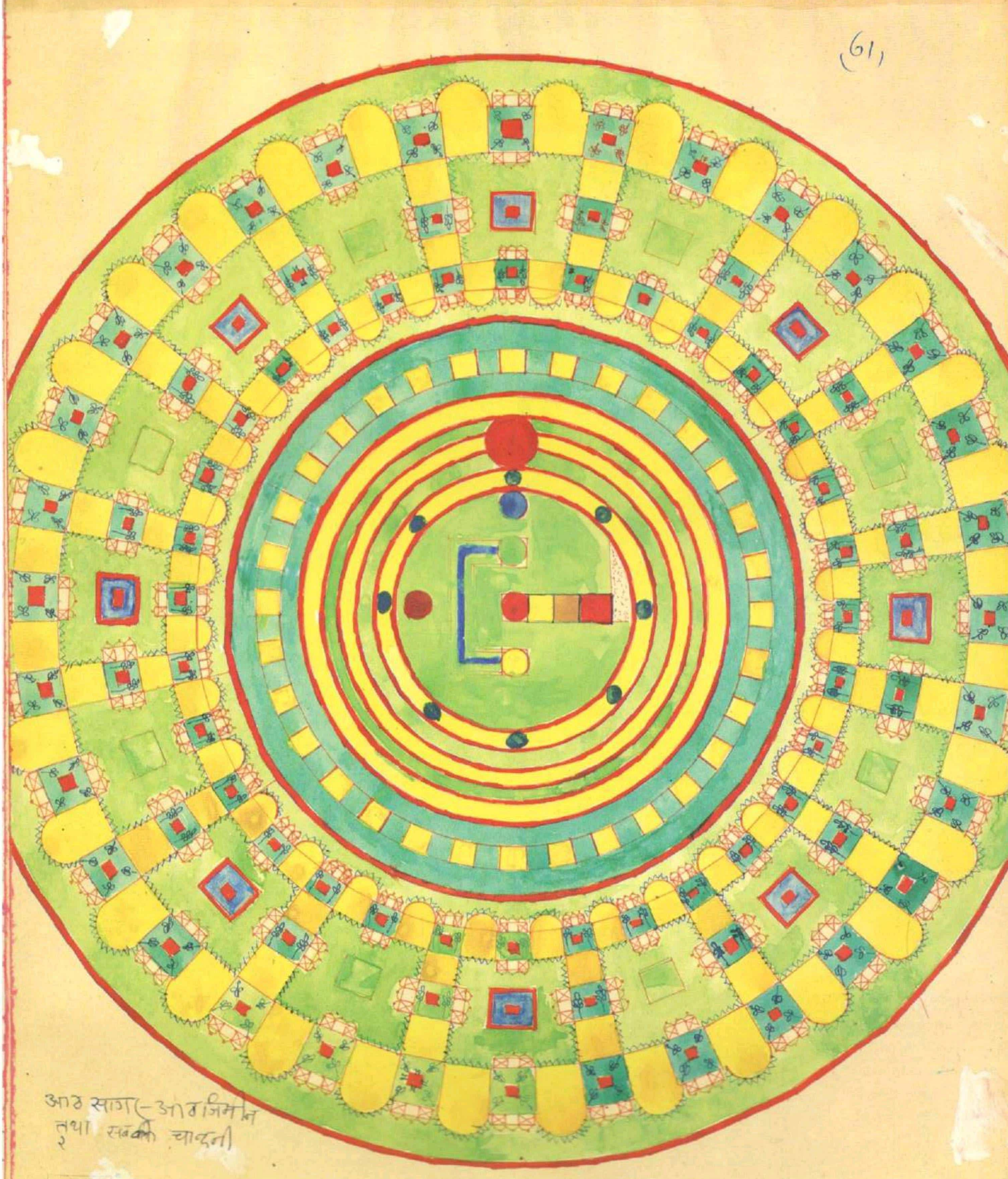

आठ सागर- आठ जमीन
तथा सबकी चादनी

132
नरंजन ७२ हजार सकतीआका
पले कर बेहद मोमका के दूसरे दरवाजे पर
पहरा देरती है। इसमें तीन सखी बडी है
अध्यातम - अधिदेव - अधिभूत
२४-२४ हजार के तीन जुथ हुए
अव्याकृत का सूक्ष्म सरूप
नरंजनसकी अरथात कालनरंजन
ज्ञानसकती गायत्री
अव्याकृति के स्थूल में तीन जने बडे हैं
१ ज्ञानसकी गायत्री
२ रोधनी सकी
३ प्रनव ब्रह्म - ((बेहद मो मकाके))
रोधनी सकती। महद ब्रह्मांड के सिर पर बेहद मेंजाने
रोधनी सकी अपार सखीयों का साथ ले कर बेहद के पहले दर्वाजा पर पहरा देरही है।
प्रनव ब्रह्म जीवों की मिस्त
प्रनव ब्रह्म के स्थूल सूक्ष्म कारन, महाकारन - निरमल चैतन। पांचों सरीर में पांच वेद हैं। और निरमल चैतन में जीवों की आतवी मिस्त है
महा माया
(महद ब्रह्मांड निराकार) (रूपी)
महांतक मिटने में महा परले कही जाती है
(कारन सकती माया)
(निराकार के चारों तरफ घेर कर के पाल)
आदिनारायन
निराकार रूपी ब्रह्मांड में अमरलोक (सतलोक) में चारद्वीप चार सुमेरु हैं। मध्य में पुस्करदीप है। महांपर आदनारायन तथा लक्ष्मीजी रहती है तथा सौ कोट सखि मंडल तीरे चारों दीप में चार अवतार रूप मौजूद
एही सबका मूल आदनारायन है
रास की लील। आदनारायन में होती रहती है। इस्थान ते कैयों का ध्यान महां पहुँचा है
ब्रजलील। आदनारायन में होती रहती है। महां पर कैयों का ध्यान पहुँचा है।
आदीनारायन की जैसी परभात सकी लीली है इसी तरह महाकारन सरीर की लील है। महाकारन शरीर का स्थान त्रकुटी है अवस्था तुरिया है। वानी परा है। देवता ब्रह्म करके है
महा सुन्य (निराकार रूपी ब्रह्मांड)
(महांतक मिटने में प्राकृति परले कही जाती है)
निराकार ब्रह्मांड का मिटजाने से महापरले कहा जाता है
इच्छासकी ब्रह्म
जोतीब्रह्म महद ब्रह्म मानसरोवर - अन्य इसके नाम हैं
इस इच्छा ब्रह्म का राज सात खरब जोजन का है। सात रंग की जमीन है। जिसमें सात स्वर निकला करते हैं
इस इच्छा सकी ब्रह्म के साथ अनेकों सकती हैं। जिसमें पांच सकती महा परबल हैं।
वास्तवी - अनरवचनी - तुरच्छा - शिवकल्यानी - उनमनी
इच्छासकी ब्रह्म आदिनारायन के कंठ स्थान में है
सरीर कारन है
अवस्था सोपुस्ति है।
देवताप्राग है
वानी पसयंती है।
महांपर नितगौलोक की लीला होती है -
ए मोहतत्व ब्रह्म का स्वरूप बडा सुंदर तेजोमई है। अवस्था किशोर है। सुमंगल सकी स्वामिनी है। इसके साथ में २४ हजार सखियां और हैं। इनके तीन सुभाव हैं। असत जड दुख। नीचे की सब उतपती इनमें हुई है। महां पर ब्रज लीला हुआ करती है।
मोहतत्व ब्रह्म
महद ब्रह्म - महा नाद ब्रह्म अच्युत पुरुष - इसके अनेकों नाम हैं
ए मोहतत्व ब्रह्म आदिनारायन के हिरदे स्थान में रहता है।
सूक्ष्म शरीर है
अवस्था सुपन है
देवता तैजस है
वानी मध्यमा है
निराकार रूपी ब्रह्मांड
निराकार रूपी ब्रह्मांड
गायत्री सकी
ए जोतीस्वरूप ब्रह्म बडा सुंदर तेजोमई है जिसके पांच मुख १० भुजा १५ नेत्र हैं। इसके साथ अपार सकती हैं। पांच सकी
जोतीस्वरूप ब्रह्म
जोतीब्रह्म - शब्द ब्रह्म रमेतीराम - ॐ अक्षर शिवलिंगाकार। इसके अनेकों नाम हैं
जोतीब्रह्म का राज एक अरब जोजन का है। राज की बनक शिवलिंगाकार की है। पांच सकती - वास्तवी - अनरवचनी - तुरच्छा। शिवकल्यानी उनमनी -
ए जोतीब्रह्म आदनारायन के नाभी में है स्थूल में
अवस्था जाग्रत।
देवता विस्नू
(49)

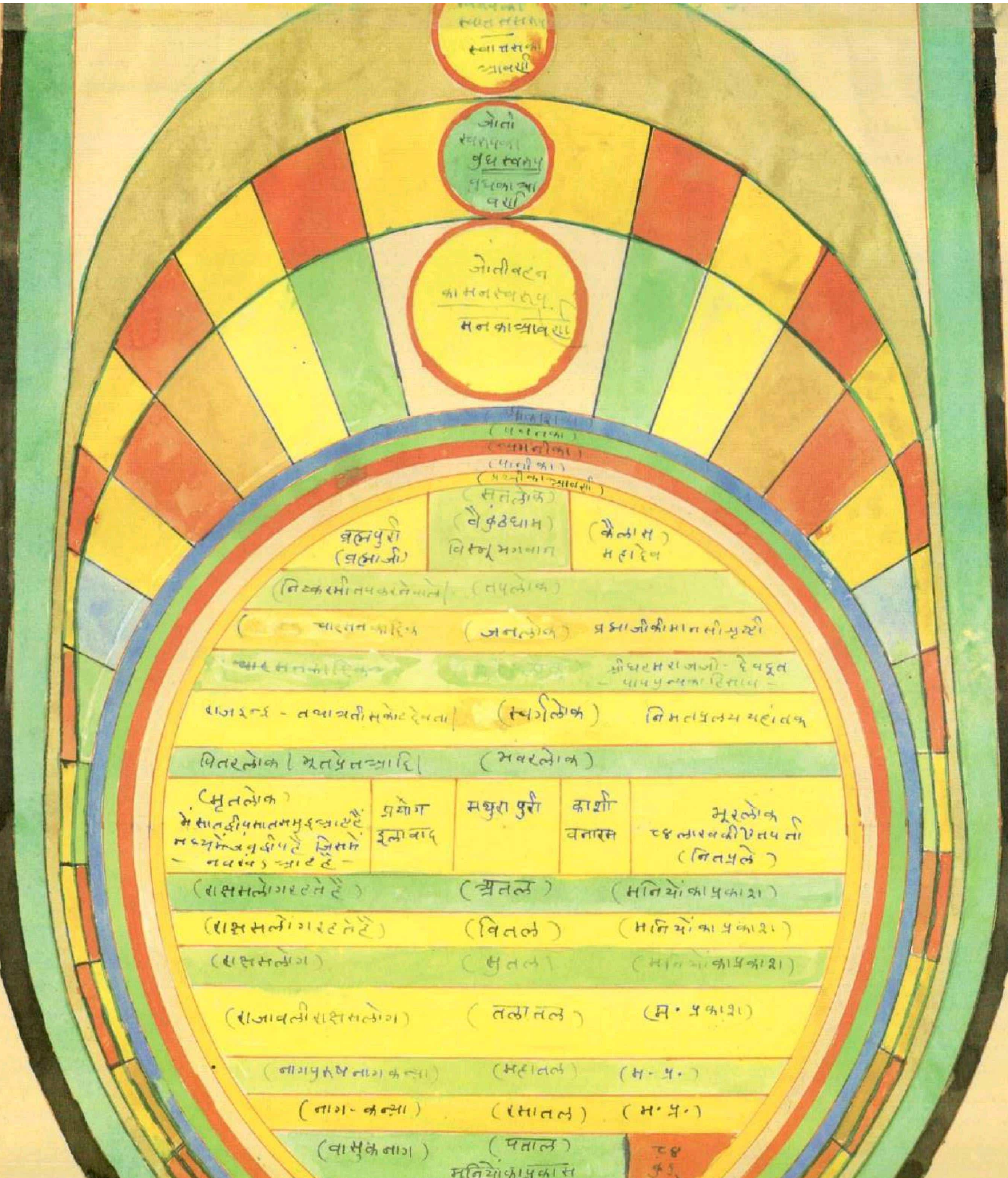
स्वासा का आवर्णी
मन का आवर्णी
(मृतलोक)
(बैकुंठधाम)
विस्नू भगवान
ब्रह्मपुरी
(ब्रह्मा जी)
(कैलास)
महादेव
(तपलोक)
(जनलोक)
ब्रह्माजी की मानसी सृष्टी
(स्वर्गलोक)
पितरलोक | भूतप्रेत आदि |
(भवरलोक)
(मृतलोक)
प्रयोग
इलाबाद
मथुरा पुरी
काशी
बनारस
भूरलोक
(अतल)
(मनियों का प्रकाश)
(राक्षस लोग रहते हैं)
(वितल)
(मनियों का प्रकाश)
(सुतल)
(राजा बली राक्षस लोग)
(तलातल)
(म॰ प्रकाश)
(नाग पुरुष नाग कन्या)
(महातल)
(म॰ प्र॰)
(नाग कन्या)
(रसातल)
(म॰ प्र॰)
(वासुकि नाग)
(पताल)
मनियों का प्रकाश
(शेश नारायन)

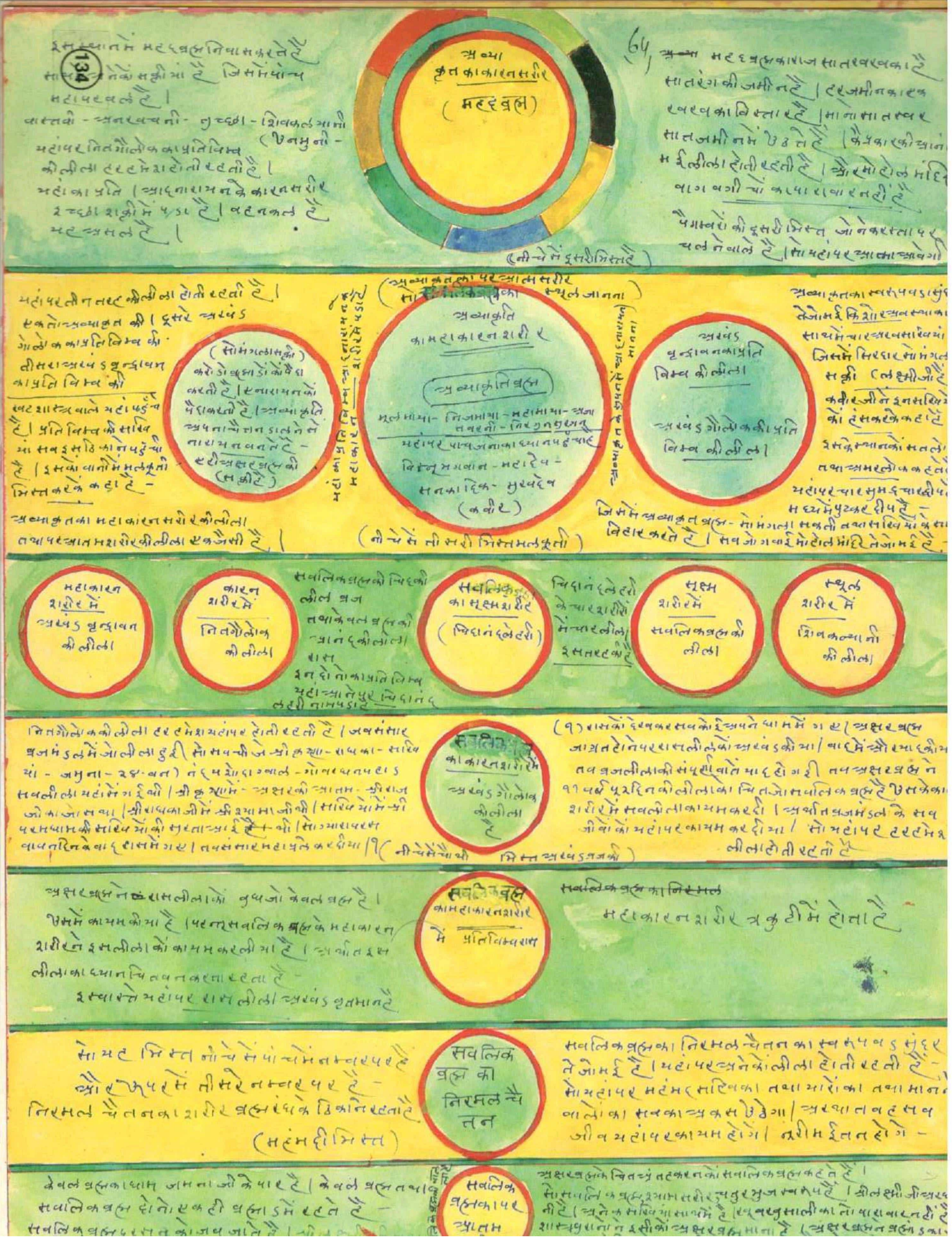
134
64
अव्या कृत का कारन सरीर
(महद्ब्रह्म)
(नीचे से दूसरी मिस्त है)
अव्याकृति का महाकारन शरीर
अव्याकृति ब्रह्म
(सोमंगलासखी)
अखंड वृन्दावन का प्रति बिम्ब की लीला
अखंड गौलोक की प्रति बिम्ब की लीला
(नीचे से तीसरी मिस्त मलकूती)
महाकारन शरीर में अखंड वृन्दावन की लीला
कारन शरीर में नितगौलोक की लीला
सबलिक ब्रह्म का सूक्ष्म शरीर (चिदानंद लहरी)
सूक्ष्म शरीर में सबलिक ब्रह्म की लीला
स्थूल शरीर में शिवकन्या नी की लीला
अखंड गौलोक की लीला है
सबलिक ब्रह्म का महाकारन शरीर में प्रतिबिम्ब रास
महाकारन शरीर त्रकुटी में होता है
सो यह मिस्त नीचे से पांचमें नम्बर पर है
और ऊपर से तीसरे नम्बर पर है -
निरमल चैतन का शरीर ब्रह्मांड के ठिकाने रहता है
(महंमदी मिस्त)
सबलिक ब्रह्म की निरमल चैतन
सबलिक ब्रह्म का पर आतम

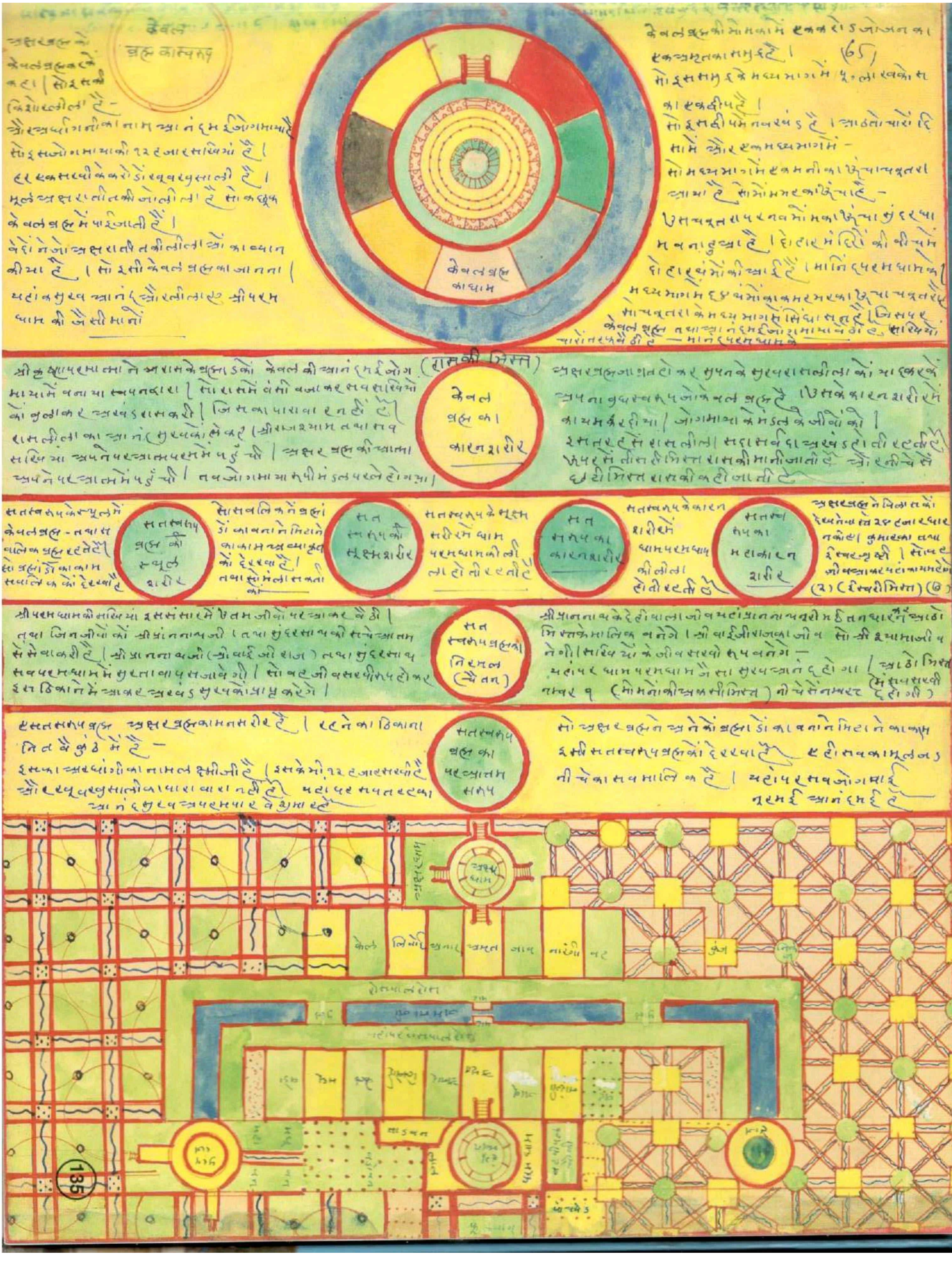
केवल ब्रह्म का स्वरूप
केवल ब्रह्म का धाम
(रास की मिस्त)
केवल ब्रह्म का कारन शरीर

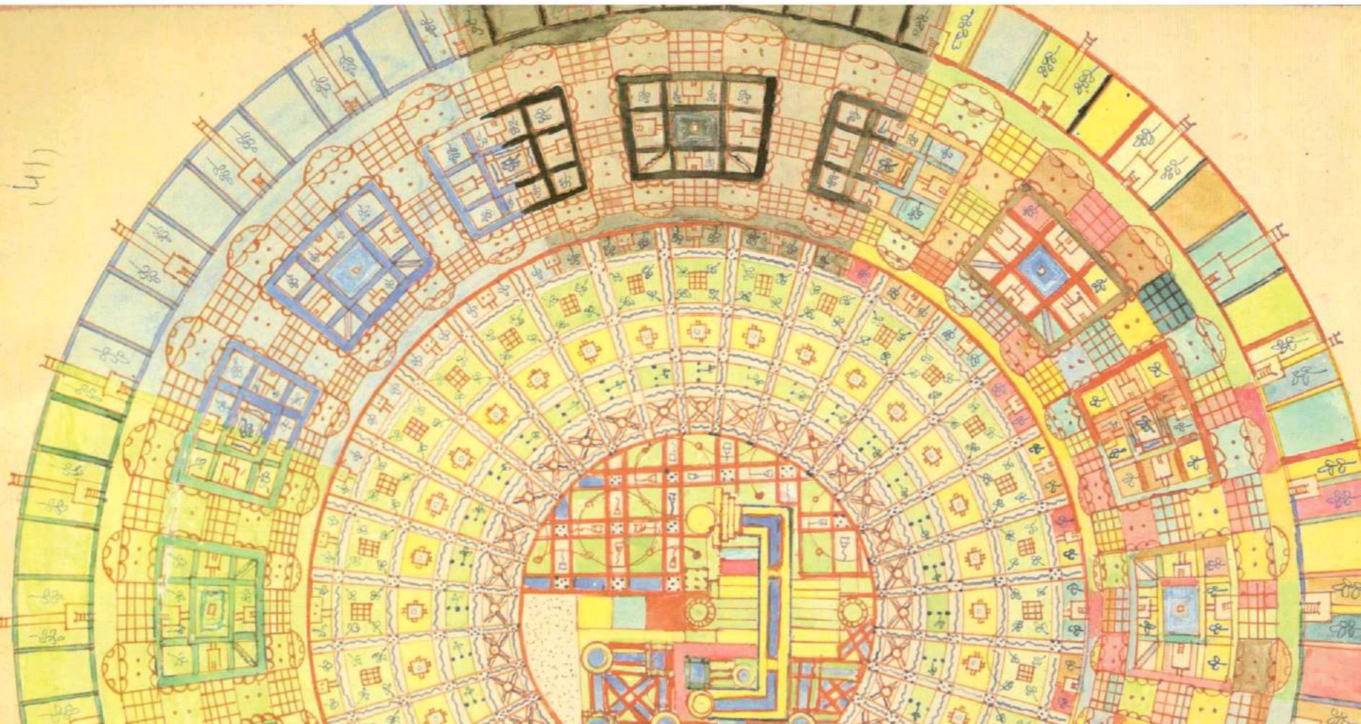

तृतीय ब्रह्मांड जागनी रास का मूल मिलावा श्री गुम्मट साहेब